वार्षिक रिपोर्ट
Annual Report
2016-2017

केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय
Central University of Tibetan Studies

(Deemed University)

Sarnath, Varanasi - 221007

www.cuts.ac.in

Conference on Buddhist Pramana

A Glance of Cultural Programme

विषय-सूची

परिच्छेद	पृष्ठ संख्या
1. विश्वविद्यालय का संक्षिप्त परिचय	3
2. संकाय	10
3. शोध विभाग	44
4. शान्तरक्षित ग्रन्थालय	64
5. प्रशासन	79
6. गतिविधियाँ	88

परिशिष्ट

1. विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित दीक्षान्त समारोह और उनमें उपाधि से सम्मानित विशिष्ट विद्वानों की सूची	102
2. सोसायटी के सदस्यों की सूची	104
3. अधिशासी बोर्ड के सदस्यों की सूची	106
4. विद्वत् परिषद् के सदस्यों की सूची	108
5. वित्त समिति के सदस्यों की सूची	112
6. योजना एवं प्रबोधक परिषद के सदस्यों की सूची	113
7. प्रकाशन समिति के सदस्यों की सूची	114

सम्पादन समिति

अध्यक्ष :

डॉ. धर्मदत्त चतुर्वेदी
एसोशिएट प्रोफेसर,
अध्यक्ष, शब्दविद्या सङ्काय,
संस्कृत विभाग,
प्राच्य एवं आधुनिक भाषा विभाग

सदस्य :

श्री आर. के. मिश्रा
प्रलेखन अधिकारी
शान्तरक्षित ग्रन्थालय

तेनजिन कुनसेल
पी. आर. ओ.
कुलपति कार्यालय

सदस्य सचिव :

श्री एम.एल. सिंह
वरिष्ठ लिपिक (प्रशासन अनुभाग प्रथम)

1. विश्वविद्यालय का संक्षिप्त

तिब्बती तथा सीमान्त हिमालय क्षेत्र के विद्यार्थियों की शिक्षा एवं प्रशिक्षण के उद्देश्य से, भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू तथा परम पावन 14वें दलाई लामा के पवित्र प्रयासों से सन् 1967 में स्थापित केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान एक अद्वितीय सुप्रतिष्ठित विश्वविद्यालय है।

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी के संघटक विभाग के रूप में शुभारम्भ करके सन् 1977 में केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान नाम के साथ, विश्वविद्यालय ने भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के अधीन स्वायत्त संस्थान का दर्जा प्राप्त किया।

दिनांक 5 अप्रैल, 1988 को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा धारा 3 के अन्तर्गत की गई अनुशंसा के आधार पर भारत सरकार ने केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान की अद्वितीय कार्यपद्धति तथा उपलब्धियों के आधार पर संस्थान को मान्य विश्वविद्यालय का दर्जा प्रदान किया।

दिनांक 30 सितम्बर, 2008 को केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान की सोसायटी के अनुमोदन के आधार पर संस्थान का परिवर्तित नाम केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय हुआ। विश्वविद्यालय के इस नये नाम का लोकार्पण परम पावन दलाई लामा जी ने दिनांक 15 जनवरी, 2009 को अपने कर-कमलों से किया।

प्रो. समदोंग रिनपोछे, पूर्व निदेशक एवं भूतपूर्व कालोन ठ्रिपा, केन्द्रीय तिब्बती प्रशासन के कुशल नेतृत्व में सन् 2000 तक विश्वविद्यालय प्रगति पथ पर अग्रसर रहा।

इस समय यह विश्वविद्यालय, प्रो. गेशे ङवङ सम्तेन, कुलपति के कुशल नेतृत्व तथा संकायों के विद्वान् सदस्यों के समर्पित सहयोग से, पूर्ण कुशलता के साथ, भोट अध्ययन, बौद्ध अध्ययन तथा हिमालयी अध्ययन के क्षेत्र में अपने उद्देश्यों की पूर्ति हेतु सतत अग्रसर है।

निर्धारित विषयों के अध्ययन-अध्यापन के साथ यह विश्वविद्यालय अपने शोध विद्यार्थियों एवं देश-विदेश से आने वाले शोध विद्यार्थियों का मार्गदर्शन कर रहा है। इस सन्दर्भ में यह विश्वविद्यालय बौद्ध एवं बौद्धेतर भारतीय दार्शनिक विचारधाराओं, बौद्ध एवं पाश्चात्य दार्शनिक विचारधाराओं तथा बौद्ध दार्शनिकों एवं वैज्ञानिकों के मध्य विचार विनिमय एवं संवाद के लिए एक सशक्त मंच प्रदान कर रहा है।

विश्वविद्यालय की उच्च शैक्षणिक गुणवत्ता तथा शिक्षण-प्रशिक्षण प्रणाली को मान्यता प्रदान करते हुए, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा स्थापित स्वायत्त संस्था, राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् (NAAC) ने, इस विश्वविद्यालय को सर्वोच्च पाँच सितारा संस्थान का प्रमाण-पत्र प्रदान किया है।

केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, नैक द्वारा सर्वोच्च श्रेणी प्राप्त करने वाला अपनी तरह का अकेला विश्वविद्यालय है।

उद्देश्य एवं योजनाएँ

भारत सरकार तथा परम पावन दलाई लामा जी द्वारा स्थापित संस्थान की परिकल्पना एवं लक्ष्य को विश्वविद्यालय के निम्नलिखित उद्देश्यों में समाहित किया गया है, जिनकी सतत पूर्ति हेतु विश्वविद्यालय पिछले चार दशकों से प्रयासरत है।

- तिब्बती संस्कृति एवं परम्पराओं का संरक्षण।
- ऐसे भारतीय ज्ञान-विज्ञान एवं साहित्य का पुनरुद्धार, जो मूल भाषा में समाप्त हो चुके हैं, परन्तु तिब्बती भाषा में उपलब्ध हैं।
- ऐसे सीमान्त भारतीय क्षेत्रों के विद्यार्थियों को वैकल्पिक शिक्षा की सुविधा प्रदान करना, जो पूर्व में इस तरह की उच्च शिक्षा तिब्बत जाकर प्राप्त करते थे।
- आधुनिक विश्वविद्यालय शिक्षा-प्रणाली के अन्तर्गत पारम्परिक विषयों की शिक्षा एवं प्रशिक्षण की व्यवस्था प्रदान करना तथा तिब्बती अध्ययन के क्षेत्र में उपाधियाँ प्रदान करना है।
- बौद्ध दर्शन और तिब्बती अध्ययन की शिक्षा प्रदान करना एवं इसके माध्यम से व्यक्तित्व में नैतिक मूल्यों का विकास करना।

विश्वविद्यालय के उपर्युक्त उद्देश्यों के आधार पर विश्वविद्यालय की शैक्षणिक व्यवस्था को निम्नानुसार संगठित किया गया है।

(1) शैक्षणिक

(क) हेतु एवं अध्यात्म विद्या संकाय

(i) मूलशास्त्र विभाग

(ii) सम्प्रदायशास्त्र विभाग

(iii) बोन सम्प्रदायशास्त्र विभाग

(ख) शब्द विद्या संकाय

(i) संस्कृत विभाग

(ii) तिब्बती भाषा एवं साहित्य विभाग

(iii) प्राचीन एवं आधुनिक भाषा विभाग

(ग) आधुनिक विद्या संकाय

(i) समाजशास्त्र विभाग

(घ) शिल्प विद्या संकाय

(i) तिब्बती काष्ठकला विभाग

(ii) तिब्बती चित्रकला विभाग

(ङ) सोवा रिग्-पा एवं भोट ज्योतिष संकाय

(i) सोवा रिग्-पा विभाग

(ii) भोट ज्योतिष विभाग

(2) शोध विभाग

(क) पुनरुद्धार विभाग

(ख) अनुवाद विभाग

(ग) दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध विभाग

(घ) कोश विभाग

(3) शान्तरक्षित ग्रन्थालय

(क) अवाप्ति एवं तकनीकी अनुभाग

(ख) सामयिकी, पत्र-पत्रिका, इनफ्लिबनेट एवं सन्दर्भ अनुभाग

(ग) तिब्बती अनुभाग

(घ) आदान-प्रदान अनुभाग

(ङ) संचयागार अनुभाग

(च) मल्टीमीडिया अनुभाग

(छ) कम्प्यूटर अनुभाग

(ज) भण्डार एवं अनुरक्षण अनुभाग

(4) प्रशासन

(क) प्रशासन अनुभाग-1

(ख) प्रशासन अनुभाग-2

(ग) परीक्षा अनुभाग

(घ) सम्पत्ति अनुभाग

(ङ) वित्त अनुभाग

(च) प्रकाशन अनुभाग

उपर्युक्त शैक्षणिक एवं शोध गतिविधियों की संगठनात्मक रूपरेखा निम्नलिखित प्रकार से की गयी है—

विश्वविद्यालय की संगठनात्मक रूपरेखा

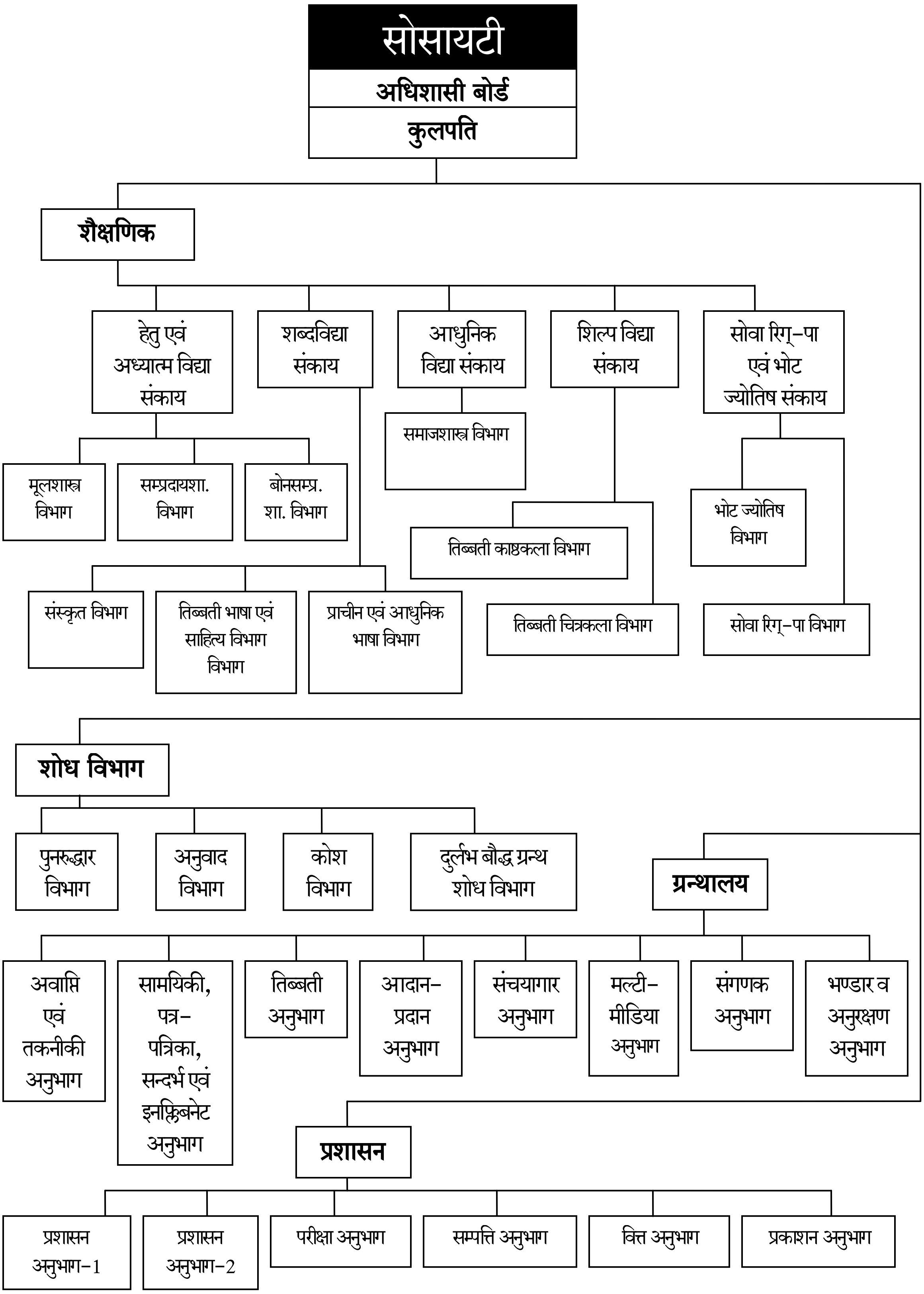

शैक्षणिक : पंजीकरण/ नामांकन एवं परीक्षा 2016-17

विश्वविद्यालय में विभिन्न पाठ्यक्रमों में छात्र नामाङ्कित किए जाते हैं। वर्ष 2016-17 का परीक्षा फल निम्नाङ्कित तालिका में प्रस्तुत किया जा रहा है।

प्रथम अधिसत्र (जुलाई 2016 से दिसम्बर 2016)

परीक्षा का नाम	कुल नामांकित छात्र	अनुपस्थित छात्रों की संख्या	उपस्थित छात्रों की संख्या	अनुत्तीर्ण छात्रों की संख्या	उत्तीर्ण छात्रों की संख्या	टिप्पणी
पूर्वमध्यमा, प्रथम वर्ष	40	02	38	--	38	
पूर्वमध्यमा, द्वितीय वर्ष	44	--	44	05	39	
उत्तरमध्यमा, प्रथम वर्ष	38	01	37	04	33	
उत्तरमध्यमा, द्वितीय वर्ष	33	--	33	01	32	
शास्त्री, प्रथम वर्ष	44	--	44	04	40	
शास्त्री, द्वितीय वर्ष	39	02	37	01	36	
शास्त्री, तृतीय वर्ष	27	01	26	--	26	
आचार्य, प्रथम वर्ष	28	01	27	--	27	
आचार्य, द्वितीय वर्ष	26	01	25	--	25	
उ.म. (आयु.), प्रथम वर्ष	17	--	17	04	13	
उ.म. (आयु.), द्वितीय वर्ष	15	--	15	--	15	
ज्योतिष शास्त्री, प्रथम वर्ष	01	--	01	--	01	
फाइन आर्ट्स, प्रथम	03	--	03	--	03	
फाइन आर्ट्स, द्वितीय	06	--	06	--	06	
बी. फाइन आर्ट्स, तृतीय	01	--	01	--	01	
एम.एफ.ए., प्रथम	02	--	02	--	02	
एम.एफ.ए., द्वितीय	01	--	01	--	01	

बी.एस.एम.एस., प्रथम वर्ष	10	--	10	03	07	
बी.एस.एम.एस., द्वितीय वर्ष	09	--	09	04	05	
बी.एस.एम.एस., तृतीय	04	--	04	01	03	
बी.एस.एम.एस., पंचम वर्ष	04	--	04	02	02	
बी.ए. बी.एड., द्वितीय	16	--	16	--	16	
बी.ए. बी.एड., तृतीय	23	--	23	03	20	
बी.एस.सी. बी.एड., चतुर्थ	19	01	18	--	18	
कुल योग	**450**	**09**	**441**	**32**	**409**	

द्वितीय अधिसत्र (दिसम्बर 2016 से मई 2017)

परीक्षा का नाम	कुल नामांकित छात्र	अनुपस्थित छात्रों की संख्या	उपस्थित छात्रों की संख्या	अनुत्तीर्ण छात्रों की संख्या	उत्तीर्ण छात्रों की संख्या	टिप्पणी
पूर्वमध्यमा, प्रथम वर्ष	38	---	38	02	36	
पूर्वमध्यमा, द्वितीय वर्ष	43	01	42	05	37	
उत्तरमध्यमा, प्रथम वर्ष	38	---	38	02	36	
उत्तरमध्यमा, द्वितीय वर्ष	33	---	33	02	31	
शास्त्री, प्रथम वर्ष	43	---	43	03	40	
शास्त्री, द्वितीय वर्ष	38	---	38	03	35	
शास्त्री, तृतीय वर्ष	28	---	28	11	17	
आचार्य, प्रथम वर्ष	27	---	27	13	14	
आचार्य, द्वितीय वर्ष	27	02	25	03	22	
उ.म. (आयु.), प्रथम वर्ष	16	---	16	---	16	
उ.म. (आयु.), द्वितीय वर्ष	15	01	14	02	12	
ज्योतिष शास्त्री, प्रथम वर्ष	01	---	01	---	01	

फाइन आर्ट्स, प्रथम	03	---	03	01	02	
फाइन आर्ट्स, द्वितीय	06	01	05	---	05	
बी. फाइन आर्ट्स, तृतीय	01	---	01	---	01	
एम.एफ.ए., प्रथम	02	---	02	01	01	
एम.एफ.ए., द्वितीय	01	---	01	---	01	
बी.एस.एम.एस., प्रथम वर्ष	09	---	09	---	09	
बी.एस.एम.एस., द्वितीय वर्ष	10	---	10	08	02	
बी.एस.एम.एस., तृतीय वर्ष	04	---	04	02	02	
बी.एस.एम.एस., पंचम वर्ष	03	---	03	01	02	
बी.ए. बी.एड., द्वितीय	16	---	16	01	15	
बी.ए. बी.एड., तृतीय	23	---	23	---	23	
बी.एस.सी. बी.एड., चतुर्थ	18	---	18	---	18	
कुल योग	**443**	**05**	**438**	**60**	**378**	

2. संकाय

विश्वविद्यालय की शैक्षणिक गतिविधियाँ मुख्यतः अध्ययन-अध्यापन एवं शोध-कार्य है । परीक्षाओं के प्रमाण-पत्र विश्वविद्यालय स्वयं जारी करता है ।

विश्वविद्यालय बौद्ध अध्ययन, तिब्बती आयुर्विज्ञान (सोवा रिग्-पा) एवं ज्योतिष में शास्त्री, आचार्य, एम. फिल., पी-एच्. डी. एवं एम.डी./एम.एस. पाठ्यक्रमों का संचालन करता है । इसमें विद्यार्थियों को पूर्वमध्यमा प्रथम वर्ष (नौवीं कक्षा) से ही प्रवेश दिया जाता है और उन्हें पूर्व स्नातक तक के चार वर्षीय पाठ्यक्रम को पूरा करना होता है, जो उन्हें आधुनिक विश्वविद्यालय शिक्षा-प्रणाली में दी जा रही परम्परागत शिक्षा के निमित्त तैयार करता है । पूर्वमध्यमा से लेकर आचार्य तक, नौ वर्षीय बौद्ध अध्ययन के पाठ्यक्रम में विद्यार्थियों को तिब्बती, संस्कृत, हिन्दी अथवा अंग्रेजी भाषाओं का तथा भारतीय बौद्ध शास्त्रों एवं उनकी तिब्बती टीकाओं का अध्ययन कराया जाता है । इसके साथ-साथ सम्प्रदाय शास्त्र, बोन परम्परा, इतिहास, अर्थशास्त्र एवं राजनीतिशास्त्र का भी अध्ययन कराया जाता है ।

सोवा रिग्-पा संकाय में परम्परागत तिब्बती चिकित्सा शिक्षा पद्धति के सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक अध्ययन के साथ आधुनिक चिकित्सा-विज्ञान के विकृति-विज्ञान, शरीर-रचना-विज्ञान एवं शरीर-क्रिया-विज्ञान का अध्ययन कराया जाता है । विद्यार्थियों को तिब्बती चिकित्सा पद्धति में निपुण बनाने हेतु उन्हें नैदानिक प्रशिक्षण भी दिया जाता है ।

तिब्बती ललित कला के विद्यार्थियों को थंका चित्रपट के निर्माण की विधि तथा तिब्बती काष्ठकला के विद्यार्थियों को काष्ठ-तक्षण-कला सिखाई जाती है । इसके साथ ही बौद्ध दर्शन, तिब्बती भाषा एवं साहित्य, अंग्रेजी या हिन्दी एवं कला का इतिहास का भी ज्ञान कराया जाता है ।

शिक्षण प्रविधि एवं अधिगम

विश्वविद्यालय के उद्देश्यों के अनुरूप विभिन्न पाठ्यक्रमों की संरचना की गयी है । अध्यापकों के सुझावों तथा उन पर अध्ययन परिषद् के विषय-विशेषज्ञों की सहमति के आधार पर पाठ्यक्रमों की संरचना एवं उनमें परिवर्तन-परिवर्द्धन किया जाता है तथा इन्हें अन्तिम रूप में विद्वत् परिषद एवं अधिशासी बोर्ड द्वारा पारित किया जाता है ।

इनके अतिरिक्त विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के विकास के लिए विश्वविद्यालय परिसर में सामूहिक एवं वैयक्तिक स्तर पर और भी अनेक गतिविधियाँ होती रहती हैं, जिनमें सामूहिक परिचर्चा, व्याख्यान, खेल-कूद, शैक्षणिक विनिमय कार्यक्रम एवं समाज सेवा सम्मिलित हैं । यह विश्वविद्यालय पूर्णरूप से आवासीय है । सभी पाठ्यक्रम परिसर में ही चलाये जाते हैं ।

परीक्षा एवं मूल्यांकन

पंजीकृत विद्यार्थियों को परीक्षा में सम्मिलित होने के लिए कम से कम 85% उपस्थिति अनिवार्य है । परीक्षा अधिसत्रों में संचालित होती हैं ।

आलोच्य वर्ष में आयोजित विभिन्न पाठ्यक्रमों की परीक्षाओं के परिणाम निम्नलिखित तालिका में प्रदर्शित किए गए हैं-

शैक्षणिक विभागों का परिचय

(क) हेतु एवं अध्यात्म विद्या संकाय

डॉ. टशी छेरिंग (एस) - संकायाध्यक्ष

(I) मूलशास्त्र विभाग

मानव-जीवन की वास्तविकता एवं उसके उद्देश्य को समझने तथा सक्षम बनाने के निमित्त बौद्ध दर्शन एवं संस्कृति का संरक्षण एवं विकास करना, इस विभाग का उद्देश्य है । इस विभाग में बौद्ध-दर्शन, न्याय, मनोविज्ञान आदि विषय, बुद्धवचन तथा भारतीय आचार्यों द्वारा रचित शास्त्रों का अध्यापन होता है । मानव एवं अन्य प्राणियों के लिये इस जगत् को बेहतर बनाने में सहायता करना भी इस विभाग का उद्देश्य है । मात्र अपने कल्याण की बात न सोचकर करुणा एवं शान्ति का आश्रय लेकर वर्तमान जगत् की आवश्यकतानुसार इन गुणों का प्रसार करना भी इसके उद्देश्यों में शामिल है। यह विभाग बौद्ध दर्शन के अध्यापन के साथ-साथ शोध-कार्य भी कर रहा है । वैश्वीकरण के इस युग में नागार्जुन के शिष्यों एवं महासिद्धों के विचारों के पुनरुद्धार एवं उनके युगानुकूल समायोजन पर उपर्युक्त विभाग शोधरत है ।

(1) भिक्षु लोब्संग यारफेल - एसोशिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
(2) प्रो. गेशे येशे थबख्ये - प्रोफेसर (पुनर्नियोजित)
(3) प्रो. गेशे एन. समतेन - प्रोफेसर (कुलपति)
(4) डॉ. वङ्छुक दोर्जे नेगी - प्रोफेसर
(5) गेशे लोसंग वांगड्रग - एसिस्टेंट प्रोफेसर
(6) गेशे तेनज़िन नोरबू - एसिस्टेंट प्रोफेसर
(7) गेशे लोब्संग थरख्ये - अतिथि प्राध्यापक
(8) भिक्षु छुलठिम ग्युरमेद - अतिथि प्राध्यापक

शैक्षणिक गतिविधियाँ-

गेशे लोब्संग यारफेल

अन्य शैक्षणिक गतिविधियाँ-

1. आचार्य हरिभद्र प्रणीत अभिसमयालंकारवृत्ति पर व्याख्या लेखन
2. आचार्य शान्तिदेव रचित बोधिचर्यावतार का समीक्षात्मक सम्पादन एवं व्याख्या कार्य
3. आचार्य वसुबन्धु रचित त्रिंशिका कारिका का समीक्षात्मक सम्पादन एवं टीका-टिप्पणी लेखन

क. प्रदत्त व्याख्यान -

1. 30 अक्टूबर 2016, बी. एड., सी.टी.ई. छात्रों के लिए बौद्ध अवधारणा के अनुसार स्मृति-उपस्थान की परिभाषा एवं लाभ पर व्याख्यान ।
2. 16 जनवरी 2017, शैक्षणिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के अन्तर्गत मेसाचुसस के पाँच कॉलेज, अमेरिका एवं आस्ट्रेलिया के छात्रों के लिए कर्म सिद्धान्त विषयक बौद्ध अवधारणा पर व्याख्यान ।

3. 18 जनवरी 2017 से एक मास पर्यन्त सी.यू.टी.एस और सी.आई.बी.एस के शैक्षणिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के तहत सी.आई.बी.एस, लेह लद्दाख के छात्रों को प्रशिक्षण।
4. 16 मार्च 2017, वरिष्ठ छात्रों के शीतकालीन शिविर में आचार्य चोङ्खापा द्वारा विरचित प्रतीत्यसमुत्पाद स्तुति पर व्याख्यान।
5. 25-27 मार्च 2017, सम्प्रदाय शास्त्र विभाग द्वारा आयोजित शील, समाधि और प्रज्ञा विषयक त्रिदिवसीय राष्ट्रिय संगोष्ठी के एक सत्र में अध्यक्षीय वक्तव्य।

संगोष्ठियो में सहभागिता

1. केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, चोगलमसर लेह, लद्दाख में विश्वविद्यालय पद्धति के आधार पर छह मासिक अधिसत्र पर वाषिक परीक्षा प्रणाली में भाग लिया।
2. 23-26 अगस्त 2016 - चार आर्य सत्य विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी, केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह लद्दाख में चार आर्य सत्यों की भावना के अनुसार शिक्षा प्रणाली की नीति पर शोधपत्र प्रस्तुत।
3. 3-6 अक्टूबर 2016, बौद्ध प्रमाण पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का मूलशास्त्र विभाग के द्वारा आयोजन।

ख. अन्य शैक्षणिक कार्य -

1. 5-6 मई 2016, शान्तरक्षित पुस्तकालय, तिब्बती पुस्तकों के कैटलॉग और वर्गीकरण की कार्यशाला में भाग लिया।
2. 4-6 अक्टूबर 2016 को तीन विद्वानों द्वारा मध्यमा के विद्यार्थियों के लिए पुस्तकालय में प्रमाण विषयक राष्ट्रीय सम्मेलन के दौरान तीन व्याख्यानों का आयोजन कराया।
3. 12 फरवरी 2017, सिक्किम बौद्ध विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम पर अंतिम बैठक में उपकुलपति और सिक्किम बौद्ध विश्वविद्यालय के निदेशक और संकाय के डीन के साथ बैठक में भाग लिया।

गेशे लोब्सांग वांगड्रक

शैक्षणिक गतिविधियाँ

1. 25-27 मार्च 2017, सम्प्रदाय शास्त्र विभाग के द्वारा आयोजित शील, समाधि और प्रज्ञा विषयक त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में शोधपत्र प्रस्तुत।
2. 3-6 अक्टूबर 2016, मूलशास्त्र विभाग द्वारा आयोजित बौद्ध प्रमाण संगोष्ठी में शोधपत्र प्रस्तुत।
3. हर मंगलवार को प्रमाण प्रशिक्षण तथा बुधवार को शास्त्रार्थ-निरीक्षण।
4. 15 मार्च 2016, पद्मसम्भव छात्रावास के प्रतिपालक का दायित्व ग्रहण किया।

गेशे तेनज़िन नोरबू

(क) शैक्षणिक गतिविधियाँ

1. 30 अप्रैल 2016, राष्ट्रिय बौद्ध प्रमाण संगोष्ठी-समिति की सदस्यता।

(ख) संगोष्ठियों में सहभागिता

1. 3-6 अक्टूबर 2016, प्रमाण विषयक राष्ट्रिय संगोष्ठी में मंच संचालन ।
2. 4 अक्टूबर 2016, सी.यू.टी.एस. में बौद्ध प्रमाण संगोष्ठी में सविकल्पक तथा निर्विकल्पक प्रमाण पर व्याख्यान दिया ।
3. 26 मार्च 2017, सम्प्रदाय शास्त्र विभाग के द्वारा आयोजित तिब्बती बौद्ध धर्म के चार प्रमुख सम्प्रदायों में शील, समाधि और प्रज्ञा विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में शोधपत्र प्रस्तुत ।

गेशे लोब्संग थरख्ये

शैक्षणिक गतिविधियाँ

1. 3-6 अक्टूबर 2016, बौद्ध प्रमाण संगोष्ठी में एक सत्र की अध्यक्षता तथा शोधपत्र प्रस्तुत किया ।
2. बौद्ध दर्शनशास्त्र का यूलोकोद भिक्षुणी मठ में अध्यापन ।

छुलठिम ग्युर्मेद

शैक्षणिक गतिविधियाँ

1. 3-6 अक्टूबर 2016, प्रमाण संगोष्ठी में शोधपत्र प्रस्तुत ।
2. 15 मार्च 2016, पद्मसम्भव छात्रावास के प्रतिपालक का दायित्व ग्रहण किया ।
3. प्रमाण के अध्यापन हेतु ओग्र्यान थुबतेन मिनड्रोलिंग मठ में गया ।
4. प्रत्येक मंगल प्रमाण-प्रशिक्षण तथा बुधवार शास्त्रार्थ का निरीक्षण ।

संयुक्त रूप से सभी सदस्यों की सहभागिता

1. 26 दिसम्बर 2016, संयुक्त राज्य अमेरिका के हैम्पशायर कॉलेज के प्रोफेसर हर्बर्ट जे. बर्नस्टेन द्वारा भौतिकी, क्वांटम भौतिकी और संवृति सत्य पर दिये गये व्याख्यान में भाग लिया ।
2. 21 जनवरी 2017, प्रोफेसर जोसे इनासियो कैबिजोन, कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, सांता बरबरा, संयुक्त राज्य अमेरिका के बुद्धिजम एण्ड साइन्स ऑन दि नेचर ऑफ इन्टर-एक्सन विषयक व्याख्यान में भाग लिया ।
3. 23-24 जनवरी 2017, प्रो. जे. जिन जंग के द्वारा प्रदत्त कोरियाई मन्दिरों में बुद्ध भवन एवं चित्रकला इत्यादि व्याख्यान में भाग लिया ।
4. 30 जनवरी 2017, चीन में सद्धर्मपुण्डरीकसूत्र और बौद्ध पार्थिव शरीर संरक्षण पर शेंहाई के प्रो. हैनशिन के व्याख्यान में भाग लिया ।
5. 10-12 फरवरी 2017, सोवा रिग्पा विभाग द्वारा आयोजित निदान विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया ।

(II) सम्प्रदायशास्त्र विभाग

इस विभाग में तिब्बती विद्वानों द्वारा बुद्धवचन एवं भारतीय आचार्यों के ग्रन्थों पर रचित टीका तथा स्वतन्त्र ग्रन्थों पर अध्यापन-कार्य होता है । भिक्षु एवं सामान्य विद्यार्थियों को तिब्बती बौद्ध परम्परा के चारों सम्प्रदायों की शिक्षा एक स्थान

पर देना, इस विश्वविद्यालय की स्थापना के प्रमुख उद्देश्यों में से एक है। यद्यपि भिक्षु, बौद्ध-विहारों में रहकर बौद्ध धर्म एवं दर्शन का अध्ययन कर सकते हैं, परन्तु उनमें चारों सम्प्रदायों की एक साथ शिक्षण की व्यवस्था नहीं है। इसके अतिरिक्त सामान्य विद्यार्थियों के लिए तिब्बती बौद्ध विहारों में अध्ययन की कोई व्यवस्था नहीं है।

उक्त सिद्धान्त एवं तथ्यों के आधार पर यह विभाग तिब्बती बौद्ध परम्परा के निम्नलिखित चार सम्प्रदायों की परम्पराओं के अध्ययन एवं शोध में कार्यरत है–

(क) कर्ग्युद सम्प्रदाय

(1) भिक्षु लोब्संग थोक्मेद - एसोशिएट प्रोफेसर तथा संकायाध्यक्ष, छात्रकल्याण (10.7.2016 तक)

(2) डॉ. टशी सम्फेल - एसिस्टेंट प्रोफेसर

(3) भिक्षु रमेशचन्द्र नेगी - एसिस्टेंट प्रोफेसर, प्रभारी- कोश विभाग

(4) भिक्षु मेहर सिंह नेगी - अतिथि प्राध्यापक

(ख) साक्या सम्प्रदाय

(1) डॉ. टशी छेरिङ् (एस.) - एसोशिएट प्रोफेसर तथा संकायाध्यक्ष, हेतु एवं अध्यात्मविद्या

(2) भिक्षु नवांग लोडो - एसिस्टेंट प्रोफेसर

(3) भिक्षु डक्पा सेङ्गे - एसिस्टेंट प्रोफेसर

(4) भिक्षु नवांग जोद्पा - अतिथि प्राध्यापक

(5) श्री छ़ेरिंग समडुप - अतिथि प्राध्यापक

शैक्षणिक गतिविधियाँ-

डॉ. टशी छेरिङ् (एस.)

1. पांच कॉलेज, मॉस, संयुक्त राज्य अमेरिका, और तस्मानिया विश्वविद्यालय और डीकिन विश्वविद्यालय, ऑस्ट्रेलिया तथा CUTS के बीच अकादमिक विनिमय कार्यक्रम के मुख्य समन्वयक।
2. CUTS और वॉशिंगटन विश्वविद्यालय, सीटल, यू.एस.ए. के बीच SKYPE के माध्यम से अकादमिक कार्यक्रम के मुख्य समन्वयक।
3. CUTS और उत्तर कैरोलिना विश्वविद्यालय, एशविले, यू.एस.ए. के बीच SKYPE के माध्यम से अकादमिक कार्यक्रम के मुख्य समन्वयक।
4. 19 से 21 अप्रैल 2016, इंदौर, मध्य प्रदेश के सेमिनार में शोधपत्र प्रस्तुत।
5. ढाई महीनों के लिए गोंसा अवतंसक विश्वविद्यालय, यूसीइंग, दक्षिण कोरिया में दसभूमिक सूत्र का अध्यापन।
6. सी.यू.टी.एस. में 25 से 28 सितंबर 2016 तक चतुर्दिवसीय लीडरशिप कार्यशाला में मुख्य समन्वयक के रूप में भाग लिया।
7. सिक्किम में सिक्किम बौद्ध विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम निर्माण में भाग लिया।

8. पांच कॉलेजों, मॉस, संयुक्त राज्य अमेरिका और तस्मानिया विश्वविद्यालय ऑस्ट्रेलिया के शैक्षणिक विनिमय के अन्तर्गत छात्रों के लिए व्याख्यान।
9. जनवरी 2016 सी.यू.टी.एस. में तक् छङ् लोचावा चोङ्खापा परियोजना की कार्यशाला में भाग लिया।
10. 11 फरवरी 2016, सी.आई.बी.एस., लेह के छात्रों को तिब्बती बौद्धग्रंथों के अंग्रेजी अनुवाद के बुनियादी कौशल पर व्याख्यान।
11. मार्च 2017 में सी.यू.टी.एस. में तिब्बती बौद्धधर्म के चार सम्प्रदायों में शील, समाधि और प्रज्ञा पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया तथा शोधपत्र प्रस्तुति।

(ग) ञिङमा सम्प्रदाय

(1) भिक्षु दुद्‌जोम नमग्यल - एसोशिएट प्रोफेसर
(2) खेनपो सङ्ग तेनज़िन - एसिस्टेंट प्रोफेसर
(3) खेनपो खरपो - एसिस्टेंट प्रोफेसर
(4) भिक्षु सोनम दोर्जे - अतिथि प्राध्यापक

शैक्षणिक गतिविधियाँ-

भिक्षु दुद्‌जोम नमग्यल

संगोष्ठी और सम्मेलन में सहभागिता :

1. 3 से 6 अक्टूबर, 2016, हमारे विश्वविद्यालय में मूलशास्त्र विभाग, सी.यू.टी.एस., सारनाथ द्वारा आयोजित बौद्ध प्रमाण सम्मेलन में सहभागिता तथा अन्तिम सत्र की अध्यक्षता की।
2. 25 सितंबर से 27 मार्च 2017, तिब्बती बौद्धधर्म के चार सम्प्रदायों में शील, समाधि और प्रज्ञा विषयक सम्मेलन में तीन दिन सम्मेलन में सहभागिता एवं अन्तिम दिवसीय सत्र की अध्यक्षता की।

समिति के सदस्य के लिए मनोनीत :

1. शैक्षिक सत्र 2016-2017 के लिए प्रवेश समिति के अध्यक्ष
2. ञिङमा संप्रदाय प्रभारी का दायित्व। (2016-2017)

शैक्षणिक विनिमय कार्यक्रम :

1. 6 जनवरी 2017 को अमरीका के छात्रों और तस्मानिया विश्वविद्यालय के छात्रों को 'अष्टाङ्ग मार्ग' पर व्याख्यान।
2. एक्सचेंज कार्यक्रम के तहत 27-29 दिसंबर, 2016 तस्मानिया विश्वविद्यालय के छात्रों को ङुलछु थोकमेद द्वारा रचित बोधिसत्त्व के 37 आचरण एवं गेशे लंगरी थंगपा द्वारा रचित चित्तशुद्धि विषयक 8 पद्यों पर व्याख्यान।

लघु परियोजना :

ञिङमा सम्प्रदाय के पारिभाषिक शब्दों का ङेसे ङोन्मे और तटुप शेन्जे से संकलन।

खेनपो खरपो

(1) मुख्य परियोजनाएं :

1. गेशे लोब्सांग वांगड्क के साथ प्रमाणवार्तिक कारिका पर कार्य प्रगतिशील है।
2. ञिङमा और गेलुक सम्प्रदाय के नैरात्म्य द्वय पर व्याख्या लेखन।
3. बौद्ध अभिधर्मकोश एवं विज्ञान के परमाणु पर व्याख्या लेखन।
4. तिब्बती साहित्य में मार्गक्रम पर संक्षिप्त टिप्पणी लेखन।

(2) शैक्षणिक गतिविधियां :

1. 3-6 अक्टूबर 2016 राष्ट्रिय प्रमाण संगोष्ठी मूलशास्त्र विभाग सी.यू.टी.एस. में शोधपत्र प्रस्तुत।
2. 1 अक्टूबर 2016 को इस विश्वविद्यालयी ञिङमा सम्प्रदाय की छात्रकल्याण समिति की एकवर्षीय अध्यक्षता।
3. 21 अप्रैल 2017 मूलशास्त्र-सम्प्रदाय शास्त्रीय सम्पादक बोर्ड की सदस्यता।
4. 25- 27 मार्च 2017 शील, समाधि तथा प्रज्ञा विषयक संगोष्ठी में शोधपत्र प्रस्तुत।
5. 24-28 अप्रैल, 2017 गेशे लोब्संग मोनलम द्वारा दिये गये पांच दिवसीय कार्यशाला 'इनडिज़ाइन प्रशिक्षण' में सहभागिता।
6. 27 जुलाई, 2016 शान्तरक्षित ग्रन्थालय द्वारा आयोजित तिब्बती पुस्तकों के कैटलॉग और वर्गीकरण बैठक में सहभागिता।
7. जर्मनी से डोर डिलीइन के चतुर्मासीय मध्यमक पर शोध निर्देशन।

(घ) गेलुक् सम्प्रदाय

(1) भिक्षु लोब्संग ज्ञलछेन - एसोशिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष (सं.शा.)
(2) भिक्षु लोब्संग छुलठ्रिम - एसिस्टेंट प्रोफेसर
(3) भिक्षु नवांग तेनफेल - एसिस्टेंट प्रोफेसर

भिक्षु लोब्संग ज्ञलछेन

संगोष्ठी और सम्मेलन में सहभागिता :

1. 18 मार्च, 2016 सी.आई.एच.सी.एस., दाहूँङ् अरुणाचल प्रदेश में राष्ट्रीय संगोष्ठी के अन्तर्गत तिब्बती चार बौद्ध सम्प्रदायों के तुलनात्मक दर्शन पर व्याख्यान दिया।
2. 3-6 अक्टूबर 2016 तक मूलशास्त्र विभाग, के.ति.अ.विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित प्रमाण विषयक राष्ट्रिय संगोष्ठी में अध्यक्षता तथा सहभागिता।
3. 25-27 मार्च 2017 "शील, समाधि और प्रज्ञा" विषयक सेमिनार में सत्र की अध्यक्षता।

पी-एच.डी. पर्यवेक्षक / मार्गदर्शन :

1. येशी वाङ्दु पी-एच.डी.।
2. देचेन डोल्मा पी-एच.डी.।

भिक्षु लोब्संग छुलठ्रिम

शैक्षणिक गतिविधियाँ

1) 22/06/2017, कर्नाटक में मोनकोट में ड्रेपोंग लॉस लिंग मठ द्वारा आयोजित "विनय और अभिधर्म" पर एक व्याख्यान दिया।

2) 10/08/2017, "गेलुग्-पा परंपरा का इतिहास" पर छात्रकल्याण समिति द्वारा आयोजित शिविर में पूर्वमध्यमा प्रथम वर्षीय छात्रों के लिये व्याख्यान।

3) 02/03/2017 - 03/03/2017, बालक छात्रावास के छात्रों के लिए शास्त्रार्थ शिक्षण।

4) 27/03/2017 सी.यू.टी.एस. द्वारा आयोजित तिब्बती बौद्धधर्म के चार प्रमुख सम्प्रदायों में शील, समाधि और प्रज्ञा विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में "गेलुग संप्रदाय में शील" पर व्याख्यान।

5) शैक्षणिक विनिमय कार्यक्रम के तहत अतिथि छात्रों को दो व्याख्यान- क) गेलुग परंपरा का दर्शन, ख) पञ्च मार्ग।

6) भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा आयोजित शिक्षक-सम्मेलन में भाग लिया।

प्रकाशन

1) अभिधर्मकोश के दो भाग प्रकाशनाधीन- बुद्ध शैक्षिक फाउंडेशन, तेपेई, ताइवान कॉर्पोरेट बॉडी।

2) शान्तरक्षित कृत मध्यमकालंकार पर टीका लेखन एवं मूलभाग का चीनी अनुवाद प्रकाशनाधीन।

गेशे नवांग तेनफेल

व्याख्यान सम्मेलन में सहभागिता :

1. 6 अप्रैल 2016, वाराणसेय सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में धार्मिक सद्भाव एवं विश्वशान्ति विषयक शोधपत्र प्रस्तुत।

2. सी.यू.टी.एस. लाइब्रेरी के कैटलॉग के लिए मार्गदर्शन के लिए एक्सपर्ट कमेटी में चयनित।

3. 21 मार्च 2017, सी.यू.टी.एस. छात्रकल्याण समिति द्वारा आयोजित कार्यक्रम ‘‘गेलुग्पा संप्रदाय : एक परिचय’’ पर व्याख्यान दिया।

4. 21 मार्च 2017, शिक्षा विभाग, सीटीए, धर्मशाला एच.पी. के "तिब्बती अवतार परम्परा - एक शोध" पर शोधकार्य का मूल्यांकन।

5. 17 से 24 दिसंबर 2016, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में भारत सरकार द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन और प्रदर्शनी में भाग लिया।

6. 3 दिसंबर 2016 को "तिब्बती बौद्धधर्म में ध्यान साधना" विषयक लेख सुधाकर महिला महाविद्यालय पाण्डेयपुर की पत्रिका में प्रकाशित।

लघु परियोजना

1. "ज़ामिलिंग ग्येंचिग" पुस्तक के चौथे संस्करण का "सम्पादन" प्रकाशित 2016 धी पब्लिकेशंस, आईएसबीएन: 978-81-928174-6-0
2. "शा नाम ठ सुम गि सुम तक् डेल्पा" तीसरा संस्करण 2016 धी पब्लिकेशंस, आईएसबीएन 978-81- 9 28174-1-5 के लिए संपादन और प्रूफ।
3. "पेमा ग्यलछन के रचना संग्रह का सम्पादन" तीसरा भाग 2016, ISBN 978-81-928174-5-3
4. शानाग जोदपा तेनजिन नामग्याल रचित पुस्तक 'बोद की दत्तक' का सम्पादन तीसरा भाग 2016 धी पब्लिकेशंस, आईएसबीएन: 978-81 -89017-09-5
5. पटुल जिग्मे छोकी वाङ्पो द्वारा विरचित "शालदम लुगञी ञिङ्चुद" के लिए सहायक संपादन, 2016 धीः प्रकाशन, आईएसबीएन: 978-81-928174-5-3

संयुक्त रूप से सभी सदस्यों की सहभागिता

1. 1 सितम्बर 2016, श्री एम.एल. श्रीवास्तव, संयुक्त सचिव, संस्कृति मन्त्रालय, भारत सरकार के सम्बोधन में भाग लिया।
2. 26 दिसम्बर 2016, संयुक्त राज्य अमेरिका के हैम्पशायर कॉलेज के प्रोफेसर हर्बर्ट जे. बर्नस्टेन द्वारा भौतिकी, क्वांटम भौतिकी और संवृति सत्य पर दिये गये व्याख्यान में भाग लिया।
3. 21 जनवरी 2017, प्रोफेसर जोसे इनासियो कैबिजोन, कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, सांता बरबरा, संयुक्त राज्य अमेरिका के बुद्धिजम एण्ड साइन्स ऑन दि नेचर ऑफ इन्टर-एक्सन विषयक व्याख्यान में भाग लिया।
4. 23-24 जनवरी 2017, प्रो. जे. जिन जंग के द्वारा प्रदत्त कोरियाई मन्दिरों में बुद्ध भवन एवं चित्रकला इत्यादि व्याख्यान में भाग लिया।
5. 30 जनवरी 2017, चीन में सद्धर्मपुण्डरीकसूत्र और बौद्ध पार्थिव शरीर संरक्षण पर शेंहाई के प्रो. हैनशिन के व्याख्यान में भाग लिया।
6. 10-12 फरवरी 2017, सोवा रिग्पा विभाग द्वारा आयोजित निदान विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया।

(III) बोन सम्प्रदायशास्त्र विभाग

बोन सम्प्रदाय तिब्बत का एक प्राचीन धर्म है। इसकी हजारों वर्षों से अविच्छिन्न ऐतिहासिक, धार्मिक एवं दार्शनिक परम्परा चली आ रही है। इस सम्प्रदाय में प्रचुर मात्रा में दर्शन, तर्क-शास्त्र आदि विषयों के साहित्य उपलब्ध हैं।

इस विश्वविद्यालय में बोन सम्प्रदाय के साहित्य को दो भागों में विभाजित कर सुयोग्य अध्यापकों द्वारा अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था की गयी है। प्रथम भाग में बोन सम्प्रदाय के शास्ता शेनरब द्वारा उपदिष्ट वचनों और पूर्व के आचार्यों के ग्रन्थों को तथा द्वितीय भाग में 8वीं शताब्दी के पश्चाद्वर्ती आचार्यों के ग्रन्थों को रखा गया है।

(1) भिक्षु गोरिग तेन्जिन छोगदेन - एसोशिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष

(2) भिक्षु सी.जी.एस. फुन्छोक ञिमा - एसिस्टेंट प्रोफेसर

(3) भिक्षु गोरिग लुङरिग् लोदेन वांगछुक - एसोशिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, छात्र कल्याण सङ्काय (11.7.2016 से)

(4) भिक्षु युङ्डुङ् गेलेक - एसिस्टेंट प्रोफेसर

(5) भिक्षु एम.टी. नमदक छुकफुद - अतिथि प्राध्यापक

(ख) शब्द विद्या संकाय

डॉ. बाबूराम त्रिपाठी - संकायाध्यक्ष (31.12.2016 तक)

डॉ. धर्मदत्त चतुर्वेदी - संकायाध्यक्ष (1.1.2017 से)

(I) संस्कृत विभाग

(1) डॉ. धर्मदत्त चतुर्वेदी - एसोशिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष

(2) प्रो. के.एन. मिश्र - प्रोफेसर (पुनर्नियोजित)

(3) श्री कमलप्रसाद गौतम - अतिथि प्राध्यापक

(4) डॉ. भरतभूषण चौबे - अतिथि प्राध्यापक

विभागीय गतिविधियाँ-

1. पूर्व मध्यमा प्रथम वर्षीय छात्रों के लिए प्रथम अधिसत्र में 17 अक्टूबर 2016 से 15 दिवसीय संस्कृत भाषा का विशेष प्रशिक्षण दिया गया।
2. 18 सितम्बर 2016 - विभागीय नेतृत्व में विश्वविद्यालय के मुख्य द्वार पर 20 छात्र-छात्राओं के द्वारा “ले ले झाड़ू आ जाओ” नामक स्वरचित व निर्देशित नुक्कड़ नाटक का मञ्चन कराया।
3. 27 सितम्बर 2016 - 50 खवर्गीय संस्कृत छात्र-छात्राओं को सीतामढ़ी (सीता समाहित स्थली) चुनार दुर्ग तथा श्रीभागीरथी ट्रस्ट आदर्श संस्कृत महाविद्यालय, चुनार की (मिर्जापुर उ.प्र.) भ्रमण यात्रा कराई। चुनार दुर्ग चौराहे पर स्वच्छता चक्र नाटक के माध्यम से छात्रों ने स्वच्छता का सन्देश दिया।

4. 14 अक्टूबर - विभाग के नेतृत्व में विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.) द्वारा आयोजित अखिल भारतीय कालिदास समारोह के अन्तर्गत "अन्तर्विश्वविद्यालयीय संस्कृत वाद-विवाद प्रतियोगिता" में शास्त्रीय प्रथम वर्षीय छात्र श्री वङ्ग्यल लामा ने पण्डित ब्रह्मानन्द शुक्ल नामक पुरस्कार प्राप्त किया।
5. द्वितीय अधिसत्र में अनिवार्य तथा खवर्गीय संस्कृत कक्षाओं में 25 बाह्य विद्वानों के कक्षागत विशेष व्याख्यान आयोजित किये गये।
6. 20 मार्च 2017 - 15 दिवसीय संस्कृत भाषा का प्रशिक्षण मध्यमा स्तर पर दिया गया।
7. 28 मार्च 2017 - "अन्तर्जालयन्त्रं विद्यार्थिनां हितावहं न वा" विषय पर मध्यमास्तरीय तथा "कृष्णधनं निरोद्धुं मुद्रापिधानमावश्यकं न वा" विषय पर शास्त्री-आचार्य स्तरीय संस्कृत वाद-विवाद प्रतियोगिता आयोजित की गई।

the pioneer

The mission mode

On completion of the third year of Swachhata Abhiyan, the Ministry of Culture organised Swachhata Pakhwada

8. 29 मार्च 2017 - मध्यमा तथा शास्त्री-आचार्य स्तरीय तात्कालिक संस्कृत निबन्ध-लेखन प्रतियोगिता आयोजित की गई।
9. 29 मार्च 2017 - काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय तथा महात्मा गान्धी काशी विद्यापीठ के संस्कृत विद्वान् कवियों, युवा कवियों कवयित्रियों तथा विश्वविद्यालय के स्थानीय कवियों ने विभाग द्वारा आयोजित कवि सम्मेलन में संस्कृत गीत व कविताएँ प्रस्तुत कीं। इस अवसर पर विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजयी छात्र-छात्राओं को प्रथम, द्वितीय, तृतीय व सान्त्वना पुस्तक पुरस्कार व प्रमाणपत्र वितरित किये गये।
10. विश्वधरोहर दिवस पर हवेलिया चौराहे पर 'स्वच्छता पखवाड़ा' के अन्तर्गत 'स्वच्छताचक्र' नामक नुक्कड़ नाटक का मञ्चन छात्र-छात्राओं के द्वारा किया गया। इसमें मुख्य अतिथि के रूप में शहर उत्तरी विधायक श्री रवीन्द्र जायसवाल जी उपस्थित थे।

डॉ. धर्मदत्त चतुर्वेदी

शोधनिबन्ध एवं कविताओं का प्रकाशन-

1. 'प्रो. अमरनाथपाण्डेयशतकम्' शीर्षकीय स्व निर्मित 100 पद्यों की रचना "अमरयशः सौरभम्" नामक स्मृति ग्रन्थ में ISSN 978-93-81999-84-4-2016, शारदा संस्कृत संस्थान, जगतगंज, वाराणसी से प्रकाशित।
2. "युवजनोद्दामप्रवृत्तिनियामकं रघुवंशमहाकाव्यम्" शीर्षकीय शोधनिबन्ध 'सुसंस्कृतम्' नामक अन्तर्राष्ट्रीय संस्कृत शोध-पत्रिका ISSN 2277-7024, वर्ष 6, अंक 2, जुलाई-दिसम्बर-2016, सुरुचि प्रकाशन, वाराणसी से प्रकाशित।

3. 'कन्योत्पीडनम्' शीर्षकीय संस्कृत कविता - 'अमरवाणी' पत्रिका मेरठ से प्रकाशित।
4. 28 जनवरी, 2017 - "आचार्यव्रजवल्लभद्विवेदिगौरवं शतकम्" शीर्षकीय 100 पद्यों की रचना प्रो. व्रजवल्लभ द्विवेदी जी के स्मृति ग्रन्थ में

प्रकाशनार्थ प्रेषित।

5. प्रो. गङ्गाधर पण्डा, पूर्व कुलपति के षष्टिपूर्ति - अभिनन्दन ग्रन्थ में 60 पद्य प्रकाशनार्थ प्रेषित।
6. पं. वासुदेव द्विवेदी शास्त्री जी के विषय में शिखरिणी - छन्द में 25 पद्य 'अमरवाणी पत्रिका' मेरठ से प्रकाशित।
7. "प्रो. प्रभुनाथद्विवेदानां कथासाहित्ये योगदानम्" संस्कृत रचना उ.प्र. संस्कृत संस्थान, लखनऊ से प्रकाश्य 'परिशीलनम्' नामक पत्रिका में प्रकाशनार्थ प्रेषित।

ग्रन्थ-प्रकाशन

1. 'सौम्याब्दकाव्यामृतम्' नामक स्वरचित मौलिक काव्य। ISSN 978-93-8199-87-5, शारदा संस्कृत संस्थान, जगतगंज, वाराणसी।
2. शारदा संस्कृत संस्थान, जगतगंज से प्रकाशित - पूर्व प्रकाशित "संस्कृतकाव्यगीतवैभवम्" मौलिक काव्य कृति की समीक्षा- राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान डीम्ड यूनिवर्सिटी, नई दिल्ली-संस्कृत विमर्श।
3. "धात्वर्थ-विशेष-विमर्श" शीर्षकीय ग्रन्थ प्रकाशनाधीन, शारदा संस्कृत संस्थान, जगतगंज, वाराणसी।

सेमिनारों में शोधपत्र प्रस्तुति व सहभागिता-

1. 7 अगस्त 2016 - व्याकरण विभाग, संस्कृत विद्याधर्म विज्ञान, सङ्काय, बी.एच.यू. में अखिल भारतीय पतञ्जलि समारोह में "महाभाष्यशैलीविमर्शः" विषयक शोधपत्र प्रस्तुत किया।
2. 11-16 अक्टूबर 2016 - विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन (म.प्र.) द्वारा आयोजित अखिल भारतीय कालिदास समारोह में "अमर्यादितकामहिंसादिप्रवृत्तिनियामने रघुवंशस्यापूर्वसामर्थ्यम्" शीर्षकीय शोधनिबन्ध प्रस्तुत किया।
3. 4 दिसम्बर 2016 - श्रीसुधाकर महिला महाविद्यालय पाण्डेयपुर, वाराणसी द्वारा आयोजित 'साधना' शोध संगोष्ठी में "बौद्ध ध्यानपारमिता एवं वर्तमान कुत्सित प्रवृत्तियाँ" शीर्षकीय शोध निबन्ध प्रस्तुत किया।

व्याख्यान-

1. 17 जुलाई 2016 - वाग्योगचेतनापीठम् शिवाला, वाराणसी में आयोजित संस्कृत विद्वद् गोष्ठी में "संस्कृतस्य समसामयिकी दशा दिशा च" विषय पर व्याख्यान दिया।
2. 2 अक्टूबर 2016 - विश्वविद्यालीय छात्रकल्याण समिति द्वारा आयोजित गान्धी जयन्ती के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में व्याख्यान दिया।

संस्कृत कार्यक्रमों में सहभागिता-

1. स्व. डॉ. कपिलदेव पाण्डेय की पुण्य स्मृति सभा में भाग लिया।

शोध-निर्देशन-

1. शोधछात्र दावा शेरपा के "द्विवृतयुपेतमध्यमकालङ्कारस्य पुनरुद्धारः समीक्षणञ्च" विषयक शोधकार्य में 40 पद्यों का दो वृत्तियों के साथ पुनरुद्धार-निर्देशन किया।
2. शोध छात्र पासंग तेनजिन के "बोधिसत्त्वचर्यावतारविवृतिपञ्जिकायाः पुनरुद्धारः समीक्षणञ्च" विषयक पुनरुद्धार कार्य का मार्गदर्शन किया।

संस्कृत कवि-सम्मेलनों में कविता प्रस्तुति-

1. 4 अक्टूबर 2016 आकाशवाणी वाराणसी में 'शरद् ऋतु की सुषमा' से सम्बद्ध संस्कृत गीत की रिकार्डिंग हुई।
2. 13 अक्टूबर 2016 - विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.) द्वारा आयोजित अखिल भारतीय कालिदास समारोह के अन्तर्गत राष्ट्रिय संस्कृत कवि सम्मेलन में ''वन्दे कालिदासमहिमानम्'' शीर्षकीय संस्कृत कविता प्रस्तुत की।
3. 14 फरवरी 2017 - पं. विद्यानिवास मिश्र स्मृति समारोह के अन्तर्गत सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी - योगसाधना केन्द्र में संस्कृत गीत की प्रस्तुत की।

अन्य शोधकार्य-

1. डॉ. पेमा तेनजिन कृत ''मैत्रेय परिवर्त'' का संस्कृत संशोधन किया।
2. बौद्धविज्ञान दर्शन एवं सूत्रसमुच्चय नामक ग्रन्थ के हिन्दी अनुवाद के संपादन की अनेक बैठकों में माननीय कुलपति जी के सान्निध्य में भाग लिया।

शोध-योजना-

1. अवदानकल्पलता- हिन्दी अनुवाद के अन्तर्गत 5-6 अवदानों की पाठ समीक्षा।
2. पाणिनि एवं सारस्वत व्याकरण का तुलनात्मक विमर्श पर कृत्य प्रत्ययों की तुलना की।

संस्कृत-सेवा सम्मान-पुरस्कार-प्राप्ति-

1. 21 अगस्त 2016 - सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी - योगसाधना केन्द्र में आयोजित संस्कृत दिवस-समारोह के अन्तर्गत संस्कृत सेवा-सम्मान पत्र की प्राप्ति।
2. 16 अक्टूबर 2016 - विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन (म.प्र.) द्वारा आयोजित अखिल भारतीय कालिदास समारोह के अन्तर्गत समापन सत्र में हरयाणा के राज्यपाल कप्तान सिंह सोलंकी के द्वारा 'विक्रम कालिदास' पुरस्कार की प्राप्ति।

समितियों में सहभागिता-

1. 7 अक्टूबर 2016 - विश्वविद्यालयीय संस्कृत रिसर्च डिग्री कमेटी में सदस्य के रूप में भाग लिया।
2. 26 अप्रैल 2016 - विश्वविद्यालयीय बोर्ड ऑफ गवर्नर्स समिति में सदस्य के रूप में भाग लिया।
3. 22 मार्च 2017 - विश्वविद्यालयीय 'बोर्ड ऑफ गवर्नर' समिति की बैठक में सदस्य के रूप में भाग लिया।

(II) तिब्बती भाषा एवं साहित्य विभाग

(1) भिक्षु ल्हक्पा छेरिंग	-	एसिस्टेंट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष
(2) डॉ. टशी छेरिंग (टी)	-	एसोशिएट प्रोफेसर
(3) श्री लोब्सङ् तोन्देन	-	अतिथि प्राध्यापक

शैक्षणिक गतिविधियाँ-

भिक्षु ल्हक्पा छेरिंग

I. व्याख्यान :

क्रमांक	व्याख्यान और बैठकों का विषय	स्थान	आयोजक	तिथि
1.	सीटीई, सीयूटीएस और बीएचयू के निवर्तमान छात्रों को नैतिकता और शिक्षा पर एक व्याख्यान	सारनाथ के व्हाइट हॉल में	एमएचएस की पूर्व छात्र समिति द्वारा	10 अप्रैल 2016
2.	चालीस बाल कहानियों के सुधार के लिए चार दिवसीय बैठक	CUTS समिति भवन	सीटीए धर्मशाला के शिक्षा कार्यालय द्वारा	20-23 मई 2016
3.	Tsangpa Khmtsen दक्षिण भारत के सेरा जे मठीय छात्रों के लिए 23 दिनों के लिए एक व्यापक तिब्बती भाषा और साहित्य पाठ्यक्रम	Tsangpa Khamtsen हॉल, सेरा जे, बेलाकोपी में	Tsangpa Khamtsen का कार्यालय	25 मई से 18 जून 2016 तक
4.	9 तिब्बती स्कूलों और 9 तिब्बती सेटलमेंट के लिए तिब्बती भाषा संरक्षण व महत्त्व पर व्याख्यान	समिति कक्ष सी.यू.टी.एस.	शिक्षा कार्यालय सीटीए धर्मशाला एच.पी.	21 जून से 9 जुलाई 2016 तक
5.	सीटीए शिक्षा विभाग के प्रकाशनाधीन बाल-कथा पुस्तक के सम्पादन के लिए दूसरी तीन दिवसीय बैठक	समिति कक्ष	सीटीए धर्मशाला के शिक्षा कार्यालय	13-15 अगस्त 2016
6.	भाषा की वर्तमान स्थिति और तिब्बती विकास के उपाय पर विश्वविद्यालय के छात्रों के लिए एक व्याख्यान	अतिश हॉल में	44वीं SWA द्वारा संगठित	15 सितंबर 2016
7.	"गांधी के विचार और उनका अनुपालन" पर विश्वविद्यालय के छात्रों के लिए एक व्याख्यान	विश्वविद्यालय-संभोट भवन	संस्थान के वीएसएससी द्वारा आयोजित	2 अक्टूबर 2016
8.	मिश्रित भाषा के नकारात्मक प्रभाव पर व्याख्यान	अतिश हॉल में	तिब्बती भाषा और टीएलएससी विभाग	11 नवम्बर 2016
9.	"समसामयिक तिब्बती पत्रिकाओं का महत्त्व" पर व्याख्यान	बोध गया पैनमाथन	चिगडेल छोकपा द्वारा आयोजित	8 जनवरी 2017
10.	समिति के सदस्यों को टीएलएससी की भविष्य योजना पर व्याख्यान	मीटिंग हॉल दोरजेदन बोधगया	टीएलएससी द्वारा आयोजित	9 जनवरी 2017
11.	टीएचएफएस मसूरी के छात्रों के लिये	संभोट भवन समिति-	भूतपूर्व एचएससी	17 जनवरी

	"कैसे अध्ययन करें" पर व्याख्यान	कक्ष	द्वारा आयोजित	2017
12.	तिब्बती भाषा के महत्व पर तिब्बती कॉलेज के छात्र सम्मेलन में व्याख्यान	अतिश हॉल में	टीसीएस की समिति द्वारा आयोजित	17 फरवरी 2017
13.	दलाई लामा संस्थान के छात्रों के लिए विशेष तिब्बती पाठ्यक्रम का शिक्षण	शान्तरक्षित पुस्तकालय	दलाई लामा संस्थान, बेंगलुरु द्वारा आयोजित	13-18 मार्च 2017

II. पुस्तकों में प्रकाशित लेख:

1. बोधिचर्यावतार के अध्याय IX और X को चीनी अनुवादक वेंनेबल टी. संगमो के साथ चीनी भाषा में अनुवादित और ताइवान से प्रकाशित किया गया। इंटरनेशनल स्टैंडर्ड बुक नंबर आईएसबीएन 978-9 86-9 3484-0-9 है ।
2. धर्मशाला सीटीए रिसर्च सेंटर के तिब्बत पॉलिसी जर्नल में प्रकाशित 20 पृष्ठों का एक लेख "तिब्बती संस्कृति को जीवित कैसे रखा जाय, एक विचार"।
3. अंग्रेजी-तिब्बती भाषा का एक लघु शब्दकोश संपादित किया ।

III. संगोष्ठी तथा व्याख्यान में सहभागिता:

क्रमांक	व्याख्यान	स्थान	आयोजक	तिथि
1.	लाइब्रेरी साइंस पर व्याख्यान	अनाथपिंडद अतिथि-गृह	CUTS पुस्तकालय द्वारा आयोजित	5 मई 2016

IV. समिति-सदस्यता:

1. विश्वविद्यालय-विद्वत्परिषद।
2. एम.एड. पाठ्यक्रम निर्माण समिति।
3. तिब्बती भाषा सेवा केंद्र।
4. टीएचएस की छात्र समिति।

V. अन्य गतिविधियां:

1. यूनिवर्सिटी के कर्मचारियों के बच्चों के लिए विशेष तिब्बती भाषा शिक्षण।
2. 11 नवम्बर 2016 - विश्वविद्यालय और साथ ही बी.ए. बी.एड. की कक्षागत नवीन तिब्बती पारिभाषिक शब्द विषयक प्रतियोगिता ।
3. 1-13 जनवरी 2017 - बोधगया कालचक्र कार्यक्रम में दलाईलामा के प्रवचन के दौरान शुद्ध मातृभाषा बोलने की अपील हेतु।

4. विश्वविद्यालयीय कुलपति द्वारा निर्देशित 25 मार्च से 2 अप्रैल 2017 तक Google तिब्बती परियोजना की व्यवस्था में सहायता।
5. सीटीए, धर्मशाला में शिक्षा विभाग के एक छात्र के पी-एच.डी. की थीसिस का मूल्यांकन।

डॉ. टशी छेरिंग (टी)

1. "Nyentsik Rigpe Kaned" शीर्षकीय पुस्तक का लेखन सम्पन्न और प्रकाशन की प्रक्रिया में।
2. विश्वविद्यालयीय शोध छात्र श्री लोसङ् दोन्देन के शोध कार्य का निर्देशन।
3. लॉसेलिंग, डेपुंग मोनस्ट्री के 1.12.2016 से 28.02.2017 तक दो गेशे के लिए विशेष कक्षाएं ल्छन् सेतु डे पर।
4. विश्वविद्यालय में अकादमिक विनिमय कार्यक्रम के दौरान 8 जनवरी 2016 को "तिब्बती भाषा के पहलुओं" पर एक प्रस्तुति।
5. पुस्तक चयन समिति की सदस्यता, शान्तरक्षित पुस्तकालय, सी.यू.टी.एस.।

(III) प्राचीन एवं आधुनिक भाषा विभाग

(1) डॉ. मौसमी गुहा बैनर्जी - एसिस्टेंट प्रोफेसर (अंग्रेजी) एवं विभागाध्यक्ष (23.2.2017 तक)
(2) डॉ. धर्मदत्त चतुर्वेदी - विभागाध्यक्ष
(3) प्रो. बाबूराम त्रिपाठी - प्रोफेसर (हिन्दी)
(4) डॉ. रामसुधार सिंह - अतिथि प्राध्यापक (हिन्दी)
(5) डॉ. विवेकानन्द तिवारी - अतिथि प्राध्यापक (हिन्दी)
(6) डॉ. अरविन्द कुमार सिंह - अतिथि प्राध्यापक (पालि)
(7) श्री जयप्रकाश यादव - अतिथि प्राध्यापक (पालि)
(8) डॉ. जसमीत गिल - अतिथि प्राध्यापक (अंग्रेज़ी)
(9) डॉ. अनुराग त्रिपाठी - अतिथि प्राध्यापक (हिन्दी)
(10) डॉ. नवीन कुमार यादव - अतिथि प्राध्यापक (अंग्रेज़ी)

विभागीय गतिविधियाँ-

1. दिनांक 26-27 दिसम्बर, 2016 को "आधुनिक समय में मानव मूल्य और नैतिकता का महत्त्व" विषय पर एक दो दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।
2. डॉ. राहुल चतुर्वेदी, अंग्रेजी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी द्वारा "पोस्ट-मॉडर्निज्म एण्ड डिकन्स्ट्रक्शन" विषय पर एक विशेष व्याख्यान आचार्य छात्रों के लिए दिया गया।
3. डॉ. प्रवीण कुमार पटेल, महिला महाविद्यालय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी द्वारा "ऐन एनालिसिस ऑफ विलफ्रेड ओवेन्स स्ट्रेंज मीटिंग" पर एक विशेष व्याख्यान, शास्त्री कक्षा के छात्रों के लिए दिया गया।

4. प्रोफेसर बी. आर. त्रिपाठी ने वाराणसी में हिंदी-भाषा के छात्रों के लिए शैक्षिक भ्रमण का आयोजन किया। प्रो. रामसुधार सिंह और अनुसंधान इकाई, अनुवाद यूनिट के डॉ. रामजी सिंह ने भी उनके साथ दौरे पर 10 अप्रैल, 2016 को सहयोग किया।
5. 16-31 अगस्त, 2016 'शुद्ध हिंदी प्रयोग' पर पंद्रह दिवसीय प्रशिक्षण में प्रो. त्रिपाठी ने हिंदी व्याकरण पर विशेष कक्षाएं लीं।
6. शास्त्री और आचार्य छात्रों के लिए 1 सितंबर, 2016 को अंग्रेजी सम्भाषण के विशेष पाठ्यक्रम आयोजित।
7. व्यावहारिक पालि एवं मज्झिम निकाय पर विशेष व्याख्यान 30 जनवरी 2017 को रिचर्ड तिलक रत्ने ने दिये।

शैक्षणिक गतिविधियाँ-

डॉ. मौसमी गुहा बनर्जी

1. 'द मॉर्निंग फॉर डेथ एंड इज़ सोल्मेनेस्ट ऑफ इंडस्ट्रीज : ए एन्क्टमेंट ऑफ दी सिव्हिलीटी ऑफ द डेथ इन एमिली डिकिन्सन पोएटिक्स' शीर्षकीय निबन्ध द इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंग्लिश : लिटरेचर, लैंग्वेज एंड स्किल्स, ए ऑनलाइन पीयर-समीक्षा पत्रिका, खंड 5, अंक 1, अप्रैल 2016, आईएसएसएन 2278-0742 प्रकाशित।
2. 'ए ग्लोबल जर्नल डिवोडिट टू प्वाइंट एण्ड पोएट्रि में स्मायल टियर्स ऑफ ऑल लाइफ' शीर्षकीय शोध निबन्ध प्रकाशनाधीन, आईएसएसएन 2347-632X, जून-2016 अंक।
3. चास्कर और डॉ. प्रशांत मोथे द्वारा सम्पादित लिट्रेचर एण्ड कल्चर अग्लोबल प्रस्पेक्टिव में कल्चर एण्ड ह्यूमन वैल्यूज ए ग्लोबल फेनोमेनन शीर्षकीय अध्याय प्रकाशित आदि प्रकाशन जयपुर- 93-82630-87-6, अक्टूबर 2016।
4. "हाउ विक द गाड्स ऑफ दिस वर्ल्ड आर - निबन्ध" एक ऑनलाइन पत्रिका, खंड 5, अंक 3, अक्टूबर 2016, आईएसएसएन 2278-0742।
5. यूनिवर्सिटी ऑफ पेट्रोलियम एण्ड एनर्जी देहरादून में 10-11 नवम्बर 2016 को अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में "लॉ थ्रु लैंग्वेज एण्ड लिट्रेचर ए ह्यूमनाइजिंग एक्सपीरियन्स" नामक शोधपत्र प्रस्तुत।
6. पुस्तक चयन समिति के सदस्य के रूप में काम किया और समिति से संबंधित कई बैठकों में भाग लिया।
7. एनपीएस के कार्यान्वयन के लिए नोडल अधिकारी के रूप में काम किया और समिति से संबंधित कई बैठकों में भाग लिया।
8. 14 जुलाई 2016 को यूनिवर्सिटी के एनपीएस के कर्मचारी-सब्सक्राइबरों के लिए एक सब्सक्राइबर जागृति कार्यक्रम (एसएपी) का आयोजन किया।
9. "लेट नाट द वाटर्स क्लोज ऑवर माइ हेड" शीर्षकीय पत्र इंग्लिश : इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंग्लिश : लिटरेचर, लैंग्वेज एंड स्किल्स, में एक ऑनलाइन जर्नल, वॉल्यूम 5, अंक 2, जुलाई 2016, आईएसएसएन 2278-0742 में प्रकाशित।
10. 26 अगस्त, 2016 और 29 अगस्त 2016 को आचार्य द्वितीय के छात्रों को 'क्रॉस कल्चरल कम्युनिकेशन' पर पावरप्वाइंट प्रस्तुति दी।

11. 12-17 सितंबर, 2016 राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा आयोजित साप्ताहिक कार्यशाला में 'राजभाषा दिवस का महत्व' पर एक भाषण दिया।
12. 26-27 दिसंबर, 2016 को विभाग की तरफ से "द इन्पोटन्स ऑफ ह्यूमन वैल्यूज एण्ड इथिक्स इन दि माडर्न टाइम" पर सेम्पोजियम आयोजित तथा शोधपत्र प्रस्तुत।
13. 29-30 दिसम्बर 2016 को कला और शिक्षा संकाय, डीकिन विश्वविद्यालय, मेलबोर्न, ऑस्ट्रेलिया के डॉ. लीला डेविस ने जैन बुद्धिस्ट फिलॉसफर डॉजन पर आचार्य-छात्रों के लिए व्याख्यान दिया।
14. "वि डू नॉट सर्व द डेट द पोस्ट इस पास्ट" शीर्षकीय पत्र-भाषा और कौशल, एक ऑनलाइन सहकर्मी-समीक्षा पत्रिका, खंड 5, अंक 4, जनवरी 2017, आईएसएसएन 2278-0742 - प्रकाशित।

डॉ. बाबूराम त्रिपाठी

1. 'राजनीति में विद्यार्थियों की सहभागिता का औचित्य' विषय पर विद्यार्थियों के लिए एक वाद-विवाद प्रतियोगिता दिनांक 19 मार्च, 2016 को आयोजित जिसमें सभी कक्षा के विद्यार्थियों ने सहभागिता दी।
2. 'हिन्दी कहानी में राष्ट्रीय चेतना' विषयक एक दिवसीय संगोष्ठी दिनांक 21 मार्च, 2017 को सम्पन्न।
3. 'पहले पति की बेटी' कहानी 'शब्दबीज' मासिक पत्रिका के जून, 2016 के अंक में प्रकाशित।
4. 'मनीष नहीं, मैं हार गया' कहानी 'सोच-विचार' मासिक पत्रिका के मई, 2016 के अंक में प्रकाशित।
5. 'यशोधरा की आत्मकथा' उपन्यास प्रकाश्य।

डॉ. रामसुधार सिंह

1. शास्त्री द्वितीय और तृतीय के हिंदी-भाषा के छात्रों के लिए उपन्यास 'गेशे जम्पा' पर दो विशेष व्याख्यान दिए। लेखक डॉ. नीरजा माधव ने 16 अप्रैल, 2016 को अपने स्वयं के लेखन पर विद्यार्थियों को व्याख्यान दिए।
2. 12-19 सितंबर, 2016 - राजभाषा सप्ताह के एक भाग के रूप में 13 सितंबर, 2016 को 'सरकारी कामों में हिन्दी प्रयोग की दिक्कतें' पर एक भाषण दिया।

सेमिनार

1. दिनांक 3 मार्च 2017 - हंसराज कालेज नई दिल्ली (जयशंकर प्रसाद न्यास द्वारा आयोजित) संगोष्ठी में 'वर्तमान परिदृश्य और जयशंकर प्रसाद का साहित्य' विषयक शोधपत्र प्रस्तुत।
2. दिनांक 5 एवं 6 मार्च 2017 - डी.ए.वी. कालेज, उरई (जालौन) में 'वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में भारतीय संस्कृति की प्रासंगिकता' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में शोधपत्र प्रस्तुत।

डॉ. जसमीत गिल

1. 12-15 जनवरी 2016 - ऑस्ट्रेलिया और अमेरिका के संकाय सदस्यों से असाइनमेंट लेखन के तरीकों पर विचार-विमर्श किया।
2. गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर, पंजाब में 28 मार्च, 2016 को 'लैटिन् अमेरिकी साहित्य : टाइम्स एण्ड कोंटेक्सट्स' विषय पर व्याख्यान दिया।

डॉ. अनुराग त्रिपाठी

(क) संगोष्ठी में शोधपत्र प्रस्तुति व सहभागिताः

1. 1-2 अक्टूबर 2016 - हिन्दी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में सम्मिलित होकर 'भीष्म साहनी की कहानियों में सामाजिक चेतना' शीर्षक पर शोधपत्र प्रस्तुत किया।
2. 9-10 नवम्बर 2016 - केन्द्रीय हिन्दी संस्थान आगरा एवं मानव संसाधन विकास मन्त्रालय, भारत सरकार द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में सम्मिलित होकर 'खड़ी बोली और प्रियप्रवास' शीर्षक पर शोधपत्र प्रस्तुत किया।
3. 5-6 मार्च 2017 - हिन्दी तथा आधुनिक भारतीय भाषा विभाग महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में सम्मिलित होकर 'आधुनिक हिन्दी कविता में धूमिल का योगदान' शीर्षक पर शोधपत्र प्रस्तुत किया।

(ख) शोध निबन्ध का प्रकाशनः

1. "कनुप्रिया : एक समीक्षात्मक अध्ययन" विषय पर रिसर्च हाइलाईट्स, वाराणसी के अक्टूबर-दिसम्बर 2016 अंक में शोध-निबन्ध प्रकाशित हुआ। (आई.एस.एस.एन.- 2350-0611)
2. "सन्त रविदास के साहित्य में सामाजिक चेतना" विषय पर नागरी पत्रिका, वाराणसी के नवम्बर-दिसम्बर 2016 अंक में शोध-निबन्ध प्रकाशित हुआ। (आई.एस.एस.एन.- 2348-0750)
3. "विवेकी राय के उपन्यासों में ग्रामीण बोध" विषय पर शोध हस्तक्षेप, वाराणसी के जनवरी-जून 2017 अंक में शोध-निबन्ध प्रकाशित हुआ। (आई.एस.एस.एन.- 2231-4644)

डॉ. विवेकानन्द तिवारी

ग्रन्थ (लेखक) :

1. "भारतीय ग्रामीण जीवन का स्वरूप और प्रेमचन्द के उपन्यास", ISBN: 978-81-931316-1-9, मई, 2016, संदेश प्रकाशन, प्लाट नं. 26, बी.एच.यू., वाराणसी-221005, यू.पी., भारत।
2. "फणीश्वरनाथ रेणु और नागार्जुन के उपन्यासों में अभिव्यक्त आंचलिक जीवन और शिल्प विधान", ISBN: 978-93-85789-91-5, जुलाई 2016, मनीष प्रकाशन, रोहित नगर, बी.एच.यू., वाराणसी-221005, यू.पी., भारत।

ग्रन्थ (सम्पादक) :

1. "हिन्दी साहित्य का इतिहास : शुक्ल संचयन" - सहसम्पादक, ISBN: 938-93-205-511-20, 2017, प्रकाशक- के.आर. पब्लिशर्स, 16/966, संगम विहार, नई दिल्ली।

ग्रन्थ में प्रथम परिच्छेद प्रकाशित :

1. साहित्य : एक दृष्टि, ISBN: 978-93-85309-97-7, सम्पादक- प्रदीप कुमार मौर्य, कला प्रकाशन, B. 33/33, A-1, न्यू साकेत कालेनी, बी.एच.यू., वाराणसी-05

   "प्रेमचन्द का कथा साहित्य और जातीय अस्मिता"
2. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास : कुछ साक्ष्य, ISBN: 978-93-84817-35-0, सम्पादक- पवन कुमार सिंह, वीर बहादुर पब्लिकेशन, साउथ सिटी, रायबरेली रोड, लखनऊ- 226025

   "विवेकी राय के उपन्यासों में अभिव्यक्त ग्राम जीवन"

(ग) आधुनिक विद्या संकाय

प्रो. जम्पा समतेन - संकायाध्यक्ष

(I) समाजशास्त्र विभाग

(1) प्रो. जम्पा समतेन - प्रोफेसर (तिब्बती इतिहास)
(2) प्रो. देवराज सिंह - प्रोफेसर (अर्थशास्त्र) एवं कुलसचिव (15.11.2016 तक)
(3) डॉ. कौशलेश सिंह - एसोशिएट प्रोफेसर (एशिया का इतिहास) एवं विभागाध्यक्ष
(4) डॉ. उमेश चन्द्र सिंह - एसोशिएट प्रोफेसर (एशिया का इतिहास)
(5) डॉ. एम.पी.एस. चन्देल - एसोशिएट प्रोफेसर (राजनीतिशास्त्र)
(6) डॉ. अमित मिश्र - एसिस्टेंट प्रोफेसर (राजनीतिशास्त्र)
(7) श्री उग्येन - एसिस्टेंट प्रोफेसर (तिब्बती इतिहास)
(8) डॉ. जे.बी. सिंह - अतिथि प्राध्यापक (अर्थशास्त्र)
(9) डॉ. वीरेन्द्र सिंह - अतिथि प्राध्यापक (अर्थशास्त्र)

शैक्षणिक गतिविधियाँ-

दिनांक 14 फरवरी से 4 मार्च 2017, सामाजिक विज्ञान विभाग द्वारा विश्वविद्यालयीय छात्र-छात्राओं के लिए मानवीय अनुभव के चित्रण एवं बोध हेतु इथ्नोग्राफी एवं फिलोलॉजिकल एप्रोच – एक शोध प्रविधि पर लघु अवधि कोर्स का आयोजन किया गया। Carteton Antioch Buddhist Studies, USA के अन्थ्रोपालॉजी प्रशिक्षक डॉ. जेफ्री डब्लू. चूपचीक ने यह कोर्स संचालित किया।

प्रो. जम्पा सम्तेन - प्रकाशित शोधपत्र एवं प्रस्तुतियाँ-

1. लघुसंवरतन्त्र एवं अन्य बौद्ध महायोगतन्त्र में निरूपित गुह्य मुद्रा – छोमक, (अंग्रेजी में) यह पत्र चीनी एवं तिब्बती तान्त्रिक बौद्ध धर्म पर अन्तराष्ट्रिय सम्मेलन में प्रस्तुत किया गया तथा दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध योजना की धीः पत्रिका (ISSN NO 2395-1524, पृ.25-40) के 57वें अंक में प्रकाशित है।
2. दक्षिण कोरिया में दिनांक 2 दिसम्बर 2016 में Dungguk University के तिब्बती बौद्ध ग्रन्थ अनुवाद संस्थान द्वारा आयोजित अन्तराष्ट्रिय सम्मेलन में Mahavyutpatti : A Renewal of Classic in Translating Tibetan Buddhist Canon पर प्रस्तुति।
3. परम पावन 14वें दलाई लामा और नालन्दा परम्परा, परम पावन के चरित, रचनाओं एवं विचारों पर तिब्बती विद्वानों के लेख (तिब्बती में), परम पावन के प्रति आभाराभिव्यक्ति आयोजक समिति द्वारा प्रकाशित, ISBN 978-43-848-39-94-9 पृ. 151-158

सामाजिक विज्ञान विभागीय सदस्यों द्वारा प्रकाशित पुस्तक-

तिब्बती इतिहास के विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों के लिए उपयोगी तिब्बती संवत् एवं ईसवी संवत् का मिलान, लेखक – प्रो. जम्पा सम्तेन, लाईब्रेरी ऑफ टिबेटन वर्क एण्ड आरकाइब, धर्मशाला 2016, ISBN 978-93-83441-98-3

घ) शिल्प-विद्या संकाय

प्रो. लोब्संग तेन्जिन - संकायाध्यक्ष

(I) तिब्बती चित्रकला विभाग

(II) तिब्बती काष्ठकला विभाग

(1) श्री जिग्मे	-	एसिस्टेंट प्रोफेसर (चित्रकला)
(2) श्री बुचुंग	-	अतिथि प्राध्यापक (काष्ठकला)
(3) सुश्री सुचिता शर्मा	-	अतिथि प्राध्यापिका (इतिहास एवं सौन्दर्यशास्त्र)
(4) श्री देछेन दोर्जे	-	अतिथि प्राध्यापक (भोट साहित्य)
(5) श्री कुंगा ञिङपो	-	अतिथि प्राध्यापक (चित्रकला)
(6) लोप्सङ् शेरब	-	अतिथि प्राध्यापक (चित्रकला)
(7) तेन्जिन जोर्देन	-	अतिथि प्राध्यापक (काष्ठकला)

क. तिब्बती चित्रकला विभाग

इस विभाग का उद्देश्य है- महत्त्वाकांक्षी विद्यार्थियों को तिब्बती पटचित्र निर्माण के साथ बौद्ध दर्शन, चित्रकला-इतिहास, हस्तकला-दर्शन एवं इतिहास, भारतीय एवं पाश्चात्य कला, इतिहास और सौन्दर्यशास्त्र, तिब्बती भाषा एवं साहित्य, हिन्दी व अंग्रेजी का ज्ञान देना। विद्यार्थियों को हमें अपने पूर्वजों से प्राप्त चित्रलेखन कला की धरोहर तथा उसकी तकनीक सिखायी जाती है। रंग-मिश्रण, चित्रलेखन में प्रयुक्त उपकरण आदि सभी विषयों को बारीकी से सिखाया जाता है। शिक्षण के अतिरिक्त विभिन्न शैक्षणिक गतिविधियाँ - ऐतिहासिक स्थलों का भ्रमण, कार्यशाला आदि का आयोजन भी किया जाता है।

शैक्षणिक गतिविधियां -

1. इन्दौर में विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित सम्मेलन एवं प्रदर्शनी - बौद्ध धर्म और तिब्बती संस्कृति, सोवा रिग्पा, भोट ज्योतिष तथा शिल्प विद्या की प्रदर्शनी में विभागीय सदस्यों ने भाग लिया।
2. दिनांक 23 अगस्त से 6 सितम्बर 2016 - शिल्प विद्यासंकाय द्वारा शैक्षणिक भ्रमण में लद्दाख के ऐतिहासिक स्थल का दर्शन कराया गया। विभागीय विद्यार्थियों ने प्राचीन बौद्ध थंका पेन्टिंग, प्राचीन मठ के भित्ति-चित्र आदि का अवलोकन कर अनुभव हासिल किया।
3. पोडुयम व अन्य विविध परम्परागत काष्ठ कृतियों का निर्माण हुआ तथा चित्रकला विभाग ने आठ अर्हन् थंका-पटचित्रों तथा बुद्ध के पटचित्र का नवीनीकरण किया।
4. 19-25 अगस्त 2016 - अतिथि-प्राध्यापिका डॉ सुचिता शर्मा ने भारत कला भवन, बी.एच.यू में लद्दाख, मिस्टिक इमप्रेसन - फोटो प्रदर्शनी का आयोजन किया।
5. 20-21 अगस्त 2016 - प्राचीन इतिहास विभाग - बी.एच.यू, आई, सी.एच,आर नई दिल्ली एवं राष्ट्रिय महिला इतिहासकार संगोष्ठी द्वारा आयोजित इतिहास दृष्टि, इतिहास लेखन एवं इतिहास के स्रोत - नामक राष्ट्रिय सेमिनार तिहास जानने के स्रोत'' शीर्षकीय शोधपत्र प्रस्तुत किया।

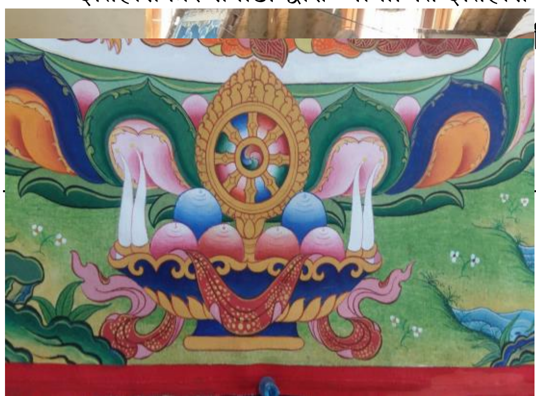

36x25 मिक्स मीडियम
36x 25 दृश्य, आयल मीडियम

24x18 मीडियम, आयल कलर	ल्हुन्डुप, उत्तरमध्यमा, द्वितीय वर्ष द्वारा

यू.जी.सी. टीम के दौरे में लगी चित्रकला प्रदर्शनी की झलक

छात्रों द्वारा लिखित आधुनिक चित्र

ख. तिब्बती काष्ठकला विभाग

तिब्बती पारम्परिक काष्ठकला के साथ बौद्ध दर्शन आदि का ज्ञान प्रदान करने के उद्देश्य से यह विभाग स्थापित है । विद्यार्थियों को विशेषकर तिब्बती परम्परा की काष्ठ कला, उसका इतिहास तथा अवधारणा की शिक्षा दी जाती है । इसके अतिरिक्त भारतीय एवं पाश्चात्य कला का इतिहास, सौन्दर्य शास्त्र तथा भाषाएँ सिखायी जाती हैं । वर्ष 2016-17 में शिक्षण के अतिरिक्त - शैक्षणिक भ्रमण तथा अनेक काष्ठकला कार्यशालाओं के आयोजन आदि विभिन्न शैक्षणिक गतिविधियों में विभागीय सदस्यों तथा छात्रों ने भाग लिया ।

विभागीय गतिविधियाँ -

छात्रों के द्वारा निर्मित थंका

1. ुसज्जित प्राचीन मठो के अवलोकन हेतु लद्दाख का शैक्षणिक भ्रमण किया ।
2. 19 जनवरी 2017, राम छाटपा शिल्प न्यास द्वारा आयोजित सेन्ड सेम्पोजियम में काष्ठकला एवं चित्रकला विभागीय छात्रों ने भाग लिया । जिसमें छात्रों ने रेत में तिब्बत के पोतला राजभवन को उकेरा और इसे प्रथम पाँच

उत्कृष्ट शिल्पों में चयनित किया गया और पुरस्कार दिया गया ।

काष्ठकला के छात्रों तथा विभागीय सदस्यों द्वारा निर्मित विविध योजनाएँ -

1. **पारम्परिक आसन तथा उत्पीठिका**

तिब्बती पारम्परिक आसन - यह विशिष्ट कलाओं से सुसज्जित है तथा इसकी अपनी ही विशेषता है। आसन तथा उत्पीठिका में विभिन्न शुभ चिह्नों को उत्कीर्णित किया गया है। आसन में दो सिंहों के बीच वज्र उत्कीर्ण है, यह महान् गुरुओं के अमर गुणों का प्रतीक है, दो सिंह पराक्रम के द्योतक हैं। आसन के सोपान भी उत्कृष्ट कलाओं से सुसज्जित हैं - सोपान के दोनों भागों में सात रत्न उकेरे गये हैं। ये सात रत्न महागुरुओं के सात आर्यगुणों के प्रतीक हैं। पीठ-फलक में दो दाँत वाले हाथी, घने केशयुक्त सिंह, मुस्कुराता प्रसन्नमुख शिशु, शिरोमणि भूषित नाग, पुष्पधारी मगरमच्छ, चन्द्र-सूर्यधारी गरुड की नक्काशी अत्यन्त रोचकशैली में की गयी है। पीठ-फलक के दो ऊपरी भागों में नोरजिन पटा की नक्काशी है तथा शिखर पर सुकान्तत मणि स्थापित है। उत्पीठिका अपने विशेष लक्षणों से सुसज्जित है। इसमें सभी शुभ चिह्न उत्कीर्ण हैं।

चित्र सं. 1 - पारम्परिक आसन तथा उत्पीठिका

2. दुर्लभ नक्काशीदार कुर्सी और टेबल विशेषकर परम पावन के विराजने हेतु बनाये गये हैं। इसमें पीठ-फलक पर नोरजिन पटा उत्कीर्ण है। पशु की नक्काशी, बुद्ध के प्रति श्रद्धा एवं आदर का द्योतक है। दोनों भुजाओं की ओर चार पशुओं की नक्काशी है जो एकता एवं घनिष्ठता का ज्ञापक है। सामने सिंह एवं फूलों की नक्काशी की गई है। इसी प्रकार आठ शुभ चिह्नों तथा मि-थुन युल्ग्यल की नक्काशी है जो शत्रुओं के प्रति भेदभाव त्यागकर एकता में रहने की शिक्षा देती है।

चित्र सं. 2 - दुर्लभ नक्काशीदार कुर्सी व टेबल

3. काष्ठकला के छात्रों ने विभिन्न योजनाओं पर कार्य किया है। तिब्बती काष्ठकला युक्त फोल्डिंग टेबल जिसमें सजावट हेतु आठ शुभ चिह्न उकेरे गये हैं और भी विभिन्न काष्ठ कलाकृतियाँ - पारम्परिक फ्रेम, काष्ठपात्र (फेमाबो) आदि बनाये गये हैं, जिनका प्रयोग विवाह, लोसर आदि शुभ अवसर पर किया जाता है।

चित्र सं. 3 - काष्ठपात्र - “फेमाबो”

(ङ) सोवा रिग्-पा एवं भोट ज्योतिष संकाय

प्रो. लोब्संग तेन्जिन

(I) सोवा रिग्-पा विभाग

1	डॉ. दोर्जे दमडुल	-	एसोशिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष
2	प्रो. लोब्संग तेन्जिन	-	प्रोफेसर
3	डॉ. टशी दावा	-	सह-शोधकर्ता, ईयू-सीयूटीएस
4	डॉ. पासंग डोलमा	-	अतिथि प्राध्यापक
5	श्री दावा शेर्पा	-	अतिथि प्राध्यापक (संस्कृत)
6	डॉ. छिमे डोलकर	-	बहिरंग चिकित्सा - प्रभारी
7	डॉ. दावा छेरिंग	-	फार्मेसी प्रभारी
8	डॉ. ए.के राय	-	रिसर्च फैकल्टी
9	डॉ. तेन्जिन थुतोब	-	फार्मकॉपिया योजना प्रभारी
10	डॉ. पेम्बा छिरिंग	-	विभागीय पुस्तकालय प्रभारी
11	डॉ. ङवाङ छिरिंग	-	फार्मकॉपिया सहायक
12	डॉ. कर्मा थरछिन	-	फार्मेसी सहायक
13	डॉ. छिरिंग छ्योकी	-	थेरिपिस्ट
14	श्री. वी.के. पाटिल	-	प्रयोगशाला प्राविधिक
15	सुश्री. कल्साङ वाङ्मो	-	विभागीय टी.ए और पी.ए.
16	सुश्री. पेमा साङ्मो	-	औषधिवितरक एवं खजांची
17	श्री. ञिमा छोग्याल	-	ई.डी.एम.जी. तावांग परियोजना - एसोशिएट
18	सुश्री. मञ्जु	-	बहु-उद्देश्य परिचारिका, ई.डी.एम.जी. तावांग
19	श्री. सोनाम फोन्छोक	-	चौकीदार, ई.डी.एम.जी. तावांग
20	सुश्री. रिमो	-	बहु-उद्देश्य परिचारिका, ई.डी.एम.जी. तावांग
21	श्री. साङ्ग्याल वङ्छुक्	-	बहु-उद्देश्य परिचारक, ई.डी.एम.जी. तावांग

शैक्षणिक पृष्ठभूमि

विश्वविद्यालय की स्थापना के चार उद्देश्यों में से प्रथम भोट देश की सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण तथा संवर्धन के अन्तर्गत भाषा, साहित्य, धर्म-दर्शन और कला का संवर्धन एवं संरक्षण भी है। तदनुसार तिब्बत के प्राचीन स्वास्थ्य रक्षा की परम्परा के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए सन् 1993 ई. में विश्वविद्यालय में सोवा रिग्-पा एवं भोट ज्योतिष संकाय की स्थापना की गई थी। सोवा रिग्-पा विभाग की स्थापना के निम्नलिखित उद्देश्य हैं-

(क) तिब्बती चिकित्सा पद्धति का संरक्षण, संवर्धन तथा जनसामान्य एवं बृहत् समाज को स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करना।

(ख) निर्वासित तिब्बती समाज के युवाओं, हिमालयी निवासियों, इच्छुक विदेशी अध्येताओं एवं विद्यार्थियों को इसका अध्ययन कराना, समझाना तथा परम्परागत तिब्बतीय चिकित्सीय ज्ञान को प्रसारित करना।

विभागीय शैक्षणिक गतिविधियाँ-

1. 16-18 अप्रैल 2016 - इन्दौर, मध्य प्रदेश में संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आयोजित बौद्ध महोत्सव में भाग लिया, इस दौरान सोवा रिग्पा को प्रचार-प्रसार करने में सफलता मिली और क्षेत्रीय लोगों ने सराहना की।

2. हार्बरियम प्रोजेक्ट, दुर्लभ तिब्बती चिकित्सा ग्रन्थमाला की विषय-सूची का निवेशीकरण आदि कार्य विभाग द्वारा किया जा रहा है।
3. 25 जुलाई 2017 - स्नातकोत्तर इन्टर्नशिप में सफल छात्र-छात्राओं ने छह महीने विश्वविद्यालय के बाहर एवं छह महीने विश्वविद्यालय के अन्दर में प्राप्त अनुभवों को सोवा रिग्पा के छात्र-छात्राओं तथा विभागीय सदस्यों के साथ साझा किया।
4. 28 अगस्त - 8 सितम्बर 2016 - प्रो. लोब्संग तेन्जिन के दिशानिर्देश एवं संरक्षकत्व में बी.एस.एम.एस के विद्यार्थियों को वनस्पति औषधि विषयक ज्ञान हेतु वार्षिक शैक्षणिक भ्रमण के तहत हिमालयी क्षेत्र तावांग, अरुणाञ्चल का भ्रमण कराया गया।
5. इन्टर्नशिप के विद्यार्थियों को दीर्घायु हास्पिटल एंड सर्जिकल सेन्टर, आशापुर के डॉ. शिवकुमार जायसवाल के सान्निध्य में दो महीने (1 अगस्त से 30 सितम्बर 2016) के कोर्स के लिए भेजा गया।
6. इन्टर्नशिप के विद्यार्थियों को इन्डियन रेलवे कैन्सर इन्स्टीट्यूट, लहरतारा, एक महीने (1 से 31 अक्टूबर 2016) के कोर्स के लिए भेजा गया।
7. 1 सितम्बर 2016 - संयुक्त सचिव, भारत सरकार तथा माननीय कुलपति द्वारा सोवा रिग्पा आर एंड डी तथा थेरेपी विभाग का उद्घाटन किया गया।
8. संस्कृति मन्त्रालय, भारत सरकार के अधीन सी.आई.बी.एस., लेह द्वारा आयोजित कार्यक्रम Continuing of Medical Education CME में प्रो. लोब्संग तेन्जिन एवं डॉ. दोर्जे दमडुल ने भाग लिया।
9. 24 सितम्बर 2016 डॉ. टशी दावा एवं बी.एस.एम.एस. फाइनल के छात्रों ने आधुनिक चिकित्सा सम्बन्धी ज्ञानवर्धन के लिए बी.एच.यू का दौरा किया।
10. नई दिल्ली, इन्दिरा गाँधी नेशनल सेन्टर फॉर आर्ट में संस्कृति मन्त्रालय, भारत सरकार द्वारा आयोजित राष्ट्रिय संस्कृति महोत्सव 15-24 अगस्त 2016 में भाग लिया।
11. माननीय कुलपति के मार्गदर्शन अनुसार विश्वविद्यालय के विजिटिंग प्रो. डॉ. बेरी कार्जिन (बौद्ध भिक्षु, परम पावन के निजी वैद्य) की व्याख्यानमाला का आयोजन सप्ताह पर्यन्त किया गया।
12. डॉ. ल्यू यिन्क्वाँ, बीजिंग कॉलेज के चीनी पारम्परिक चिकित्सक का एक दिवसीय परिसंवाद आयोजित किया गया। जिसमें दक्षिण भारत में अष्टांग की परम्परा, चीनी चिकित्सा पद्धति में नाडी-परीक्षण तथा सोवा रिग्पा का सम्बन्ध, तुनहुङ पाण्डुलिपियों में प्राप्त सोवा रिग्पा एवं तिब्बती ज्योतिष साहित्य पर परिचर्चा हुई।
13. 10 अप्रैल 2017 - सेमिनार-कार्यशाला में प्रो. जेफ्री चूपचिक ने मेडिकल एन्थ्रोपोलॉजी पर प्रस्तुति दी।
14. निदान पर राष्ट्रिय संगोष्ठी का आयोजन 10-12 फरवरी 2017 में किया गया। जिसमें विभिन्न चिकित्सा पद्धतियों के प्रकाण्ड विद्वान् आमन्त्रित किये गये तथा प्रमुख बिन्दुओं पर व्याख्यान एवं चर्चा हुए।

शोध परियोजना

क्र.	नाम	प्रबन्धन	पूर्ण/प्रगति

1	Death and the Self मृत्यु एवं आत्मा - शोध योजना	जॉन टेम्प्लेटन फाउन्डेशन	डाटा संकलन पूर्ण
2	संकलित डाटा के आधार पर सांख्यिकी विश्लेषण	जॉन टेम्प्लेटन फाउन्डेशन	पूर्ण
3	रक्तहीनता पीडित रोगियों पर भोट जड़ी-बूटी का प्रभाव	सी.यू.टी.एस.	प्रगति पर
4	इरिटेबिल बोवेल सिन्ड्राम पर हार्बल का प्रभाव	सी.यू.टी.एस.	प्रगति पर
5	मैनुस्ट्रुअल डिस् आर्डर पर हार्बल का प्रभाव	सी.यू.टी.एस.	प्रगति पर

अन्य उपलब्धियाँ-

युथोक क्लिनिक

युथोक क्लिनिक का मुख्य उद्देश्य सोवा रिग्पा की चिकित्सा पद्धति का संवर्धन करना है तथा प्रायोगिक रूप में इसका ज्ञान एवं अनुभव प्राप्त कराना है। छात्रों ने क्लिनिक अभ्यास में अपनी प्रायोगिक कौशलता प्राप्त करने के लिए भाग लिया। युथोक क्लिनिक में आलोच्य वर्ष में परीक्षण किये गये रोगियों की संख्या -

रोगी	-	7520
बाहरी रोगी	-	6404
विद्यार्थी रोगी	-	1012
विशिष्ट व्यक्ति - रोगी	-	106
सामान्य स्वास्थ्य परीक्षण	-	250

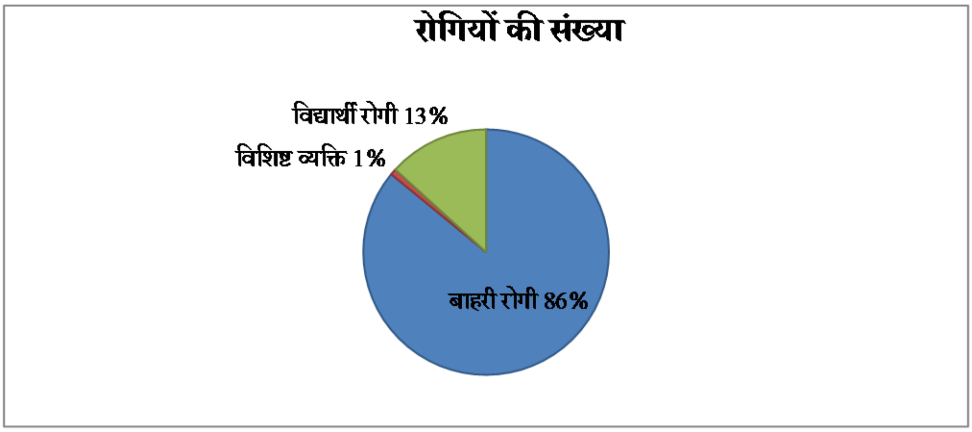

पेथोलॉजी यूनिट

सोवा रिग्पा विभाग का निदान केन्द्र (पेथोलॉजी) विश्वविद्यालय एवं बाहरी रोगियों के रोगों का निदान करता है। यहाँ आधुनिक प्रविधियों के माध्यम से बी.एस.एम.एस. के छात्र रोगों का निदान एवं कक्षा में रोगों के निदान की प्रायोगिक कौशलता को प्राप्त करते हैं। यहाँ टी.बी., हेपाटाइटिस, पीलिया, ब्लडग्रुप, स्टूल टेस्ट, यूरिन टेस्ट इत्यादि के निदान के लिए व्यावहारिक एवं प्रायोगिक शिक्षा दी जाती है। अप्रैल 2016 से मार्च 2017 में बाहरी एवं विश्वविद्यालयीय समेत 372 रोगियों के रोगों का परीक्षण किया गया।

सोवा रिग्पा आर. एण्ड डी. यूनिट

सोवा रिग्पा की दवाओं के मानकीकरण की योजना - इस पर संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के इमोरी विश्वविद्यालय के साथ डॉ टशी दावा ने शोधकार्य किया। इस शैक्षणिक सत्र से सोवा रिग्पा-परम्परा की अभिन्न चिकित्सा चेद्-जोङ (शल्य-शोधन) चिकित्सा यूनिट भी प्रगति पर है। इस सम्बन्ध में रिपोर्ट -

फरवरी-नवम्बर 2016, सिबिल डिजाइन, विभाजन-कार्य, सोवा रिग्पा की प्रयोगशाला का निर्माण, थेरिपी विंग का कार्य किया गया। इसमें दो बडे विंग (विभाग) हैं - थेरिपी तथा सोवा रिग्पा आर एंड डी. और 12 कमरे हैं। थेरिपी विंग में चिकित्सक का कक्ष, फार्मेसी यूनिट, रिसेप्शन क्यूबिकॉल, इनबेसिब थेरेपी कक्ष, 2 नन-इनबेसिब कक्ष, तथा वस्ति-विरेक चिकित्सा के लिए 2 शौच-कक्ष आवंटित हैं। आर एंड डी विंग में फार्मकॉगनोसिस्ट का कार्यालय, लिटेरेरी रिसर्च यूनिट, हार्बेरियम यूनिट, टिस्यू कल्चर रूम, (microbiolgogy lab) अणु-जैविक प्रयोगशाला, फाईटो-रासायनिक प्रयोगशाला एवं औषधीय रासायनिक प्रयोगशाला है।

संस्थापित उपकरण - एक यूनिवर्सल आपरेशन टेबल, एक नासल थेरेपी कुर्सी, एक सिच्-बाथ कुर्सी, 2 सेन्थिटिक मालिश टेबल, एक स्वचालित तैलस्रवण स्टेट के साथ केरालाइट तेल मासज टेबल, दो केमिकल फूमहूट, तथा टेबल सेट भित्ति पर लगाया जाने वाला केबिनेट तथा सभी लैब में रिबोल्विंग स्टूल।

अप्रैल-जून 2016 - प्रस्तावित सोवा रिग्पा के विस्तार तथा विश्वविद्यालय के चिकित्सालय की स्थापना हेतु विस्तृत आकलन किया गया। जिस योजना की लागत 100 करोड़ है। इसमें फार्मेसी यूनिट, चिकित्सालय भवन दो ब्लाक में - 1 चिकित्सालय 1 शैक्षणिक। यह चिकित्सालय सोवा रिग्पा एवं भोट-ज्योतिष विभाग दोनों के लिए डिजाइन किया गया है। यह भवन 2 बेसमेन (तहखाने) सहित दस मंजिलों का है।

मई-जुलाई 2016 - हार्बरियस यूनिट के कार्य के रूप में ग्रीष्मावकाश के दौरान छात्रों ने पिछले 1993 तक के 200 से अधिक हार्बरियस के नमूने संरक्षित किये हैं।

सितम्बर 2016 विभाग ने Camang High-Performance Thin Layer Chromatography System पर श्री शुभेन्दु साहा की प्रस्तुति का आयोजन किया।

जनवरी-फरवरी 2017, समिति द्वारा प्रस्तावित अनुमानित सूचना-दस्तावेज, मेडिकल एजुकेशन एंड हेल्थ केयर विषय के दस्तावेज पर कार्य किया। जिस में 700 पृष्ठ हैं।

फार्मकोपिया यूनिट - उद्देश्य एवं कार्य

1. सामान्य मानक गुणवत्ता प्रदान करना।
2. ओषधि गोलियों के निर्माण में औषधि की गुणवत्ता और प्रयुक्त द्रव्य को सन्तुलित करना।
3. विश्वविद्यालय के सोवा रिग्पा विभाग के नागार्जुन फार्मेसी में एक मानक गुण स्थापित करना।
4. फार्मकोपिया यूनिट ने 40 से अधिक सन्दर्भ ग्रन्थ संकलित किये तथा सोवा रिग्पा में औषध के 60 मोनोग्राफ के एक स्तरीय यूनिट एवं मानदण्ड का सम्पादन किया।
5. वर्ष के अन्त तक स्तरीय फार्मकोपिया मानदण्ड के एक सन्दर्भ ग्रन्थ का सम्पादन हो रहा है।
6. अन्तर्राष्ट्रिय फार्मकोपिया तथा भारतीय आयुर्वेदीय फार्मकोपिया के नियमों का परिशीलन किया जा रहा है, जिससे कि सोवा रिग्पा के फार्मकोपिया में योगदान दिया जा सके।

चेद्-जोङ (शल्य-शोधन) यूनिट

1. विभाग ने प्रसिद्ध डॉ. क्रीष्टोप मेइर की 20 दिवसीय (27 जनवरी-23 फरवरी 2017) फिजिकोथिरेपिस्ट कक्षा संचालित की।
2. डॉ. टशी दावा एवं डॉ. छिमी के निर्देश में कुछ रोगियों के लिए मालिश थेरेपी की गई।
3. चिकित्सक के निर्देश पर रोगियों की कपिङ तथा एक्यूपन्चर चिकित्सा भी की गई है।
4. चिकित्सा ग्रन्थ- "मेनचेद दुद्ची बुमचङ" का सम्पादन किया गया है।

लुडुब (नागार्जुन) फार्मेसी

विभाग के लुडुब फार्मेसी का मुख्य उद्देश्य छात्रों को औषधि निर्माण का व्यावहारिक प्रशिक्षण देना है। छात्रों को यहाँ की कक्षाओं में औषधि तैयार करने का सैद्धान्तिक और व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया जाता है। फार्मेसी की मुख्य गतिविधियाँ इस प्रकार हैं -

वार्षिक स्टॉक का विवरण

1.	हिमालयीय क्षेत्रों से खरीदी गईं जडी-बूटियाँ	(33.050 क्रि.ग्रा.)
2.	स्थानीय बाजार से खरीदी गईं जडी-बूटियाँ	(3854.600 क्रि.ग्रा.) (52 लिटर) (200पेकेट)
3.	संगृहीत एवं भेंट स्वरूप प्राप्त जडी-बूटियाँ	(45.781 कि.ग्रा.)
4.	इ.डी.एम.जी योजना से प्राप्त जडी-बूटियाँ	(40.370 कि.ग्रा.)
5.	विश्वविद्यालयीय वनस्पति उद्यान से संगृहीत जडी-बूटियाँ	(343.302 कि.ग्रा.)

वार्षिक उत्पाद

1.	गोलियाँ	-	652.180 कि.ग्रा.
2.	सीरप (तरल)	-	454.457 कि.ग्रा.
3.	चूर्ण	-	72.286 कि.ग्रा.
4.	टानिक	-	279.240. कि.ग्रा.
5.	अवलेप	-	379.695. कि.ग्रा.
6.	कैप्सूल	-	3.507 कि.ग्रा.
7.	रत्न गुटिका	-	8.588 कि.ग्रा.
8.	प्रायोगिक एवं शोध	-	18.265 कि.ग्रा.
9.	शोधन	-	145.098 कि.ग्रा.

विभागीय पुस्तकालय

1. विभागीय पुस्तकालय ने दो सूचियाँ 1-पोतल छेदुस् सूची 2-अरुरा सिरिस सूची (केवल विभागीय प्रयोग हेतु) प्रकाशित की हैं।
2. तिब्बत के विद्वानों द्वारा लिखित दुर्लभ अनेक चिकित्सीय ग्रन्थों का साफ्टकॉपी (पी.डी.एफ.) संकलन किया, उनमें से कुछ जी.पी.ई.जी. के रूप में हैं।

3. वाग्भट पुस्तकालय की पुस्तक पञ्जिका में 49 से अधिक शीर्षकों को पञ्जीकृत किया गया।

तवांग ई.डी.एम.जी. योजना के परिणाम

तवांग योजना अभी भी प्रारम्भिक चरण में है। सुविधा एवं उपकरण के अभाव एवं मानव शक्ति के अभाव में यह संघर्ष से जूझते हुए भी प्रगतिशील है। हम लोगों ने करीब 50 प्रजातियों की वनस्पतियों को सुरक्षित करने में सफलता प्राप्त की है और अन्य स्थानों की 10 विभिन्न वनस्पतियों को अपनी नर्सरी में लगाया। वर्तमान में हम पर्याप्त मात्रा में जरूरी वनस्पतियों की आपूर्ति फार्मस्यूटिकल यूनिट में करते हैं।

वित्तीय वर्ष 2016-17 में विभाग को दिये गये वनस्पति

1.	9 मार्च 2016, ई.डी.एम.जी. योजना तवांग से दिये गये वनस्पति (खुरमङ, सेरजोम आदि)	करीब 12.600 कि.ग्रा.
2.	25 अप्रैल 2016, ई.डी.एम.जी. योजना तवांग से दिये गये वनस्पति (डितासजिन, लुक्रु मुक्पु आदि)	करीब 4.250 कि.ग्रा.
3.	1 सितम्बर 2016, ई.डी.एम.जी. योजना तवांग से दिये गये वनस्पति (लुक्रु मुक्पु, लुक्पु सेर्पो आदि)	करीब 10.250 कि.ग्रा.
4.	9 नवम्बर 2016, ई.डी.एम.जी. योजना तवांग से दिये गये वनस्पति (गंगछुङ्, लुदुद दोर्जे आदि)	करीब 18.880 कि.ग्रा.
5.	3 सितम्बर 2016, ई.डी.एम.जी. योजना तवांग से दिये गये वनस्पति	करीब 14.65 कि.ग्रा.

कार्याधीन योजनाएँ -

1. चरकसंहिता का संस्कृत से तिब्बती में अनुवाद।
2. भोट हर्बल कम्पाउंड का मैनुस्ट्रुअल डिस्-आर्डर, इरिटेविल बोबेल सिन्ड्राम और एनेमिक रोगियों पर प्रभाव पर शोधकार्य।
3. सोवा रिग्पा विभाग का फार्माकोपिया।

(II) भोट ज्योतिष विभाग

(1) डॉ. टशी छेरिंग (जे) - एसोशिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष
(2) डॉ. जम्पा छोफेल - एसिस्टेंट प्रोफेसर

विभागीय गतिविधियाँ-

क. विनिमय कार्यक्रम

1. 17 जनवरी 2017 - श्री जम्पा छोफेल ने विदेशी छात्रों को भोट ज्योतिष का परिचय तथा उसके प्रयोग के बारे में व्याख्यान दिया।

ख. व्याख्यान

1. 17 मार्च 2017 - श्री जम्पा छोफेल ने विश्वविद्यालय के वरिष्ठ छात्रों के अभियान में वैशाख मास की पहचान पर व्याख्यान दिया।
2. 10-12 फरवरी 2017 - राष्ट्रिय सोवा रिग्पा निदान संगोष्ठी में "स्वरोदय के माध्यम से रोग निदान" पर व्याख्यान दिया।

ग. शोध-कार्य

1. श्री जम्पा छोफेल "वैशाख मास की पहचान" विषय पर शोध कर रहे हैं।

3. शोध विभाग

प्राचीन लुप्तप्राय ग्रन्थों का पुनरुद्धार, सम्पादन तथा उनका संस्कृत, तिब्बती एवं हिन्दी भाषा में अनुवाद एवं प्रकाशन, विश्वविद्यालय का प्रमुख शोध एवं प्रकाशन कार्य है। पुनरुद्धार, अनुवाद, सम्पादन, संकलन एवं प्रकाशन, विश्वविद्यालय की प्रमुख शोध गतिविधियाँ हैं, जो निम्नलिखित विभागों द्वारा संचालित हैं–

1. पुनरुद्धार विभाग

2. अनुवाद विभाग

3. दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध विभाग

4. कोश विभाग

डॉ. भीमराव अम्बेडकर चेयर

रिसर्च प्रोफेसर - प्रो. प्रदीप पी. गोखले

शैक्षिक गतिविधियाँ-

(क) संगोष्ठी, कार्यशाला, परिसंवादों में उपस्थिति

(1) अन्तर्राष्ट्रीयः

1. दिनांक 7-8 नवम्बर 2016 - “बुद्धिज्म तथा फिनॉमिनॉलाजी” विषय पर अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, इंस्टीट्यूट ऑफ सायन्सेस, रशियन अकेडेमी ऑफ सायन्सेस, मास्को द्वारा आयोजित शोधपत्र प्रस्तुत किया।
2. दिनांक 9-10 नवम्बर 2016 - “टिबेटॉलॉजी एण्ड बुद्धॉलॉजी एण्ड द इंटरसेक्शन ऑफ सायन्स एण्ड रिलिजन” विषय पर इन्स्टीट्यूट ऑफ ओरिएंटल सायन्स (रशियन अकेडेमी ऑफ सायन्स) द्वारा आयोजित राउण्ड टेबुल विमर्श में निबंध प्रस्तुत किया।
3. दिनांक 27 दिसम्बर 2016 - “लॉजिक एथिक्स एण्ड एपिक्स : होमेज टू प्रोफेसर विमल कृष्ण मतिलाल” विषय पर आई.सी.पी.आर. बौद्ध अध्ययन केन्द्र, जाधवपुर विश्वविद्यालय (कोलकाता) द्वारा आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में एक सत्र की अध्यक्षता की।
4. दिनांक 17-19 मार्च 2017 - नवनालन्दा महाविहार, नालन्दा द्वारा आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय नालन्दा परिषद् में “पैनेल डिस्कशन” में भाग लिया।

(2) राष्ट्रीयः

1. दिनांक 21-23 दिसम्बर 2016 - आई.सी.पी.आर. द्वारा “प्रमाणसमुच्चय तथा न्यायबिन्दु” विषय पर (कार्यस्थलः अकेडेमिक सेंटर, लखनऊ) में तीन दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित की गई, जिसमें उपस्थित रहा और ‘न्यायबिन्दु’ पर व्याख्यान दिया।

2. दिनांक 12-14 फरवरी 2017 - साँची विश्वविद्यालय के इंडियन फिलॉसॉफिकल कांग्रेस के 91वें अधिवेशन में "दि पॉसिबिलिटी ऑफ सेकुलर बुद्धिज्म" विषय पर व्याख्यान दिया।
3. दिनांक 7 मार्च 2017 - जाधवपुर यूनिवर्सिटी द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी "अप्रोचेस टु द रिअल इन कॉन्टेम्पोररी इंडिया" विषय पर एक सत्र की अध्यक्षता की।

(ख) विशेष व्याख्यानः

1. दिनांक 25 फरवरी 2017 - 'प्राचीन भारतीय वादपद्धति' विषय पर मुंबई यूनिवर्सिटी (फुले अम्बेडकर चेअर) में विशेष व्याख्यान दिया।
2. दिनांक 9 मार्च 2017 - "फिनॉमिनॉलोजी एण्ड केअर" पर मुंबई विश्वविद्यालय, दर्शनशास्त्र विभाग के द्वारा आयोजित अल्पकालिक पाठ्यक्रम के अंतर्गत "माइंडफुलनेस मेडिटेशन एण्ड फिनॉमिनॉलॉजिकल अप्रोच" विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया।
3. दिनांक 14-15 मार्च 2017 - "पातंजलयोग तथा बौद्धयोग में माइंडफुलनेस" विषय पर दो दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई, जिसमें व्याख्यान दिया।

(ग) प्रकाशित लेखः

1. "टुवर्ड्स कन्सेप्ट ऑफ ह्यूमन इमन्सिपेशन इन द कॉन्टेक्स्ट ऑफ इंडियन फिलॉसॉफी" इंडियन फिलॉसॉफिकल क्वार्टरली, भाग-43, नं. 1-4, जनवरी, दिसम्बर 2016, अप्रैल 2017 में प्रकाशित।
2. "मटेरियलिज्म इन इण्डियन फिलॉसॉफी : द डॉक्ट्रिन एण्ड आरग्युमेंट्स" जॉर्ज टुस्के संपादित "इंडियन एपिस्टेमॉलॉजी एण्ड मेटाफिजिक्स" में प्रकाशित, प्रकाशक- ब्लूम्सबरी, यू.एस.ए., 2017.

1. पुनरुद्धार विभाग

उद्देश्यः

तिब्बती भाषा में उपलब्ध प्राचीन भारतीय बौद्ध वाङ्मय को पुनः संस्कृत में उपलब्ध कराने हेतु इस विभाग की स्थापना हुई है। यह शोध विभाग का एक स्वतन्त्र विभाग है। इसका उद्देश्य न केवल शोध हेतु ग्रन्थों का पुनरुद्धार करना है, अपितु लुप्त प्राचीन भारतीय बौद्ध परम्परा को पुनर्जीवित करना भी है। विश्व में यह एकमात्र ऐसा विश्वविद्यालय है, जहाँ पर इस तरह का कार्य किया जा रहा है। इसमें प्राथमिकता के आधार पर आचार्य नागार्जुन, आर्यदेव, शान्तरक्षित, कमलशील एवं आचार्य अतीश आदि के ग्रन्थों पर कार्य हो रहा है।

संस्कृत भाषा में उपलब्ध भारतीय बौद्ध वाङ्मय के तिब्बती भाषा में अनुवाद की 7वीं शताब्दी की परम्परा का अनुसरण करते हुए इस विभाग के विद्वान् आज भी संस्कृत भाषा के विद्वानों के साथ तिब्बती ग्रन्थों का संस्कृत में पुनरुद्धार कर रहे हैं।

प्राचीन समय में तिब्बती अनुवादकों के लिए बौद्ध दर्शन के भारतीय विद्वानों के साथ मिलकर कार्य करना आवश्यक था। इस परम्परा के अनुसार विभाग के तिब्बती विद्वान्, बौद्ध दर्शन के भारतीय विद्वानों के साथ कार्य कर रहे हैं। विभाग के लिए यह गर्व का विषय है कि यहाँ राष्ट्रपति एवं पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित बौद्ध दर्शन के ख्याति-प्राप्त विद्वान् प्रो. रामशंकर त्रिपाठी एवं प्रो. पी.पी. गोखले जी तिब्बती विद्वानों के साथ कार्यरत हैं।

अब तक इस विभाग ने बौद्ध धर्म दर्शन के अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों का पुनरुद्धार, समीक्षात्मक सम्पादन एवं हिन्दी अनुवाद किया है। विभाग द्वारा प्रकाशित अनेक ग्रन्थ उत्तर प्रदेश संस्कृत अकादमी द्वारा पुरस्कृत भी हो चुके हैं।

विभाग में कार्यरत सदस्य एवं पदनाम-

1. भिक्षु ज्ञलछेन नमडोल - एसोशिएट प्रोफेसर (अध्यक्ष - प्रभारी)
2. डॉ. पेन्पा दोर्जे - एसोशिएट प्रोफेसर (अतिरिक्त ग्रन्थालय, प्रभारी)
3. डॉ. लोब्संग दोर्जे - शोध सहायक
4. भिक्षु ङवङ् ग्यलछन नेगी - शोध सहायक

वर्तमान सत्र में विभाग की गतिविधियाँ निम्नवत् हैं-

(1) मुख्य कार्य–

लुप्त बौद्ध संस्कृत ग्रन्थों का तिब्बती भाषा से संस्कृत में पुनरुद्धार, शोध, अन्य बौद्ध ग्रन्थों का अनुवाद, सम्पादन, प्रकाशनार्थ तैयार करना, संगोष्ठी एवं कार्यशाला का आयोजन, अन्य शैक्षणिक कार्य तथा आगन्तुक (Visiting) शोध विद्वानों का सहयोग करना।

(क) वर्ष 2016-2017 सामूहिक शोध-कार्य-

1. **आर्यविमलकीर्तिनिर्देशसूत्र** – भोट संस्करणों के सहयोग से इस ग्रन्थ का संस्कृत मूल एवं भोट-पाठ का सम्पादन अनुवाद विभाग एवं दुर्लभ बौद्ध शोध विभाग के साथ सामूहिक कार्य के रूप में किया जा रहा है। वर्तमान सत्र में ग्रन्थ का दोनों भाषाओं में सम्पादन का कार्य लगभग पूर्ण कर लिया गया है। अब तक ग्रन्थ के 5 परिवर्त क्रमशः धीः शोध पत्रिका में प्रकाशित हो चुके हैं। सम्प्रति 6वां और 7वां परिवर्त धीः शोध-पत्रिका के 56वें अंक में प्रकाशित किया गया है।

2. **आचार्य चन्द्रकीर्ति द्वारा विरचित मध्यमकावतार भाष्य** – इस ग्रन्थ का प्रथम और द्वितीय चित्तोत्पाद मूल संस्कृत पांडुलिपि और तिब्बती संस्करणों के साथ संपादन प्रो. पी.पी. गोखले के नेतृत्व में विभाग के सभी सदस्यों के द्वारा सामूहिक कार्य के रूप में किया जा रहा है। सम्प्रति दोनों भाषाओं में सम्पादन का कार्य लगभग सम्पन्न हो चुका है। इसे भावी धीः पत्रिका में प्रकाशित किया जायेगा।

(ख) कार्याधीन प्रमुख योजनाएँ-

1. **आर्यसर्वबुद्ध-विषयावतार-ज्ञानालोक-अलंकारनाम-महायान-सूत्र** – तिब्बती संस्करण के साथ संस्कृत पांडुलिपि संकलन के समालोचनात्मक संस्करण का कार्य पूर्ण हो गया है। इस ग्रन्थ का कार्य प्रो. पी.पी. गोखले जी के साथ किया जा रहा है। सम्प्रति भूमिका का शोध कार्य अन्तिम चरण पर है।

2. **रत्नकरण्डोद्घाट मध्यमनाम उपदेश** – मध्यमा प्रतिपत् पर आचार्य दीपंकर द्वारा रचित इस ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद, संस्कृत पुनरुद्धार, सम्पादन तथा दो भाषाओं में भूमिका का कार्य पूर्ण हो चुका है।

3. **महाव्युत्पत्ति** – 9वीं शताब्दी में भारतीय आचार्य एवं भोट अनुवादकों द्वारा प्रयुक्त विस्तृत संस्कृत-तिब्बती कोश की शब्दावली के संकलन का कार्य पूर्ण कर लिया गया है तथा अन्य दो तिब्बती संस्करणों के संकलन का कार्य भी पूरा हो चुका है। सम्प्रति संकलित शब्दों के स्रोतों की खोज कर रहे हैं।

4. **प्रहाणपूरकशतवन्दनानाम महायानसूत्र, करण्डव्यूहमहायानसूत्र, प्रतीत्यसमुत्पादसूत्र एवं दशकुशलसूत्र** - इन चारों सूत्रों का पुनरुद्धार, हिन्दी अनुवाद तथा तिब्बती संस्करणों का समालोचनात्मक संपादन कार्य प्रगति पर है।

5. **बोधिपथप्रदीपपञ्जिका** – आचार्य दीपंकर श्रीज्ञान द्वारा रचित इस ग्रन्थ का प्रो. रामशंकर त्रिपाठी जी के साथ हिन्दी अनुवाद का संशोधन कार्य सम्पन्न हुआ। सम्प्रति संस्कृत पुनरुद्धार के द्वितीय प्रारूप की समीक्षा तथा भूमिका लेखन का कार्य प्रगति पर है। यह कार्य अनुवाद विभाग के साथ संयुक्त रूप से किया जा रहा है।

6. **युक्तिषष्टिका** – आचार्य नागार्जुन द्वारा रचित इस ग्रन्थ पर चन्द्रकीर्ति की व्याख्या सहित संस्कृत पुनरुद्धार एवं संशोधन का कार्य दो बार प्रगति पर। सम्प्रति भूमिका लेखन एवं परिशिष्ट सम्बन्धित कार्य हो रहा है।

7. **मध्यमकरत्नप्रदीप** – आचार्य भावविवेक द्वारा रचित इस ग्रन्थ की समीक्षा आदि विविध विषयों पर कार्य हो रहा है। हिन्दी अनुवाद का संशोधन एवं सम्पादन का कार्य प्रो. पी.पी. गोखले जी के साथ किया जा रहा है। मूल ग्रन्थ को कम्प्यूटर में निविष्ट कर तथा भूमिका लेखन आदि का कार्य तैयार किया जा रहा है।

8. **प्रतीत्यसमुत्पादस्तुति टीका** – भोट विद्वान् चङ्क्या रोलपई दोर्जे द्वारा रचित इस ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद एवं संशोधन का कार्य पूर्ण हो चुका है। तिब्बती और हिन्दी भाषा में भूमिका लेखन, मूलग्रन्थ का तथा इन सभी पर संशोधन एवं समीक्षा आदि का कार्य लगभग अन्तिम चरण पर है।

9. **धर्मधातुस्तव** – आचार्य नागार्जुन रचित इस ग्रन्थ के मूल संस्कृत पाण्डुलिपि के कुछ पद्य अनुपलब्ध हैं, उनका संस्कृत में पुनरुद्धार किया जा रहा है। हिन्दी भूमिका लेखन-कार्य प्रगति पर है।

10. **महायानपथक्रम** – आचार्य सुभगवज्र द्वारा रचित इस ग्रन्थ का अन्य तिब्बती संस्करणों से मिलान सहित संपादन का कार्य सम्पन्न हो चुका है और प्रो. पी.पी. गोखले जी के साथ हिन्दी अनुवाद के प्रथम प्रारूप का संशोधन का कार्य भी पूर्ण हो चुका है। संस्कृत पुनरुद्धार के प्रथम प्रारूप का कार्य लगभग पूर्ण हो चुका है।

11. **विनयपारिभाषिक शब्दकोश** – विनय से सम्बद्ध तिब्बती-संस्कृत पारिभाषिक शब्द कोश का कार्य प्रगति पर है। यह कार्य कोश विभाग के साथ संयुक्त रूप से किया जा रहा है।

12. **संक्षिप्तनानादृष्टिविभाजनम्** – आचार्य श्रीमित्र के द्वारा रचित इस ग्रन्थ का प्रो. पी.पी. गोखले के साथ संस्कृत पुनरुद्धार के प्रथम प्रारूप का कार्य सम्पन्न हो चुका है। भूमिका-लेखन का कार्य प्रगति पर है।

13. **अबोधबोधकं नाम प्रकरणम्** – आचार्य नागार्जुन द्वारा रचित इस ग्रन्थ का प्रो. पी.पी. गोखले जी के सहयोग से संस्कृत पुनरुद्धार का कार्य सम्पन्न किया गया है। सम्प्रति अंग्रेजी एवं हिन्दी अनुवाद का कार्य प्रगति पर है।

14. विभाग के सभी सदस्यों के द्वारा परम पावन दलाई लामा जी के निजी कार्यालय की ओर से निर्देशित **'बौद्ध विज्ञान-दर्शन एवं सिद्धान्त समुच्चय'** ग्रन्थ का तिब्बती भाषा से हिन्दी में अनुवाद का प्रथम प्रारूप सम्पन्न किया जा चुका है।

15. पुनरुद्धार विभाग के डॉ. लोब्संग दोर्जे, आचार्य नवांग ग्यालछेन नेगी और अनुवाद विभाग के आचार्य येशे वाङ्दु ने वर्ष 2017 में **'विमलकीर्तिनिर्देशसूत्र'** के तिब्बती संस्करण का अन्य तिब्बती संस्करणों के साथ समालोचनात्मक संपादन का कार्य किया है। साथ ही विशेष स्थानों पर फुटनोट इनपुट करने का कार्य किया।

(ग) सम्मेलन/संगोष्ठी/कार्यशाला के आयोजन में सहभागिता–

1. दिनांक 3 से 6 अक्टूबर, 2016 मूलशास्त्र विभाग के नेतृत्व में **"बौद्ध प्रमाण-दर्शन"** (Philosophy of Buddhist paramana) विषय पर राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया। जिसमें डॉ. लोब्संग दोर्जे ने आयोजन समिति के मुख्य कार्यकर्ता और नवांग ग्यालछेन नेगी ने सहायक कार्यकर्ता के रूप में सहयोग किया। इस सेमिनार में विभाग के सभी सदस्यों ने भाग लिया।
2. आई.सी.पी.आर. समिति, नई दिल्ली के अनुरोध पर विश्वविद्यालय के नेतृत्व में दिनांक 23-24 जनवरी, 2017 को प्रो. जेजिव जङ्, तोम म्योङ यूनिवर्सिटी, कोरिया द्वारा "बुद्धिस्ट हाल एंड इन कोरियन टेम्पल एण्ड इन्पलाइड कल्चर" और "ए स्टडी ऑन द उतोपिया कन्सेप्ट ऑफ मैत्रेय बिलीफ इन्हेरेंट इन दि टेम्पल ग्यूम्साना एण्ड हाइब्रिडटी एण्ड ह्यूमर इन कोरियन बुद्धिस्ट" इन दो विषयों पर व्याख्यान दिया गया। जिसमें, डॉ. पेन्पा दोर्जे और नवांग ग्यालछेन नेगी ने इन कार्यक्रमों की व्यवस्था की देख रेख की।
3. आई.सी.पी.आर. समिति, नई दिल्ली के अनुरोध पर विश्वविद्यालय के नेतृत्व में दिनांक 30 जनवरी, 2017 को Prof. Haiyan Shen द्वारा "The Lotus Sutra and the Buddhist Mummification in China" विषय पर व्याख्यान दिया गया। जिसमें डॉ. पेन्पा दोर्जे और नवांग ग्यालछेन नेगी ने इस कार्यक्रम के व्यवस्था की देख-रेख की।
4. दिनांक 24-28 अप्रैल, 2017 अनुवाद विभाग एवं पुनरुद्धार विभाग के नेतृत्व में **'InDesign'** विषय पर पञ्च दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें सॉफ्टवियर कम्प्यूटर के विशेषज्ञ गेशे लोब्संग मोनलम द्वारा विश्वविद्यालय के अध्यापक, रिसर्च, पी-एच.डी., एम.फिल. तथा अन्य विभाग के कर्मचारियों सहित लगभग 45 लोगों को प्रशिक्षण दिया गया। इस अवसर पर विभाग के सभी सदस्यों ने भाग लिया।
5. दिनांक 3 से 6 अक्टूबर 2016 मूलशास्त्र विभाग के नेतृत्व में **"बौद्ध प्रमाण-दर्शन"** (Philosophy of Buddhist paramana) विषयक राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया। जिसमें डॉ. लोब्संग दोर्जे ने **'बौद्ध प्रमाण शास्त्र के आधारभूत आगमसूत्र पर समीक्षा'** विषयक एक लेख प्रस्तुत किया।

(घ) अन्य शैक्षणिक गतिविधियाँ-

1. डॉ. लोब्संग दोर्जे ने राहुल सांकृत्यायन द्वारा रचित '**तिब्बत में बौद्ध धर्म**' ग्रन्थ का आवश्यकतानुसार सम्पूर्ण पाठ का संपादन किया है। जिसे सम्यक् प्रकाशन द्वारा 2016 में प्रकाशित किया गया।
2. श्री छ़ेवाङ तोपलक द्वारा केन्द्रीय तिब्बती प्रशासन, शिक्षा विभाग, धर्मशाला, (हि. प्र.) को **'10वें पंचेन लामा इरतिनी पर विश्लेषण'** विषय पर शोध निबन्ध (थीसिस) प्रस्तुत किया गया। डॉ. लोबसंग दोर्जे ने इस शोध प्रबन्ध (थीसिस) का मूल्यांकन किया है।
3. आचार्य ङ्लछेन नमडोल ने अक्टूबर 2016 में जे च़ोङ्खापा द्वारा विरचित **'मार्ग का त्रिविध प्राधान्य'** की एक नई टीका लिखकर उसे प्रकाशित किया।
4. दिनांक 17 से 21 अक्टूबर 2016 केन्द्रीय तिब्बती प्रशासनिक शिक्षा विभाग, धर्मशाला के निमन्त्रण पर डॉ. लोब्संग दोर्जे ने **'14वें शब्द निर्धारण योजना'** की कार्यशाला में भाग लिया।

5. डॉ. लोब्संग दोर्जे ने दिनांक 15 से 21 जनवरी 2017 के.ति.अ. विश्वविद्यालय तथा सिंगापुर के राष्ट्रीय विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्त्वावधान में ताग-छङ् लो-च़ावा के **'अठारह विरोधाभास परियोजना'** विषय पर विदेश से आये प्रसिद्ध अनुवादक विद्वानों के साथ सहायक समन्वयक के रूप में कार्य किया।

6. आचार्य ङलछेन नमडोल ने **'दो हेतु सम्भार एवं दो मार्ग उपाय एवं प्रज्ञा'** विषय पर एक विस्तृत निबन्ध लिखकर तम्-छोग पत्रिका, तिब्बती ग्रन्थालय धर्मशाला में प्रकाशित किया।

7. डॉ. लोब्संग दोर्जे का **"बौद्ध निकायों में चार आर्य सत्यों का संक्षिप्त विश्लेषण"** नामक लेख इन्डो टिबेटन स्टडीज, विश्वभारती शान्तिनिकेतन द्वारा प्रकाशित ग्रन्थ 'वॉट इज़ दि बुद्धिस्ट स्टडीज' सन् 2017 में प्रकाशित किया गया। ISBN-9789380852607.

8. वर्ष 2017 डॉ. लोब्संग दोर्जे ने आचार्य नागार्जुन द्वारा रचित **'द्वादशकारनयस्तोत्रम्'**का भोट पाठ भेद, संस्कृत में पुनरुद्धार एवं हिन्दी अनुवाद किया जिसे धीः पत्रिका के 57वें अंक में प्रकाशित किया गया।

9. आचार्य ङलछेन नमडोल ने दुर्लभ बौद्ध शोध विभाग द्वारा धीः पत्रिका के 57वें अंक के प्रकाशन हेतु तिब्बती भाषा में अनूदित निबन्धों के सार का संपादन कार्य किया।

10. आचार्य ङलछेन नमडोल ने वर्ष 2017 में गेलुग कल्याण समिति द्वारा प्रकाशित किये जाने वाले ञनगोन टुलकु सुङरब के **'अनमोल सारवचन संग्रह'** की समीक्षा, सूचीकरण, भूमिका लेखन आदि कार्य तथा प्रकाशन हेतु व्यय धनराशि का भी योगदान दिया।

समितियों के सदस्य –

डॉ. पेन्पा दोर्जे- 1. सदस्य: - प्रकाशन समिति, 2. सदस्यः- कोटेशन ऑपनिंग समिति, 3. सदस्यः- वेबसाइट विकास समिति, 3. सदस्यः- पुस्तकालय समिति ।

डॉ. लोब्संग दोर्जे- 1. अध्यक्षः- भौतिक सत्यापन समिति वर्ष 2015 से, 2. सदस्य:- पुस्तकालय - मूल्य सत्यापन समिति (Price Verification Committee), 3. सदस्य:- आवास आवंटन समिति, 4. सदस्यः- स्टाफ क्वार्टर - रखरखाव समिति (आवास आवंटन समिति)।

नवांग ग्यालछेन नेगी- 1. सदस्यः- अनुसूचित जनजाति एवं अनुसूचित जाति।

2. अनुवाद विभाग

उद्देश्यः

अनुवाद विभाग शोध विभाग का एक महत्त्वपूर्ण अंग है, जो बुद्ध वचन के साथ-साथ उन पर प्राचीन भारतीय बौद्धाचार्यों की टीकाओं तथा भोटाचार्यों द्वारा विरचित ग्रन्थों के अनुवाद एवं भोटपाठ का सम्पादन सहित शोधपरक संदर्भों, इन्डेक्स एवं समीक्षात्मक भूमिका लेखन द्वारा ग्रन्थों के प्रकाशन कार्य में संलग्न है।

इस सातत्य में वज्रच्छेदिकाप्रज्ञापारमिताटीका आदि लगभग नौ ग्रन्थों का संस्कृत भाषा में पुनरुद्धार किया गया तथा अभिसमयालंकारस्य कायव्यवस्थाटीका, मुक्तालतावदानम् (द्वितीय संस्करण), एक दर्जन से अधिक ग्रन्थों का संस्कृत, हिन्दी, भोटभाषा एवं आंग्लभाषा में अनुवाद किया गया।

इस वर्ष विभाग ने पिछले वर्ष से चले आ रहे कुछ महत्त्वपूर्ण एवं बड़े ग्रन्थों जैसे- मृत्युवञ्चना, चरकसंहिता का तिब्बती में अनुवाद, युक्तिषष्ठिकावृत्ति तथा बोधिपथप्रदीपपञ्जिका का संस्कृत पुनरुद्धार व हिन्दी अनुवाद, शीघ्रबोध का सम्पादन एवं अनुवाद, अशोकावदानम्, नागानन्दनाटकम् एवं हरिभट्ट की जातकमाला आदि कार्यों को निर्बाध गति से आगे बढाया। विभाग के सदस्यों ने पुनरुद्धार विभाग के साथ सामूहिक कार्य के रूप में विमलकीर्तिनिर्देशसूत्र का तिब्बती संस्करण के सहयोग से सम्पादन किया । इसके अतिरिक्त महायानसूत्रालंकार का हिन्दी अनुवाद एवं सन्धिनिर्मोचनसूत्र का संस्कृत पुनरुद्धार कार्य भी प्रगति पर है । संस्कृत एवं तिब्बती दोनों भाषाओं में प्राप्त कुछ अति उपयोगी ग्रन्थों के समीक्षात्मक सम्पादन कार्य के अन्तर्गत तत्त्वसंग्रहपञ्जिका पर कार्य चल रहा है ।

इसके अतिरिक्त विभाग, छात्रों को प्रोत्साहित करने के लिए, अनुवाद की प्रक्रिया से अवगत कराने हेतु तथा युवावर्ग में संस्कृत भाषा के प्रति जागरूकता एवं रुचि बढ़ाने हेतु कार्यक्रमों का आयोजन भी करता है । विभाग के सदस्य सन् 1990 से विश्वविद्यालय द्वारा अमेरिका के मैसाच्यूसट् के पाँच कालेजों तथा तस्मानिया विश्वविद्यालय, आस्ट्रेलिया के बीच संचालित संस्कृति आदान-प्रदान कार्यक्रम में सक्रिय योगदान देते आ रहे हैं । वर्तमान में विभाग के सदस्य विभागेतर शैक्षणिक तथा प्रकाशन विभाग के प्रभारी के दायित्व का भी निर्वहन कर रहे हैं ।

विभाग में कार्यरत सदस्य एवं पदनाम-

1. भिक्षु लोब्सङ् नोर्बू शास्त्री - प्रोफेसर (विभागाध्यक्ष)
2. डॉ. पेमा तेनजिन - एसोशिएट प्रोफेसर (प्रभारी- प्रकाशन अनुभाग)
3. डॉ. रामजी सिंह - असिस्टेण्ट प्रोफेसर
4. श्री येशे वङ्दु - शोध सहायक

प्रकाशित ग्रन्थः

1. **मध्यमकावतार भाष्य सहित** (छठा चित्तोत्पाद) : हिन्दी अनुवाद एवं भोटपाठ का सम्पादन, पाद-टिप्पणियाँ, संदर्भ ग्रन्थों की सूची, परिशिष्ट एवं भूमिका सहित (720 पृष्ठ)।
2. **चरक-संहिता** (भोट भाषा में अनुवाद) : द्वितीय भाग का कार्य सम्पन्न हो चुका है और ग्रन्थ को प्रकाशनार्थ प्रेस में भेजा जा चुका है ।

प्रमुख कार्य (प्रगतिपरक) :

1. **मृत्युवञ्चना :** (संस्कृत एवं तिब्बती का सम्पादन सहित हिन्दी एवं अंग्रेजी अनुवाद) ग्रन्थ के भोट एवं संस्कृत संस्करणों का सम्पादन सहित हिन्दी एवं अंग्रेजी अनुवाद कार्य सम्पन्न हो चुका है । इस सत्र में एक शोधपरक भूमिका लेखन तथा परिशिष्ट पर कार्य किया गया। ग्रन्थगत ज्योतिष एवं दार्शनिक आयामों पर कालचक्रतन्त्र के अनुसार समीक्षा प्रगति पर है ।
2. **तत्त्वसंग्रह एवं पञ्जिका :** (आचार्य शान्तरक्षित कृत मूल एवं आचार्य कमलशील कृत पञ्जिका) संस्कृत पाठ का सम्पादन भोटपाठ से मिलाकर किया जा रहा है, जो प्रायः समापन के करीब है ।
3. **वैद्यजीवनम् :** (लोलिम्बराज कृत) भूमिका लेखन सहित ग्रन्थ के अनुवाद का कार्य प्रगति पर है ।
4. **बोधिपथप्रदीपपञ्जिका :** (आचार्य दीपंकर श्रीज्ञान) संस्कृत में पुनरुद्धार का पुनः संशोधन का कार्य समाप्त किया गया है ।

5. **महायानसूत्रालंकार :** (आर्य मैत्रेयनाथ एवं आचार्य असंग) ग्रन्थ के 7-10 अधिकारों का हिन्दी अनुवाद रामशङ्कर त्रिपाठी के सहयोग से सम्पन्न किया गया।
6. **आर्यसन्धिनिर्मोचनसूत्र :** (बुद्धवचन) सूत्र के 7-8 अध्यायों का संस्कृत पुनरुद्धार कार्य किया गया।
7. **बोधिसत्त्व के सैतींस अभ्यास :** (ग्यलसे ङुलछु थोगमेद एवं थुबतेन छोस् क्यि डगस् पा) मूल ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद पूर्ण हो गया है, सम्प्रति टीका का अनुवाद-कार्य प्रगति पर है।
8. **हरिभट्ट-जातकमाला :** आचार्य हरिभट्ट कृत जातकमाला के अन्तर्गत श्रेष्ठिजातक के हिन्दी अनुवाद का संशोधन कार्य किया जा रहा है।
9. **प्रज्ञापारमिता पिण्डार्थ :** (आचार्य दिङ्नाग) इस ग्रन्थ हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषा में अनुवाद कार्य पूरा किया गया है। सम्प्रति टीका के अंग्रेजी अनुवाद का कार्य प्रगति पर है।
10. **सोवा रिगपा में अनुसन्धान पद्धति**: इसका सम्पादन कार्य किया जा रहा है।

सामूहिक शोध कार्य :

1. **विमलकीर्तिनिर्देशसूत्रम् :** विविध भोट संस्करणों के सहयोग से विमलकीर्तिनिर्देशसूत्र का संस्कृत एवं भोट-पाठ का सम्पादन पुनरुद्धार विभाग के साथ सामूहिक कार्य के रूप में किया जा रहा है, जिसमें वर्तमान सत्र में ग्रन्थ का दोनों भाषाओं में सम्पादन पूर्ण कर लिया गया है।अब तक सूत्र के चार अध्यायों का प्रकाशन धी-पत्रिका में हो चुका है।
2. **मध्यमकावतार एवं भाष्य :** (आचार्य चन्द्रकीर्ति) सामूहिक कार्य के रूप में इस ग्रन्थ के प्रथम दो परिच्छेदों की प्राप्त संस्कृत पाण्डुलिपि का भोट अनुवाद के सहयोग से सम्पादन एवं संशोधन, पुनरुद्धार एवं अनुवाद विभाग के सदस्यों के द्वारा प्रोफेसर पी. पी. गोखले के साथ मिलकर किया गया है, जिसका प्रकाशन आगामी धी-पत्रिका में किया जायेगा।

अध्यापन कार्य:

1. डॉ० पेमा तेनजिन, एसोशिएट प्रोफेसर, विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग में उत्तर मध्यमा प्रथम वर्ष के छात्रों के लिए नियमित रूप से अनिवार्य संस्कृत भाषा का अध्यापन कार्य कर रहे हैं।
2. डॉ० रामजी सिंह, सहायक आचार्य, विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग में वैकल्पिक विषय संस्कृत-खवर्ग के अन्तर्गत नियमित रूप से चार कक्षाएँ ले रहे हैं।

शैक्षणिक गतिविधियाँ - सेमिनार, कार्यशाला, लेख-प्रकाशन, व्याख्यान:

1. 3-6 अक्टूबर, 2016 चतुर्दिवसीय विश्वविद्यालय के मूलशास्त्र विभाग द्वारा आयोजित "प्रमाण पर राष्ट्रीय सेमिनार" में सक्रिय सहभागिता की ।
2. 11-13 नवम्बर, 2016 इन्टरनेशनल पालि इन्स्टीट्यूट, सारनाथ द्वारा आयोजित "पालि एवं बुद्धिज्म" नामक विषय पर तृतीय अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार में पेमा तेनजिन ने भाग लिया और शोधपत्र प्रस्तुत किया।
3. 25-27 मार्च, 2017 "शील समाधि एवं प्रज्ञा" नामक विषय पर विश्वविद्यालय के सम्प्रदायशास्त्र विभाग के द्वारा आयोजित त्रि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में सभी सदस्यों ने सक्रिय सहभागिता की।

4. 31 मार्च एवं 1 अप्रैल 2017 “सातवाँ पालि दिवस अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार” नामक विषय पर पालि सोसाइटी ऑफ इण्डिया के द्वारा श्रावस्ती में आयोजित द्वि-दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में पेमा तेनजिन ने भाग लिया तथा शोधपत्र भी प्रस्तुत किया।
5. “बौद्धधर्म एवं बोधिसत्त्व की चर्या” डॉ. पेमा तेनजिन द्वारा कृत निबन्ध (प्रकाशित- धम्मदूत, भाग-82, नवम्बर, 2016 ISSN : 2347-3428) महाबोधि सोसाइटी ऑफ इण्डिया, वाराणसी।
6. श्री येशे वांगदु ने संस्कृति आदान-प्रदान कार्यक्रम के तहत 9, 10 एवं 18 जनवरी, 2017 को तीन भाषणों के मौखिक अनुवाद का कार्य सम्पन्न किया।
7. 24-28 अप्रैल, 2017 विश्वविद्यालय के अनुवाद एवं पुनरुद्धार विभाग के द्वारा “इन-डिजाइन प्रशिक्षण” नामक पाँच-दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया।
8. विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों तथा शैक्षणिक संस्थानों द्वारा आयोजित निम्नलिखित सेमिनारों तथा कार्यशालाओं में विभाग के शोध सहायक श्री येशे वांगदु ने आयोजन समिति के सचिव एवं सदस्य के रूप में पूर्णतया सहयोग दिया, यथा–
   - क. बौद्ध प्रमाण पर राष्ट्रीय संगोष्ठी (3-6 अक्टूबर 2016), केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ।
   - ख. शील, समाधि एवं प्रज्ञा पर राष्ट्रीय सेमिनार (25-27 मार्च, 2017), केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ।

अन्य शैक्षणिक क्रियाकलाप:

1. डॉ० पेमा तेनजिन एवं श्री ग्यलछन नमडोल द्वारा विभागीय सामूहिक कार्य के अन्तर्गत अनूदित “बौद्धविज्ञान दर्शन एवं सिद्धान्तसमुच्चय” नामक ग्रन्थ के 250 पृष्ठों का माननीय कुलपति जी तथा डॉ. धर्मदत्त चतुर्वेदी के साथ नवम्बर 2016 से सम्पादन एवं संशोधन कार्य आरम्भ किया गया।
2. विभागाध्यक्ष ने अपने सहयोगी डॉ० पेमा तेनजिन के साथ मिलकर प्रमाण विषय पर सेमिनार में प्रो० राजाराम शुक्ल के शोध निबन्ध का भोटानुवाद किया और पश्चात् डॉ० पेमा तेनजिन ने उसका सम्पादन तथा सेमिनार में मौखिक अनुवाद का कार्य भी किया।

शोध निर्देशन:

1. विभागाध्यक्ष प्रोफेसर एल. एन. शास्त्री निम्नलिखित दो विदेशी शोध छात्रों के शोध निर्देशक हैं–

   इंगलैण्ड के कोलम्बिया विश्वविद्यालय के शोध (पी-एच.डी.) छात्र श्री विलियम रुबल, जो “एमबोडीड कोग्निशन : पोइट्री, प्रोसेस एण्ड एल्टरनेटिव एपिस्टेमोलजीस” नामक विषय पर शोध कर रहे हैं।

   एमोरी विश्वविद्यालय, अमेरिका के शोध छात्र श्री एलेक्स यिन्नोपोलोस, जो आचार्य धर्मकीर्ति तथा अन्य बौद्ध व्याख्याओं से “सेल्फ कोन्सियसलेस” नामक विषय पर शोध कर रहे हैं।
2. डॉ० पेमा तेनजिन केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय के शोध (पी-एच.डी.) छात्र श्री तेनजिन गेगे के शोध निर्देशक हैं।

समिति-सदस्यता:

1. विभागाध्यक्ष प्रोफेसर एल. एन. शास्त्री बुक सेलेक्शन कमेटी एवं डी.पी.सी. समिति के अध्यक्ष हैं और गेशे लोब्संग मोनलम के साथ चल रहे साफ्टवेयर परियोजना के नोडल ऑफिसर भी हैं।
2. डॉ० पेमा तेनजिन निम्नलिखित समितियों के सदस्य हैं-
(क) आवास आवंटन समिति, (ख) प्राइज वेरिफिकेशन समिति, शान्तरक्षित ग्रन्थालय, (ग) राष्ट्रभाषा-हिन्दी समिति, अध्यक्ष, (घ) पब्लिकेशन समिति, सचिव, पब्लिकेशन विभाग, (ङ) स्वच्छता अभियान समिति, (च) रिगरस ट्रेनिंग कोर्स समिति, (छ) विकलांग सूचना समिति।

3. दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध विभाग

(1) विभाग एवं शैक्षणिक पृष्ठभूमि

क. परिकल्पना

ऐतिहासिक विडम्बना के फलस्वरूप भारत से प्राचीन बौद्ध संस्कृत साहित्य का अधिकांश भाग प्रायः विलुप्त हो चुका था। भारत की इस प्राचीन सम्पदा के कुछ अंश भारत के पड़ोसी देशों विशेषकर नेपाल एवं तिब्बत में पाण्डुलिपियों के रूप में उपलब्ध हुए हैं। परवर्ती समय में इन देशों से अनेक पाण्डुलिपियाँ विश्व के अनेक पुस्तकालयों में पहुँच गयीं। उस विलुप्त साहित्य का विशेषकर बौद्धतन्त्र-साहित्य का पुनरुद्धार, सम्पादन, प्रकाशन तथा शोध की परिकल्पना की दृष्टि से इस विभाग की स्थापना की गयी थी।

ख. स्थापना

दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थों के शोध एवं प्रकाशन की इस अति महत्त्वपूर्ण एवं महत्त्वाकांक्षी योजना को मानव संसाधन विकास मंत्रालय के सहयोग से केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, सारनाथ, वाराणसी में नवम्बर, 1985 से प्रारम्भ किया गया था। प्रारम्भ में इसके कार्य-क्षेत्र, अध्ययन तथा शोध के आयामों के निर्धारण के लिये पाँच महीने का पायलट प्रोजेक्ट संचालित किया गया था। तत्पश्चात् इसकी उपलब्धियों, विषय की महत्ता एवं व्यापकता को दृष्टि में रखते हुए 1 अप्रैल, 1986 से इसे पंचवर्षीय योजना का रूप प्रदान कर संचालित किया गया, जिसे बाद में संस्थान के स्थायी अनुभाग के रूप में स्वीकृत किया गया और सम्प्रति संस्थान के शोध सङ्काय के अन्तर्गत स्थायी विभाग के रूप में कार्य कर रहा है। इस शोध विभाग के प्रथम निदेशक एवं द्रष्टा स्व० प्रो० जगन्नाथ उपाध्याय थे।

ग. विभाग में कार्यरत सदस्य एवं पदनाम-

1. प्रो. कामेश्वरनाथ मिश्र - प्रोफेसर (विभागाध्यक्ष)
2. डॉ. ठाकुरसेन नेगी - एसोशिएट प्रोफेसर
3. डॉ. बनारसी लाल - एसोशिएट प्रोफेसर
4. श्री टी. आर. शाशनी - शोध-सहायक
5. डॉ. छेरिंग डोलकर - शोध-सहायक
6. डॉ. रञ्जन कुमार शर्मा - शोध-सहायक
7. डॉ. विजयराज वज्राचार्य - शोध-सहायक

3. प्रकाशन, सम्पादन एवं शोध कार्य

क. शोध-पत्रिका 'धीः' का प्रकाशन

(i) बौद्धतन्त्र से सम्बन्धित नवीन शोध कार्यों और उससे प्राप्त निष्कर्षों तथा हो रहे शोध कार्यों की नवीनतम सूचनाओं को विश्व के विद्वानों एवं शोधार्थियों तक पहुँचाने के लिये विभाग द्वारा 'धीः' नामक वार्षिक शोध-पत्रिका प्रकाशित की जाती है। विभाग के प्रारम्भ से अद्यावधि यह पत्रिका अविच्छिन्न रूप से प्रकाशित हो रही है। देश-विदेश की अनेक शोध-पत्रिकाओं के साथ सम्प्रति संस्थान के पुस्तकालय में इसका विनिमय भी हो रहा है। इस पत्रिका के प्रायः सभी स्तम्भ एवं शोध-निबन्ध विभागीय सदस्यों द्वारा प्रस्तुत किये जाते हैं। प्रस्तावित आलोच्य वर्ष तक इस शोध-पत्रिका के 56 अङ्क प्रकाशित हो चुके हैं।

(ii) **शोध-पत्रिका 'धीः' के 56वें अंक का प्रकाशन**

शोध-पत्रिका 'धीः' के 56वें अंक का प्रकाशन अपने नियत समय 21 मई, 2016 को बुद्ध-जयन्ती समारोह के अवसर पर किया गया। इस अंक में 2 नवीन स्तोत्र, 8 शोध-निबन्ध तथा 2 लघुग्रन्थ सम्मिलित हैं।

(iii) शोध-पत्रिका 'धीः' के 57वें अंक के लिए सामग्री संकलन, लेखन एवं सम्पादन आदि का कार्य सम्पन्न किया गया।

ख. ग्रन्थों का प्रकाशन

(i) **कालचक्रतन्त्रलघुग्रन्थसंग्रह (भाग-2)**

इसे दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ माला 34 के अन्तर्गत सम्पादित कर प्रकाशित किया गया।

(ii) **दशतत्त्वसंग्रह**

पण्डित क्षितिगर्भ कृत इस लघुग्रन्थ का सम्पादन कर धीः 56वें अंक में प्रकाशित किया गया।

(iii) **अभिषेकविधि**

इस लघुग्रन्थ का सम्पादन कर धीः 56वें अंक में प्रकाशित किया गया।

(iv) **सेकनिर्देश तथा सेकतात्पर्यसंग्रह**

अद्वयवज्र विरचित इन ग्रन्थों का सम्पादन कर 'धीः'56वें अंक में प्रकाशित किया गया।

(v) **चक्रसंवरतन्त्र की परम्परा एवं इतिहास**

भोटाचार्य सोनम सेङ्गे कृत इस ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद धीः 56वें अंक में प्रकाशित किया गया।

ग. ग्रन्थों का सम्पादन-कार्य

(i) **चतुष्पीठतन्त्र (संस्कृत एवं भोट)**

इस ग्रन्थ के परपीठ नामक प्रकरण के चतुर्थ पटल के अवशिष्ट अंश एवं योगपीठ नामक प्रकरण के प्रथम से चतुर्थ पटल के पाठ-निर्णय का कार्य सम्पन्न किया गया।

(ii) **तथागताचिन्त्यगुह्यनिर्देश**

इस ग्रन्थ का सम्पादन-कार्य तथा संस्कृत में अनुपलब्ध अंशों का भोट-पाठ के सहयोग से संस्कृत में पुनरुद्धार किया गया।

(iii) **अद्वयवज्रविरचित सेकतात्पर्यसंग्रह (संस्कृत)**

इस ग्रन्थ का पाठ-निर्णय एवं सम्पादन-कार्य सम्पन्न कर अन्य आवश्यक उद्धरणों एवं सूचनाओं सहित ग्रन्थ को प्रकाशनार्थ तैयार किया गया।

(iv) **तत्त्वज्ञानसंसिद्धिमहासुखप्रकाशिकाटीका (संस्कृत)**

इस ग्रन्थ के संस्कृत की तीन पाण्डुलिपियों तथा प्रकाशित संस्करण से पाठ-संकलन के आधार पर सम्पादित किया गया।

(v) **मण्डलगाथाटिप्पणी**

इस ग्रन्थ का पाठ-मिलान तथा पाठ-निर्णय कार्य सम्पन्न कर धीः 57वें अंक के लिये तैयार किया गया।

(vi) **सेकनिर्देश-पंजिका (संस्कृत)**

शोध-पत्रिका धीः के 57वें अंक में प्रकाशनार्थ सेंट पिटर्ज़वर्ग स्थित नेशलन लाइब्रेरी आफ रशिया से प्राप्त महापण्डित अद्वयवज्रपाद के शिष्य आचार्य रामपाल द्वारा रचित इस पञ्जिका की एकमात्र संस्कृत पाण्डुलिपि का अन्तिम रूप से संशोधन तथा देगे आदि चार भोट-संस्करणों से संकलित एवं सम्पादित, भोट-पाठ से पाठ-मिलान का कार्य और प्रस्तुत ग्रन्थ के वचनों को विभिन्न सूत्र एवं तन्त्र ग्रन्थों तथा बौद्धेतर आगमशास्त्रों से टिप्पणी में निर्देश कर प्रकाशनार्थ तैयार किया गया।

घ. भोट-ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद तथा सम्पादन

(i) **चक्रसंवर की परम्परा एवं इतिहास**

भोटाचार्य सोनम सेङ्गे द्वारा रचित इस ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद सम्पन्न करके शोध-पत्रिका धीः 57वें अंक में प्रकाशित किया गया।

4. विभिन्न पाण्डुलिपियों और भोटानुवाद से पाठ-संकलन का कार्य

(i) **यमारिमण्डलोपयिका**

इस ग्रन्थ का पाठ-मिलान तथा पाठ-निर्णय कार्य किया जा रहा है।

(ii) **संक्षिप्ताभिषेकविधि**

इस ग्रन्थ का पाठ-मिलान तथा संशोधन का कार्य किया जा रहा है।

(iii) **हेरुकाद्यपरमरहस्यतन्त्र**

इस ग्रन्थ का पाठ-मिलान तथा संशोधन का कार्य किया जा रहा है।

(iv) **चक्रसंवराभिसमय**

इस ग्रन्थ का पाठ-मिलान तथा संशोधन का कार्य किया जा रहा है।

(v) **सर्वबुद्धसमायोगडाकिनीजालसंवर**

इस ग्रन्थ का 1 से 4 पटल तक पाठ-मिलान तथा संशोधन का कार्य सम्पन्न किया गया।

(vi) **नित्यकर्मपूजाविधि**

इस ग्रन्थ का पाठ-मिलान तथा संशोधन का कार्य किया जा रहा है।

(vii) **हेवज्रसाधनवज्रप्रदीपटिप्पणीविशुद्धि**

इस ग्रन्थ का सात विभिन्न संस्कृत पाण्डुलिपियों एवं भोट-पाठ से पाठ-संकलन, पाठ-निर्णय तथा संशोधन का कार्य सम्पन्न किया गया।

(viii) **दोहाकोश**

इस ग्रन्थ की दो टीकाओं का विभिन्न पाण्डुलिपियों से पाठ-संकलन कर पाठ संशोधित किया गया।

(ix) **महाप्रत्यङ्गिरातन्त्र (संस्कृत)**

इस ग्रन्थ का 'क' संस्कृत पाण्डुलिपि के फोलियो संख्या 44ए से 53बी तक का पाठ संकलन तथा 'ख' संस्कृत पाण्डुलिपि के फोलियो संख्या 1ए से 11बी, 13ए से 16ए, 19ए से 21बी, 51बी से 54ए तक के छूटे अंशों का लिप्यन्तरण तथा पाठ-संकलन का कार्य सम्पन्न किया गया।

5. कम्प्यूटर में डाटा इनपुट एवं प्रूफ संशोधन

(i) **विमलकीर्तिनिर्देशसूत्र**

इस ग्रन्थ का 6 से 7वें पटल तथा टिप्पणी को इनपुट किया गया।

(ii) **सर्वदुर्गतिपरिशोधनतन्त्र**

इस ग्रन्थ का इनपुट, सेटिंग तथा संशोधन का कार्य सम्पन्न किया गया।

(iii) **खसमनामटीका**

6. विभागीय पुस्तकालय

(i) **वर्ष 1 अप्रैल, 2016 से 31 मार्च, 2017 तक**

दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध विभाग में प्रारम्भ से ही पृथक् रूप से विभागीय पुस्तकालय की स्थापना की गयी है, जिसमें विभाग के शोध को दृष्टि में रखकर बौद्ध, शैव, शाक्त तथा अन्य तन्त्रों से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण तन्त्र साहित्य का संकलन किया जाता है। सम्प्रति ग्रन्थालय में कुल 2351 ग्रन्थ हैं।

(ii) **वर्ष 2016-17में नये ग्रन्थों का चयन तथा क्रय**

विश्वविद्यालय के प्रकाशन विभाग से 12 ग्रन्थ तथा 01 ग्रन्थ अन्य प्रकाशन से भेंट स्वरूप प्राप्त हुए। इन ग्रन्थों का मूल्य ₹ 3495.00 है। इनमें 5 तिब्बती, 2 द्वि-भाषी एवं 6 बहुभाषी ग्रन्थ हैं। आलोच्य वर्ष में भेंट स्वरूप प्राप्त तथा क्रय किये ग्रन्थों को परिग्रहण पञ्जिका में क्रमानुसार क्रम सं० 2339 से 2351 तक में अंकित किया गया है।

7. विभागीय सदस्यों द्वारा प्रकाशित ग्रन्थ एवं लेख

क. ग्रन्थ

(i) **भारत तथा भोटदेश के आचार्यों की जीवनी (कर्ग्युद सम्प्रदाय के आलोक में)**

सम्पादक- बनारसीलाल, प्रका० लोक ज्योति बौद्ध विहार गेमुर, लाहुल-स्पिति, 2016 ।

(ii) **अद्भुतकोश नामक श्री साक्य पीठ की वंश परम्परा का संक्षिप्त जीवन वृत्तान्त**- सम्पादक एवं अनुवादक, डॉ० बनारसीलाल, प्रकाशक सपन ट्रान्सलेशन इन्स्टीच्यूट, देहरादून, 2017, ISBN-93-814244-58-7 ।

ख. लेख

(i) **चक्रसंवरतन्त्र की परम्परा का इतिहास**- डॉ॰ छेरिंग डोलकर, 'धीः' 56, पृ॰ 69-78, ISSN-No. 2395-1524 ।

(ii) **सेकनिर्देश एवं तात्पर्यसंग्रह ग्रन्थों की समीक्षा**- श्री ठिनलेराम शाशनी, 'धीः' 56, पृ॰ 79-132, ISSN-No. 2395-1524 ।

(iii) **अभिषेक विधिः संक्षिप्त परिचय**- डॉ॰ ठाकुरसेन नेगी, 'धीः' 56, पृ॰ 161-213,ISSN-No. 2395-1524 ।

(iv) **दश तत्त्वों का स्वरूप एवं परिचय**- डॉ॰ बनारसीलाल, 'धीः' 56, पृ॰ 15-36, ISSN No. 2395-1524 ।

(v) **बौद्ध साधना पद्धति**- डॉ॰ बनारसीलाल, ताओ ऑफ वज्रयान-शाक्यमुनि तपस फाउंडेशन औरंगाबाद, फरवरी-2017 ।

(vi) **गुरुपद्मसम्भव**- डॉ॰ बनारसीलाल, ताओ ऑफ वज्रयान-शाक्यमुनि तपस फाउंडेशन औरंगाबाद, फरवरी-2017 ।

(vii) **वज्रासनबुद्ध भट्टारक साधन**- डॉ॰ बनारसीलाल, ताओ ऑफ वज्रयान, प्रकाशक- शाक्यमुनि तपस फाउंडेशन, औरंगाबाद, फरवरी-2017।

(viii) **विश्वसंस्कृति का आदर्श बोधिसत्त्वचर्या**- डॉ॰ बनारसीलाल,"जङछम" प्रकाशक- किन्नौर लाहुल-स्पिति बौद्ध सेवा संघ, शिमला, जनवरी-2017 ।

(ix) **बौद्धतन्त्रों का संक्षिप्त परिचय**- डॉ॰ बनारसीलाल,"धर्मदूत" 82वाँ अंक, नवम्बर-2016, महाबोधि सोसायटी ऑफ इंडिया, सारनाथ, 2016, ISSN-2347-3428 ।

8. गोष्ठियों, कार्यशालाओं का आयोजन एवं अन्य आयोजन में सहभागिता

(i) **बुद्धजयन्ती का आयोजन**

विभाग की ओर से दिनांक 21 मई, 2016 को विश्वविद्यालय के प्रांगण में 'बुद्धजयन्ती' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस समारोह के अध्यक्ष प्रो॰ गेशे येशे थपखे जी तथा मुख्य वक्ता प्रो॰ विमलेन्दु एवं प्रो॰ पी॰ पी॰ गोखले जी थे। विद्वानों ने 'बुद्ध, धर्मचक्रप्रवर्तन और लोक कल्याण' विषय पर व्याख्यान प्रदान किये । इस शुभ अवसर पर 'धीः' शोध-पत्रिका के 56वें अंक का बुद्धार्पण किया गया।

9. कार्यशाला तथा गोष्ठियों में सहभागिता

(i) डॉ॰ बनारसीलाल दिनांक 10 से 12 जून, 2016 तक दगपो शदडुप लिंग बौद्ध विहार, काइस, कुल्लु (हि॰प्र॰) द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी 'सत्त्वों का दुःख निवारण तथा बौद्ध धर्म' में सम्मिलित हुए तथा 'भगवान बुद्ध का धर्मचक्रप्रवर्तन और लोक कल्याण' विषय पर उन्होंने निबन्ध प्रस्तुत किया।

(ii) डॉ॰ बनारसीलाल दिनांक 16 से 28 जून, 2016 तक केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ द्वारा हिमाचल बौद्ध छात्र संगठन के सहयोग से हिमाचल प्रदेश के किन्नौर, लाहुल एवं स्पिति के

विभिन्न गाँवों में 'राष्ट्र के उन्नयन में हिमालयी बौद्ध संस्कृति का योगदान' विषय पर आयोजित कार्यशाला में रिसोर्स पर्सन के रूप में सम्मिलित हुए तथा उपर्युक्त विषय के 'विविध आयामों' पर व्याख्यान दिये।

(iii) डॉ० बनारसीलाल ने दिनांक 29.09.2016 को हिमाचल बौद्ध छात्र संगठन द्वारा आयोजित विशेष सभा में 'पत्रिका का प्रकाशन तथा निबन्ध लेखन की प्रविधि' विषय पर व्याख्यान दिया।

(iv) डॉ० बनारसीलाल दिनांक 26.09.2016 से 02.10.2016 तक बौद्ध अध्ययन केन्द्र, आर्य महिला महाविद्यालय, वाराणसी में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा आयोजित 'विपश्यना' पर अन्तर्राष्ट्रीय कार्यशाला में दिनांक 30 सितम्बर, 2016 को 'शमथ एवं विपश्यना साधना-कुछ आवश्यक तथ्य'विषय पर निबन्ध प्रस्तुत किया।

(v) डॉ० बनारसीलाल ने दिनांक 17 से 20 फरवरी, 2017 को शाक्यमुनि तपस फाउंडेशन एवं रेकी इन्फिनिटिव, औरंगाबाद द्वारा आयोजित "वज्रयान दर्शन एवं साधना" विषय पर आयोजित कार्यशाला में भाग लिया तथा "बौद्ध साधना पद्धति और वज्रासन बुद्धभट्टारक साधन" विषयों पर लेख प्रस्तुत किया।

(vi) विभाग के सदस्य दिनांक 3 से 6 अक्टूबर, 2016 तक मूलशास्त्र विभाग केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय द्वारा 'बौद्ध प्रमाण दर्शन' विषय पर आयोजित चार दिवसीय संगोष्ठी में सम्मिलित हुए।

(vii) विभाग के सदस्य दिनांक 25 से 27 मई, 2016 तक शोध विभाग द्वारा आयोजित "Demonstration and discussion on University fonts problems with members of various Research, Publication and Library members" by Ven. Lobsang Monlam कार्यशाला में सम्मिलित हुए।

(viii) विभाग के सदस्यों ने दिनांक 26 से 27 दिसम्बर 2016 तक आधुनिक भाषा विभाग केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ द्वारा आयोजित दो दिवसीय सिम्पोजियम- "इम्पार्टेन्स ऑफ ह्यूमन वैल्यूज एण्ड इथिक्स इन मार्डन टाइम्ज" में भाग लिया।

(ix) विभाग के सदस्यों ने दिनांक 23 से 24 जनवरी, 2017 को आई.सी.पी.आर. फैलो कोरिया के प्रो० जे०जिन०जङ् का 'हाइब्रिडिटि ऑफ बुद्धिस्ट कल्चर एण्ड हिस्टोरिकल डेवलोपमेण्ट ऑफ बुद्धिज्म इन कोरिया में भाग लिया।

(x) डॉ० बनारसीलाल, श्री ठिनलेराम शाशनी एवं डॉ० छेरिंग डोलकर ने दिनांक 25 से 27 मार्च, 2017 तक सम्प्रदायशास्त्र, केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित त्रिदिवसीय अखिल भारतीय संगोष्ठी शील, समाधि और प्रज्ञा में भाग लिया।

10. व्याख्यानों में सहभागिता

(i) विभाग के सदस्य दिनांक 14 से 15 अक्टूबर, 2016 को केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ में डॉ. सोनम थाकचू के द्वारा 'Arrange special section the Methodology' विषय पर दिये गये व्याख्यान में सम्मिलित हुए।

(ii) विभाग के सदस्यों ने दिनांक 21 जनवरी, 2017 को विश्वविद्यालय में आयोजित प्रो० जोसे केवजोन दलाई लामा, प्रो० ऑफ टिबटेन स्टडीज एण्ड कल्चरल स्टडीज, कैलीफर्निया विश्वविद्यालय में "बुद्धिज्म एण्ड साइन्स ऑन द नेचर ऑफ इण्टरेकशन" व्याख्यान में भाग लिया।

(iii) विभाग के सदस्यों ने दिनांक 28 जनवरी, 2017 को दर्शन विभाग, शंघाई विश्वविद्यालय, चीन के प्रो० श्येन का "रिफ्लेक्शनस ऑन द बुद्धिस्ट ममीफिकेशन इन चायना" विषय पर दिये व्याख्यान में भाग लिया।

11. अन्य शैक्षणिक कार्य एवं गतिविधियाँ

(i) डॉ० ठाकुरसेन नेगी ने दिनांक 6 से 7 अप्रैल 2016 धर्म संस्कृति संगम काशी एवं पाली एवं थेरवाद विभाग, सं०सं०वि०वि०, वाराणसी द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार में "विश्व की सुरक्षा एवं शान्ति में सभी धर्मों, विशेषतः बौद्ध धर्म की उपादेयता" विषय पर शोध-निबन्ध प्रस्तुत किया।

(ii) डॉ० बनारसीलाल ने आचार्य चोंखापा विरचित 'गुरुपञ्चाशिका' की शिष्यआशापरिपूरणी नामक व्याख्या का प्रथम दृष्ट्या हिन्दी अनुवाद तथा कम्प्यूटर में इनपुट का कार्य सम्पन्न किया तथा अनुवाद के करीब 30 पृष्ठों का सम्पादन पूर्ण कर 'धीः' हेतु तैयार किया।

(iii) डॉ० बनारसीलाल ने साक्या कालेज, देहरादून के खेनपो सोनम ग्यात्सो के अनुरोध पर 'अद्भुत-कोश' नामक साक्या पीठाधीशों की वंश-परम्परा के संक्षिप्त जीवन-वृत्तान्त ग्रन्थ के अन्तर्गत साक्या महापीठ के 42 महापीठाधीशों का संक्षिप्त जीवन-चरित तथा अध्येषणा का तिब्बती से हिन्दी में अनुवाद एवं उसकी भूमिका सहित प्रकाशनार्थ साक्या कालेज, देहरादून को प्रेषित किया।

(iv) डॉ० बनारसीलाल ने दुदजोम रिनपोछे जिग-ड्रल येशे दोर्जे द्वारा रचित 'दशमी-तिथि का माहात्म्य' ग्रन्थ का तिब्बती से हिन्दी में अनुवाद सम्पन्न किया।

(v) डॉ० विजयराज वज्राचार्य ने 'ज्ञानलोकालंकार' ग्रन्थ का पाठ संशोधन का कार्य पूर्ण किया।

4. कोश विभाग

कुछ दशक पहले, जब महायानी बौद्ध परम्परा के प्रति विश्व जन-मानस में जिज्ञासा उत्पन्न हुई, तब इससे सम्बद्ध वाङ्मय तिब्बती, चीनी आदि प्राच्य भाषाओं तक ही सीमित था। महापण्डित राहुल सांकृत्यायन आदि के प्रयास से कुछ संस्कृत ग्रन्थ पाठकों के सामने आये किन्तु वे बहुत त्रुटिपूर्ण एवं अपूर्ण थे। उक्त स्थिति को देखते हुए तत्कालीन विद्वानों ने एक बृहत्-कार्य योजना तैयार की। जिसका मुख्य लक्ष्य इस प्रकार था-

1. उपलब्ध संस्कृत ग्रन्थों का परिष्कृत संस्करण तैयार करना।
2. विनष्ट संस्कृत ग्रन्थों को उनके तिब्बती अनुवाद की सहायता से पुनः अपने मूल रूप में प्रतिष्ठित करना।
3. प्राच्य भाषाओं में उपलब्ध सामग्रियों का उपयोग करते हुये उच्चस्तरीय शोध कार्य को प्रोत्साहित करना।
4. प्राचीन भाषाओं में उपलब्ध बौद्ध वाङ्मय को अर्वाचीन भाषाओं में सुलभ कराना।

इस महत्त्वाकांक्षी योजना के अन्तर्गत संपादन कार्यों को पूरा करने के लिये विभिन्न प्रकार के कोशों के निर्माण की आवश्यकता का अनुभव किया गया। तदनुसार केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी ने एक बृहत् कोश योजना तैयार की, जिसमें दो प्रकार के कोशों के निर्माण का प्रावधान है, सामान्य और विषयगत कोश। सामान्य

कोश के अन्तर्गत विभाग ने भोट-संस्कृत-कोश पर कार्य शुरू किया, जो सोलह भागों में पूरा हुआ। उपलब्ध भोट-संस्कृत-कोशों में यह सबसे बडा कोश है। भोट-संस्कृत धर्मसंग्रह-कोश एवं भोट-संस्कृत सन्दर्भनिर्देशिका-कोश का भी प्रकाशन हो चुका है तथा भोट-संस्कृत छात्रोपयोगी-कोश के निर्माण का कार्य चल रहा है। विषयगत कोश के रूप में भोट-संस्कृत आयुर्विज्ञान-कोश एवं ज्योतिष-कोश का कार्य भी अन्तिम चरण पर है।

विभाग में कार्यरत सदस्य एवं पदनाम-

1. डॉ. रमेशचन्द्र नेगी	-	प्रधान सम्पादक (कार्यकारी)
2. डॉ. टशी छेरिंग	-	शोध सहायक
3. श्री तेन्जिन सिदोन	-	शोध सहायक
4. डॉ. कर्मा सोनम पाल्मो	-	शोध सहायक
5. श्री तेन्जिन नोर्बू	-	शोध सहायक (संविदा)
6. श्री लोब्संग छोडोन	-	शोध सहायक (संविदा)
7. डॉ. विश्वप्रकाश त्रिपाठी	-	शोध सहायक (संविदा)

निर्माणाधीन योजनाएँ-

1. आयुर्विज्ञान-कोश :

यह कोश, अष्टाङ्गहृदय एवं इसके भोटानूदित तथा कुछ संस्कृत टीकाओं पर आधारित है। साथ ही यह कोश, सामान्य एवं पारिभाषिक तिब्बती पर्याय शब्दों तथा उसके संस्कृत पर्यायों को भी सूचित करता है। कोश अन्तिम चरण में है।

2. ज्योतिष-कोश :

यह कोश ज्योतिष एवं खगोल विज्ञान से सम्बन्धित संस्कृत एवं उसके भोटानूदित ग्रन्थों पर आधारित है और इन ग्रन्थों की सामग्रियों की व्याख्या करता है। पारिभाषिक शब्दों के अर्थों को बताने के लिये शास्त्रीय उद्धरणों को प्रयोग में लिया गया है। इस कोश के सम्पादन का कार्य उपलब्ध भोटी एवं संस्कृत ज्योतिष ग्रन्थों के आधार पर किया गया है। उक्त वर्ष के दौरान कोश अनुभाग के प्रधान सम्पादक (कार्यकारी) के साथ विचार-विमर्श कर पूरे ग्रन्थ का सम्पादन किया गया तथा विषय विशेषज्ञ प्रो. टशी छेरिङ् (ज्योतिष) का सहयोग भी लिया गया है। अब तक क वर्ग से लेकर श (zha) तक के सम्पादन का कार्य हो चुका है।

3. भोट-संस्कृत छात्रोपयोगी-कोश :

यह मुख्यतया बृहत् भोट-संस्कृत कोश पर आधारित एक सामान्य-कोश है। बृहत् भोट-संस्कृत-कोश से शास्त्रीय पदों से सम्बन्धित सामान्य व प्रचलित शब्दों का तथा आधुनिक कोशों से बोल-चाल के शब्दों का चयन किया जाना है। भोट-संस्कृत छात्रोपयोगी कोश में भोटी प्रविष्टियों के संस्कृत पर्याय दिये जाने के कारण, यह एक शब्द-पर्याय कोश है। इसके अतिरिक्त भोटी प्रविष्टियों का अंग्रेजी लिप्यन्तरण और उच्चारण भी इंगित किया जायेगा, जिससे भोट लिपि से अनभिज्ञ छात्र, प्रविष्टि को अंग्रेजी लिप्यन्तरण व उच्चारण के माध्यम से सरलतापूर्वक जान सके। यह कोश तीन चरणों में सम्पन्न होगा। पहले चरण के रूप में बृहत् भोट-संस्कृत कोश से सरल शब्दों का चयन कर उनके संस्कृत पर्यायों को दिया जाना है। दूसरे चरण में अन्य आधुनिक कोशों से बोल-चाल के शब्दों का चयन कर उनके संस्कृत पर्यायों को दिया जाना तथा अन्तिम चरण में संशोधन से सम्बन्धित कार्य होगा। कोश

दो भागों में प्रकाशित होगा। प्रथम भाग के लिये **न वर्ण** तक के भोटीय प्रविष्टियों का अंग्रेजी लिप्यन्तरण और उच्चारण तथा संस्कृत पर्याय देने का कार्य सम्पन्न हो चुका है। वर्तमान में प्रथम भाग के तृतीय चरण के रूप में क वर्ग से लेकर ञ वर्ग तक का कार्य सम्पन्न हो चुका है।

4. भोट-संस्कृत अभिधर्म-कोश :

इस द्विभाषी शब्दकोश में सभी आवश्यक पारिभाषिक प्रविष्टियों का पूर्वापर अभिधर्मों से चयन किया जाना है। पूर्व-अभिधर्म का तात्पर्य आचार्य असंग द्वारा विरचित अभिधर्मसमुच्चय से तथा अपर-अभिधर्म का तात्पर्य आचार्य वसुबन्धुकृत अभिधर्मकोश एवं उसके भाष्य से है। इन दो आधारभूत ग्रन्थों के अतिरिक्त आचार्य यशोमित्रकृत अभिधर्मकोशटीका और जिनपुत्रकृत अभिधर्मसमुच्चयभाष्य एवं अभिधर्मसमुच्चय-व्याख्या आदि से भी आवश्यक पारिभाषिक शब्दों का चयन किया जाना है। इस अवधि में प्रथमचरण के रूप में अभिधर्मसमुच्चय के लक्षण समुच्चय एवं विनिश्चय समुच्चय से प्रविष्टियों के संकलन का कार्य किया गया है।

5. भोट संस्करणों का सन्दर्भ कोश :

भोट संस्करणों का सन्दर्भ-कोश भोट-संस्कृत सन्दर्भ कोश पर आधारित है। इस कोश के माध्यम से भोटानूदित ग्रन्थों के पाँचों संस्करणों (देगे, नर्थङ्, पेकिङ्, चोने और ल्हासा) के सन्दर्भों को दर्शाना है। इस अवधि में लगभग 18 ग्रन्थों के देगे और नर्थङ् संस्करणों का पृष्ठांक सन्दर्भ देने का कार्य हुआ है।

अध्यापन का कार्य :

1. डॉ. कर्मा सोनम पाल्मो ने बी.एफ.ए के तृतीय व द्वितीय वर्षों के छात्रों की अंग्रेजी कक्षाएँ लीं।
2. डॉ. रमेश चन्द्र नेगी ने शिक्षा विनिमय कार्यक्रम के तहत विदेशी छात्रों को विपश्यना का प्रशिक्षण दिया।

अन्य शैक्षणिक गतिविधियाँ :

1. डॉ. टशी छेरिङ् ने माननीय कुलपति जी तथा डॉ धर्मदत्त चतुर्वेदी- अध्यक्ष संस्कृत विभाग के साथ बौद्ध विज्ञान दर्शन नामक ग्रन्थ के द्वितीय भाग के तिब्बती से हिन्दी अनुवाद का सम्पादन एवं संशोधन का कार्य किया।
2. डॉ. कर्मा सोनम पाल्मो ने परम पावन दलाई लामा और थुप्तेन छोड्रोन द्वारा रचित बुद्धिज़्म वन टीचर एण्ड मेनी ट्रेडिशन नामक ग्रन्थ के कुछ अंशों का अंग्रेजी से तिब्बती में अनुवाद किया।
3. डॉ. टशी छेरिङ् ने माननीय कुलपति के कार्यालयी आदेश के अनुसार सुभाषितरत्ननिधि के 120 पात्रों के नामों का पुनरुद्धार एवं सम्पादन किया।
4. डॉ. रमेश चन्द्र नेगी ने परम आदरणीय ग्याल्वाङ ड्रुग्पोन की दीर्घायु प्रार्थना का हिन्दी अनुवाद, लिप्यन्तरण एवं तिब्बती पाठ का सम्पादन किया।
5. डॉ. रमेश चन्द्र नेगी ने के.ति.अ.विश्वविद्यालय एवं हिमालयन बुद्धिस्ट स्टुडेन्ट यूनियन के संयुक्त तत्त्वावधान में राष्ट्र के उन्नयन में हिमालयी बौद्ध संस्कृति का योगदान विषयक राष्ट्रिय कार्यशाला का आयोजन किन्नौर, लाहुल एवं स्पिति में 16-28 जून 2016 को किया।

राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में शोध-पत्र, लेखन आदि का विवरण :

डॉ. रमेश चन्द्र नेगी

1. 19 अप्रैल 2016 - स्टेट संस्कृत कॉलेज, इन्दौर द्वारा आयोजित रिसर्च सेमिनार में बौद्ध धर्म एवं दर्शन पर व्याख्यान दिया।
2. 21 अप्रैल 2016 - होमियोपेथी गुजराती कॉलेज, इन्दौर द्वारा आयोजित सेमिनार में आत्मिक शान्ति एवं विपश्यना पर व्याख्यान दिया।
3. 22 अप्रैल 2016 - प्रेस्टीज इन्जीनियरिंग कॉलेज, इन्दौर द्वारा आयोजित विशेष सेमिनार में विश्व शान्ति हेतु विपश्यना की प्रासंगिकता पर व्याख्यान दिया।
4. 15 मई 2016 - महाबोधि सोसाइटी ऑफ इण्डिया तथा वाराणसी के बुद्धिस्ट आर्गनाइजेशन द्वारा आयोजित सेमिनार में "बौद्ध धर्म तथा संस्कार विधि" विषय पर व्याख्यान दिया।
5. 19 जुलाई 2016 - धर्मचक्रप्रवर्तन दिवस पर धर्मचक्र विहार सारनाथ में "धर्मचक्र" पर व्याख्यान किया।
6. 28 जुलाई 2016 - सिद्धार्थ कालेज ऑफ आर्ट्स मुम्बई द्वारा आयोजित "ए डे फॉर टिबेट" उत्सव पर "समस्त सत्त्वों के कल्याण में बौद्धधर्म की प्रासङ्गिकता" विषय पर व्याख्यान दिया।
7. 26 सितम्बर से 2 अक्टूबर 2016 - आर्य महिला पी.जी. कालेज वाराणसी द्वारा आयोजित "विपश्यना" सेमिनार में मुख्य अतिथि के रूप में भाग लिया और सम्बद्ध विषय पर व्याख्यान दिया।
8. 3-6 अक्टूबर 2016 - स्थानीय मूलशास्त्र विभाग द्वारा आयोजित "बौद्ध प्रमाण" विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रख्यात नैयायिक विद्वान् प्रो. राजाराम शुक्ल के व्याख्यान का तिब्बती में अनुवाद किया।
9. 17-20 फरवरी 2017 - "बुद्ध तपस" फाउण्डेशन औरङ्गाबाद द्वारा आयोजित "वज्रयान दर्शन साधना" विषयक संगोष्ठी में "आनापान सति" एवं "बोधिचित्त एवं बोधिसत्त्व की स्थिति" पर दो व्याख्यान दिए।
10. 10-11 मार्च 2017 - डिकुङ् लपरंग ग्रन्थालय देहरादून द्वारा आयोजित "विपश्यना एवं शमथ साधना" विषय पर अनेक व्याख्यान दिये।
11. 25-27 मार्च 2017 - विश्वविद्यालयीय सम्प्रदाय शास्त्र विभाग द्वारा आयोजित "शील, समाधि और प्रज्ञा" विषयक संगोष्ठी में जैन विद्वान् प्रो. फूलचन्द्र जैन के हिन्दी व्याख्यान का तिब्बती में अनुवाद किया।
12. 3-6 अक्टूबर 2016 - मूलशास्त्र विभाग द्वारा आयोजित बौद्ध प्रमाण संगोष्ठी में "प्रमाण का इतिहास" विषय पर शोधपत्र प्रस्तुत।
13. 3-4 दिसम्बर 2016 - सुधाकर महिला पी.जी. कालेज पाण्डेयपुर द्वारा आयोजित "राष्ट्रीय संगोष्ठी में साधना-प्रासङ्गिता एवं चुनौतियाँ" विषयक शोधपत्र प्रस्तुत।
14. 3-4 मार्च 2017 - राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान लखनऊ द्वारा आयोजित "बौद्ध प्रमाण संगोष्ठी में बौद्ध न्याय" पर शोधपत्र प्रस्तुत।
15. 14 फरवरी 2016 - समान शिक्षा उपत्तन अवधपुर, इन्दरा मऊ, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के सौजन्य से आयोजित संगोष्ठी में अन्तिम सत्र की अध्यक्षता की तथा "राष्ट्रीय एकता एवं साम्प्रदायिक सद्भावना" पर व्याख्यान दिया।

विभागीय अन्य सदस्यों की शैक्षणिक कार्यक्रमों में सहभागिता :

1. 3-6 अक्टूबर 2016 - मूलशास्त्र विभाग द्वारा आयोजित "बौद्ध प्रमाण संगोष्ठी" में सहभागिता।

2. 26 दिसम्बर 2016 - प्रो. हर्बट जे. ब्रन्सटेन, यू.एस.ए. के ''क्वाण्टम भौतिकी तथा संवृति सत्य'' विषय पर व्याख्यान में सहभागिता।
3. 30 जनवरी 2017 - प्रो. हैनशेन के ''रिफ्लेक्शन ऑन बुद्धिस्ट ममिफिकेशन इन चाइना'' विषय पर व्याख्यान में सहभागिता।
4. 22 मार्च 2017 - श्री जमयङ् दोर्जे, प्रख्यात तिब्बती चित्रकारिता विद्वान् की प्रदर्शनी एवं तिब्बती अक्षरों की चित्रकारिता विषयक व्याख्यान में सहभागिता।
5. 25-27 मार्च 2017 - सम्प्रदाय शास्त्र द्वारा आयोजित ''शील, समाधि और प्रज्ञा'' विषयक सेमिनार में सहभागिता।
6. 27-29 मार्च 2017 - डॉ. सोनम पलमो ने इन्दिरा गाँधी नेशनल सेन्टर फॉर दि आर्ट्स नई दिल्ली द्वारा आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में ''नारी एवं बुद्धत्व - महायान की अवधारणा'' विषयक शोधपत्र प्रस्तुत किया।

प्रशासनिक कार्य :

1. डॉ. रमेश चन्द्र नेगी - विश्वविद्यालयीय पुस्तकालय द्वारा आयोजित पुस्तक चयन समिति की बैठकों में सहभागिता।
2. 26 दिसम्बर 2016 - 22 जनवरी 2017 - शैक्षणिक विनिमय कार्यक्रम के तहत डॉ. सोनम पलमो सहायक-समन्वयक के रूप में नियुक्त।

4. शान्तरक्षित ग्रन्थालय

केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय का शान्तरक्षित ग्रन्थालय एक विशिष्ट ग्रन्थालय है । इस ग्रन्थालय में प्राचीन संस्कृत पाण्डुलिपियों के तिब्बती अनुवाद के रूप में भारतीय बौद्ध-वाङ्मय का समृद्ध संग्रह अपने मौलिक रूप में काष्ठोत्कीर्णित (Xylograph), मुद्रित एवं मल्टीमीडिया ग्रंथों के स्वरूप में विद्यमान है । ग्रन्थालय में विद्यमान ग्रन्थों का यह संग्रह विश्वविद्यालय के उद्देश्यों पर आधारित है, जिसे भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय महत्त्व का संग्रह घोषित किया गया है ।

इस ग्रन्थालय का नामकरण प्राचीन नालन्दा महाविहार के प्रसिद्ध भारतीय बौद्ध विद्वान् आचार्य शान्तरक्षित, जिन्होंने बौद्ध धर्म की शिक्षाओं एवं परम्पराओं के प्रसार हेतु 8वीं शताब्दी में तिब्बत की यात्रा की थी, के नाम पर हुआ है ।

इस ग्रन्थालय में संरक्षित बौद्ध, तिब्बती और हिमालयीय-अध्ययन विषयक ग्रन्थों का समृद्ध संग्रह संसार-भर के विद्वानों के आकर्षण का केन्द्र है । बौद्ध-वाङ्मय की दृष्टि से यह अद्वितीय ग्रन्थालय है ।

शान्तरक्षित ग्रन्थालय अत्याधुनिक सूचना तकनीकी सुविधाओं से सम्पन्न है तथा ग्रन्थालय के संपूर्ण संग्रह की कम्प्यूटरीकृत बहुभाषी ग्रन्थसूची के आधार पर ग्रंथालय सेवाएं प्रदान की जाती हैं, यह बहुभाषी सूचीपत्रक (ओपेक) विश्वविद्यालय परिसर के कम्प्यूटर नेटवर्क (LAN) के अतिरिक्त विश्वविद्यालय की बेबसाईट (www.cuts.ac.in) से भी देखा जा सकता है ।

शान्तरक्षित ग्रन्थालय विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अन्तर्विश्वविद्यालयी केन्द्र इनफ्लिब्नेट, अहमदाबाद (www.inflibnet.ac.in) द्वारा संचालित इन्फोनेट (ऑनलाइन जर्नल्स योजना) का सदस्य है, जिसके फलस्वरूप अर्थशास्त्र एवं राजनीति की साप्ताहिकी (www.epw.in) स्प्रिंगर से प्रकाशित (www.link.springer.com) ऑनलाइन जर्नल्स तथा आई. एस. आई. डी. (www.isid.org.in), जे.सी.सी.सी. (www.jccc-ugcinfonet.in), और जेस्टोर (www.jstor.org) डेटाबेस, विश्वविद्यालय परिसर में विश्वविद्यालय के इण्टरनेट नेटवर्क का प्रयोग कर मुफ्त में देखे, पढ़े और डाउनलोड किए जा सकते हैं ।

शान्तरक्षित ग्रन्थालय को टी.बी.आर.सी. (तिब्बतन बुद्धिस्ट रिसोर्स सेण्टर) के समस्त संसाधनों के ऑनलाइन उपयोग की अनुमति भी प्राप्त है ।

मुद्रित और ऑनलाइन प्रलेखों के साथ ही यह ग्रन्थालय माइक्रोफिच, माइक्रोफिल्म और ऑडियो और वीडियो दस्तावेजों के समृद्ध संग्रह पर आधारित सेवाएं प्रदान करता है तथा इस अमूल्य संग्रह का प्रबंधन करता है । ग्रन्थालय तिब्बती साहित्य और संस्कृति के विकास के लिए दलाई लामा फाउंडेशन, धर्मशाला, के साथ जुड़ा हुआ है ।

1. डॉ. पेन्पा दोर्जे - ग्रन्थालय प्रभारी
2. श्री सुधृति विश्वास - कार्यालय सहायक, संविदा

शान्तरक्षित ग्रन्थालय के सात प्रमुख अनुभाग हैं–

1. अवाप्ति, तकनीकी एवं इनफ्लिब्नेट अनुभाग ।

2. सामयिकी, पत्र-पत्रिका एवं सन्दर्भ अनुभाग।
3. तिब्बती अनुभाग।
4. आदान-प्रदान अनुभाग।
5. संचयागार अनुभाग।
6. मल्टीमीडिया अनुभाग।
7. कम्प्यूटर अनुभाग।

1. अवाप्ति एवं तकनीकी अनुभाग

1.1 ग्रन्थ अवाप्ति

(क) ग्रन्थालय के अवाप्ति अनुभाग द्वारा वर्ष 2016-17 में ₹4723682.00 मूल्य के कुल 3244 ग्रन्थों की अवाप्ति कर आगम संख्या 110791 से 114034 तक पंजीकृत किया गया। इनमें से ₹4641025.00 मूल्य के 2996 ग्रंथ खरीदे गये तथा ₹82657.00 मूल्य के 247 ग्रन्थ दानस्वरूप एवं विश्वविद्यालय-प्रकाशनों के विनिमय द्वारा प्राप्त हुए।

ग्रन्थालय संग्रह में इस वर्ष जुड़े ग्रन्थों की भाषा क्रमवार तालिका-

क्र.सं.	भाषा	संख्या
1.	तिब्बती	1381
2.	संस्कृत	20
3.	हिन्दी	615
4.	अंग्रेजी	938
5.	बहुभाषी	281
6.	अन्य	9
	योग	**3244**

(ख) इस वर्ष ग्रन्थालय के संग्रह में 89 मल्टीमीडिया प्रलेख सम्मिलित हुए, जिन्हें आगम सं. 21654 से 21742 तक पंजीकृत किया गया। इनमें से 84 प्रलेख विश्वविद्यालय में आयोजित विभिन्न शैक्षणिक कार्यक्रमों की रिकार्डिंग कर तैयार किये गये है अथवा दान एवं विनिमय द्वारा ग्रंथालय को प्राप्त हुए हैं तथा ₹7597 मूल्य के 5 प्रलेख क्रय किए गए।

वर्ष 2016-17 में अवाप्त ग्रंथों का विवरण

तिब्बती	1381
संस्कृत	20
हिन्दी	615
अंग्रेजी	938

क्रय	2996
दान	247
विनिमय	1
कुल	**3244**

क्रय मूल्य	4641025.00
दान मूल्य	82657.00
कुल मूल्य	**4723682.00**

बहुभाषी	281
अन्य	9
कुल	**3244**

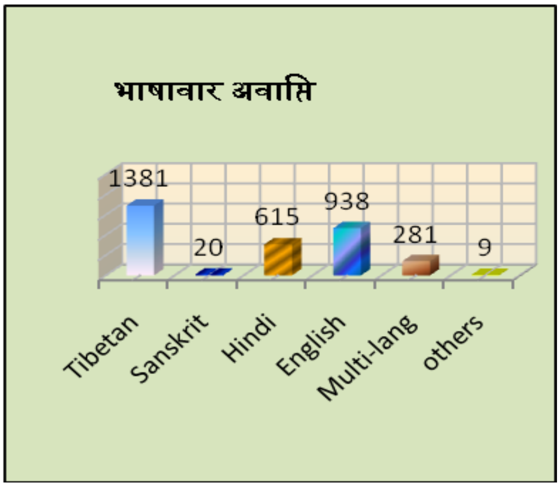

1.2 तकनीकी अनुभाग

वर्ष 2016-17 में अनुभाग द्वारा कुल 1274 ग्रन्थों का - स्लिम लाइब्रेरी साफ्टवेटर का प्रयोग कर - वर्गीकरण एवं सूचीकरण कर सामान्य संचयागार मे स्थानान्तरण किया गया।

डुप्लीकेट चेकिंग एवं स्लिम डेटाबेस में परिग्रहण आदि कार्यों में अवाप्ति अनुभाग की सहायता की गई।

स्लिम डेटाबेस में पुस्तकों के डुप्लीकेट परिग्रहण को सुधारने तथा संपादन का कार्य किया गया।

पाठकों की माँग पर त्वरित पाठक सेवाएं प्रदान की गयीं।

द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति पर आधारित तिब्बती ग्रन्थों की वर्गीकरण पद्धति के अभिलेखन की परियोजना में तकनीकी सहयोग प्रदान किया गया तथा भौगोलिक एकक, क्लासिक ग्रन्थों के वर्गांक निर्धारण आदि कार्यों को सम्पन्न किया गया।

1.3 श्री राजेश कुमार मिश्र, प्रलेखन अधिकारी द्वारा की गयी संगोष्ठी, कार्यशालाओं में सहभागिता एवं अन्य शैक्षणिक कार्य

1. श्री राजेश कुमार मिश्र ने, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी द्वारा दिनांक 18-19 अप्रैल 2016 को आयोजित "बदलते परिवेश में शिक्षा, पुस्तकालय और सूचना प्रौद्योगिकी : चुनौतियां और संभावना" विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी के एक सत्र की अध्यक्षता की, सूचना साक्षरता पर एक लेख पत्र प्रस्तुत कर संगोष्ठी के सभी सत्रों में भाग लिया।
2. श्री राजेश कुमार मिश्र ने 1 जुलाई 2016 को संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के मीडिया सेल द्वारा नेहरू मेमोरियल संग्रहालय और पुस्तकालय, नई दिल्ली में संस्कृति मंत्रालय के संगठनों के नोडल मीडिया अधिकारियों के लिए आयोजित राष्ट्रीय कार्यशाला में भाग लिया।
3. श्री मिश्र ने 5 दिसंबर 2016 को राष्ट्रीय पुस्तकालय मिशन, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा नई दिल्ली में संस्कृति मंत्रालय के संगठनों के नोडल अधिकारियों के लिए आयोजित एनवीएलआई प्रलेख प्रबंधन विषयक कार्यशाला में सहभागिता की।
4. श्री मिश्र ने 23 दिसंबर 2016 को कार्मिक, लोक शिकायत और पेंशन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा नई दिल्ली में नोडल अधिकारियों हेतु आयोजित "आरटीआई ऑनलाइन" वेब पोर्टल के प्रबंधन विषयक कार्यशाला में भाग लिया।
5. श्री मिश्र ने 28 फरवरी 2017 राष्ट्रीय पुस्तकालय मिशन, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा नई दिल्ली में संस्कृति मंत्रालय के संगठनों के नोडल अधिकारियों के लिए आयोजित एनवीएलआई प्रलेख प्रबंधन विषयक कार्यशाला में सहभागिता की।
6. श्री राजेश कुमार मिश्र ने इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र वाराणसी व भारत अध्ययन केन्द्र का.हि.वि.वि. वाराणसी द्वारा दिनांक 24-25 मार्च 2017 को आयोजित "राष्ट्र की अभिलेखीय सम्पदा" विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में "शांतरक्षित ग्रंथालय की अभिलेखीय सम्पदा" पर एक लेख प्रस्तुत कर भाग लिया।
7. श्री मिश्र ने संस्कृति मन्त्रालय की मीडिया सेल, एन.वी.एल.आई. आनलाइन आर.टी.आई. एवं आर.टी.आई. सुओ मोटो डिस्क्लोजर हेतु नोडल अधिकारी का कार्य सम्पादित किया।

1.4 अनुभाग में कार्यरत कर्मचारियों की सूची

1.	श्री राजेश कुमार मिश्र	-	प्रलेखन अधिकारी
2.	श्री शोभनाथ सिंह यादव	-	प्रोफेसनल असिस्टेण्ट (पुनर्नियुक्त)
3.	श्री लोब्संग वांग्दू	-	सेमी प्रोफेसनल असिस्टेण्ट
4.	श्रीमती तेनजिन रिगसंग	-	सेमी प्रोफेसनल असिस्टेण्ट
5.	श्री रविकान्त पाल	-	सेमी प्रोफेसनल असिस्टेण्ट
6.	श्री तेनजिन चुंदक	-	सेमी प्रोफेसनल असिस्टेण्ट (संविदा)
7.	सुश्री पेमा पयांग	-	सेमी प्रोफेसनल असिस्टेण्ट (संविदा)
8.	श्री शिवबचन शर्मा	-	एम टी एस

2. सामयिकी, पत्र-पत्रिका व सन्दर्भ अनुभाग

2.1 अवाप्ति-

आलोच्य वर्ष 2016-17 में अनुभाग द्वारा 26 जर्नल्स, 22 पत्र-पत्रिकाओं एवं न्यूज क्लिपिंग सेवा की अवाप्ति पर ₹3,26,096.00 व्यय किये गये तथा अनुभाग को 8 जर्नल्स दान स्वरूप व 5 जर्नल्स विश्वविद्यालय प्रकाशनों से विनिमय के फलस्वरूप प्राप्त हुए, जिनका विवरण निम्नवत् है-

क्र.सं.	सामयिकी व्यय	क्रय का प्रकार	शीर्षक	भाग	अंक	मूल्य (₹)
1.	विदेशी सामयिकी	क्रय	08	15	23	233523.00
2.	राष्ट्रीय सामयिकी	क्रय	18	32	50	19550.00
3.	विनिमय सामयिकी	विनिमय	5	6	6	00.00
4.	आभार स्वरूप		8	12	12	00.00
5.	सामान्य पत्रिकाएं एवं समाचार पत्र (22)	स्थानीय	22	-	-	31653.00
6.	न्यूज पेपर क्लिपिंग्स	क्रय	1	-	-	41370.00
	योग		**62**	**65**	**91**	**3,26,096.00**

2.2 सेवाएँ-

1. अनुभाग द्वारा अवाप्त किये गये शैक्षणिक जर्नल्स की 50 लूज इश्यूज को जिल्दबन्दी हेतु तैयार किया गया।
2. वर्ष 2016-17 में 505 जर्नल आर्टिकल्स का सूचीकरण कर ग्रन्थालय डेटाबेस में उनका निवेश किया गया, जिसके फलस्वरूप ग्रन्थालय डेटाबेस में जर्नल्स आर्टिकल्स की कुल संख्या 16137 हो गई।
3. वर्तमान सत्र में 1152 अद्यतन प्रेस क्लीपिंग्स की स्कैनिंग की गयी।
4. पाठकों को जर्नल्स आर्टिकल्स की खोज में सहायता तथा संदर्भ सेवाएं प्रदान की गयीं।

2.3 अनुभाग में कार्यरत कर्मचारियों की सूची

1. श्री चन्द्रधर मणि त्रिपाठी - सहायक ग्रंथालयी
2. श्री विजय बहादुर सिंह - सेमी प्रोफेसनल असिस्टेण्ट
3. श्री राजेन्द्र ओझा - बहुउद्देश्यीय कर्मी

3. तिब्बती अनुभाग

शान्तरक्षित ग्रन्थालय के तिब्बती अनुभाग में तिब्बती भाषा के मुद्रित तथा काष्ठोत्कीर्णित ग्रन्थों का समृद्ध संग्रह है जिसमें त्रिपिटक के विभिन्न संस्करण हैं। कुछ प्रमुख त्रिपिटकों का विवरण निम्नवत् हैं-

तिब्बती कंग्युर व तंग्युर

बोन्पो	कंग्युर व तंग्युर
चाइनीज	त्रिपिटक
बर्मीज	त्रिपिटक

त्रिपिटक संग्रह के साथ ही इस अनुभाग में तिब्बत के चार प्रमुख बौद्ध सम्प्रदायों तथा बोन सम्प्रदाय के संग्रह, सोवा रिग्पा, व तिब्बती ज्योतिष के ग्रन्थों का संग्रह है।

3.1 ग्रन्थालय के अवाप्ति अनुभाग द्वारा इस वर्ष क्रय किये गये तिब्बती भाषा के 1381 ग्रन्थों का सूचीकरण एवं ग्रन्थालय डेटाबेस में उनका निवेश किया गया जिसके फलस्वरूप अनुभाग में पोथियों सहित ग्रंथों की कुल संख्या लगभग 33890 हो गई है।

3.2 अनुभाग द्वारा संस्थान के शोध अनुभागों, शोध छात्र-छात्राओं, परियोजनाओं तथा अन्य विद्वानों को उनकी माँग के अनुसार विशेष ग्रन्थालय सेवाएँ प्रदान की गयीं।

3.3 काष्ठोत्कीर्णित ग्रन्थों (Xylographs) की जाँच एवं संरक्षण का कार्य किया गया।

3.4 नये खरीदे गये ग्रंथों की स्लिम डाटाबेस प्रविष्टि की गयी तथा तिब्बती पत्रिकाओं के 2525 लेखों की वैश्लेषिक प्रविष्टि की गयी।

3.5 स्लिम लाइब्रेरी डेटाबेस में पूर्व में निवेशित तिब्बती ग्रंथों की प्रविष्टियों में से लगभग 65 प्रविष्टियों के संशोधन व परिवर्धन का कार्य सम्पादित किया गया।

3.6 295 कम्प्यूटरीकृत पोथी फ्लैग तैयार करके सम्बन्धित ग्रंथों में लगाए गए।

3.7 द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति पर आधारित तिब्बती ग्रंथों के वर्गीकरण पद्धति के अभिलेखन की परियोजना

तिब्बती ग्रंथों के विषयवार वर्गीकरण एवं व्यवस्थापन हेतु द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति (छठा संस्करण) पर आधारित एक उपयुक्त वर्गीकरण पद्धति की आवश्यकता लम्बे समय से महसूस की जा रही थी तथा इस विषय पर कई स्तरों पर कार्य हो रहा था। वर्ष 2016-17 में विषय विशेषज्ञों तथा ग्रंथालय व्यवसायिकों से कई स्तरों पर विचार विमर्श कर प्रस्तावित वर्गीकरण पद्धति के तिब्बती भाषा में अभिलेखन का कार्य प्रारम्भ हुआ। प्रस्तावित वर्गीकरण पद्धति की प्राथमिक सूची सहित, भौगोलिक एककों की सूची, लेखक सूची आदि के संकलन व सम्पादन का कार्य पूर्ण हो चुका है तथा क्लासिक ग्रंथों के वर्गांक निर्धारण का कार्य प्रगति पर है। निकट भविष्य में इस वर्गीकरण पद्धति के तिब्बती अनुभाग में लागू किये जाने की योजना है।

3.8 अनुभाग में कार्यरत कर्मचारियों की सूची

1. श्री सोनम छेवांग - प्रोफेसनल असिस्टेण्ट (अवकाश पर)
2. श्री तेनजिन घेग्ये - संविदा
3. श्री चोंगा छेरिंग - संविदा
4. सुश्री छेवांग डोल्मा - संविदा
5. श्री अनिल यादव - संविदा

4. आदान-प्रदान अनुभाग

ग्रंथालय का आदान प्रदान अनुभाग ग्रंथालय में नए सदस्यों का पंजीकरण, सदस्यता नवीनीकरण, ग्रंथों का आगम, निर्गम, आरक्षण, अदेयता प्रमाण पत्र जारी करना तथा ग्रंथालय उपयोग की सूचनाओं का संग्रहण एवं अन्य सम्बन्धित कार्य सम्पादित करता है।

वित्तीय वर्ष 2016-17 में अनुभाग द्वारा पंजीकृत ग्रंथालय सदस्यों का विवरण निम्नवत् है-

सदस्यता का प्रकार	संख्या
विद्यार्थी	398
कर्मचारी	079
तदर्थ सदस्य	027
अस्थायी सदस्य	027
विभाग	008
योग	**539**

4.1 आलोच्य वर्ष में ग्रन्थालय में 90 नये सदस्यों सहित कुल 539 सदस्यों का पंजीकरण/सदस्यता नवीनीकरण किया गया, जिनमें 398 विद्यार्थी, 79 कर्मचारी, 27 तदर्थ सदस्य एवं 27 अस्थायी सदस्य व 8 विभागीय सदस्य सम्मिलित हैं।

4.2 वर्ष 2016-17 में 90 नये ग्रंथालय सदस्यों का नामांकन किया गया, जिनमें 55 विद्यार्थी, 17 कर्मचारी, 3 अस्थायी सदस्य एवं 15 अतिथि सदस्य सम्मिलित हैं तथा 75 सदस्यों द्वारा उनके निवेदन पर अदेयता प्रमाण-पत्र निर्गत किये गए।

4.3 वर्ष 2016-17 में आदान, प्रदान, आरक्षण आदि से सम्बन्धित 16994 प्रविष्टियों का ग्रन्थालय डेटाबेस में निवेश किया गया।

4.4 वर्ष 2016-17 में कुल 6429 ग्रन्थों का निर्गमन तथा 7423 ग्रंथों की वापसी पाठकों द्वारा की गई।

4.5 वर्ष 2016-17 में कुल 24509 पाठकों ने ग्रन्थालय का उपयोग किया।

4.6 अनुभाग में कार्यरत कर्मचारियों की सूची

1. सुश्री डिकी डोल्मा - सेमी प्रोफेसनल असिस्टेण्ट (संविदा)
2. श्री मुन्ना लाल - बहुउद्देश्यीय कर्मी (पुनर्नियुक्त)

5. संचयागार अनुभाग

भूतल व प्रथम तल पर अवस्थित विशिष्ट संग्रहों सहित सभी मुद्रित ग्रंथों (तिब्बती भाषा के अतिरिक्त) का संचयागार कोलन वर्गीकरण पद्धति के छठे संस्करण के आधार पर विषय क्रम से व्यवस्थित है, यह अनुभाग इस संग्रह पर आधारित सेवाओं को प्रदान करने के साथ-साथ संग्रह के संरक्षण व रखरखाव की व्यवस्था सुनिश्चित करता है।

संचयागार द्वारा प्रदान सेवाओं एवं रख-रखाव के कार्यों का विवरण निम्न तालिका में प्रस्तुत है-

5.1 सेवाएँ-

1.	संचयागार में आए पाठकों की संख्या (माँग पर्चियों की संख्या के आधार पर)	2299
2.	फलक से निकाले गए ग्रन्थों की संख्या (माँग पर्चियों की संख्या के आधार पर)	2810
3.	अध्ययन-कक्ष से फलक पर व्यवस्थित किए गए ग्रन्थों की संख्या	23839
4	विशेष संग्रहों से प्रदान की गई पाठक सेवाएं	286

5.2 संग्रह में आए नए ग्रन्थ तथा संचयागार का रख-रखाव-

1.	संग्रह में आए नए ग्रन्थों की संख्या	998
2.	तकनीकी सुधार के लिए निकाले गए ग्रन्थों की संख्या	31
3.	तकनीकी सुधार के बाद प्राप्त ग्रन्थों की संख्या	31
4.	सेल्फ रेक्टीफिकेसन	Z, N, 2 व R
5.	ट्रांसक्राईब किए गए नए व पुराने ग्रन्थों की संख्या	1229
6.	जिल्दबंदी हेतु निकाले गए ग्रन्थों की संख्या	0
7.	जिल्दबंदी हेतु भेजे गए व जिल्दबंदी करके प्राप्त ग्रंथों की संख्या	0

5.3 आलोच्य वर्ष में अनुभाग द्वारा अर्थशास्त्र (X) समाजशास्त्र (Y) कानून (Z) तथा विदेशी भाषा संग्रह को भूतल संचयागार से प्रथमतल संचयागार में स्थानांतरित किया गया।

5.4 अनुभाग में कार्यरत कर्मचारियों की सूची

1. श्री देवी प्रसाद सिंह - प्रोफेसनल असिस्टेण्ट
2. श्री कृष्णानन्द सिंह - सेमी प्रोफेसनल असिस्टेण्ट
3. श्री जगरनाथ सिंह - सेमी प्रोफेसनल असिस्टेण्ट
5. मु. मुमताज - बहुउद्देश्यीय कर्मी
6. श्री विजय कुमार पटेल - बहुउद्देश्यीय कर्मी

6. मल्टीमीडिया अनुभाग

ग्रन्थालय का मल्टीमीडिया अनुभाग, अत्याधुनिक तकनीकी सुविधाओं से सुसज्जित है। ग्रन्थालय का यह अनुभाग माइक्रोफिल्म, माइक्रोफिस, आडियो/विडियो कैसेट्स, सी.डी., एम.पी.3, एम.पी.4 एवं डी.वी.डी. आदि प्रारूपो में उपलब्ध प्रलेखों का निर्माण, संग्रहण, संवर्धन व संरक्षण करता है तथा इन प्रलेखों पर आधारित पाठक सेवाएँ प्रदान करता है।

ग्रन्थालय मल्टीमीडिया अनुभाग, विश्वविद्यालय के समस्त शैक्षणिक कार्यक्रमों की स्टिल फोटोग्राफी व वीडियोग्राफी कर प्राप्त प्रलेखों का तकनीकि सम्पादन कर उन्हें संग्रह व सेवा के उपयुक्त बनाता है साथ ही ग्रंथालय का मल्टीमीडिया अनुभाग शैक्षणिक उद्देश्य हेतु फोटो कापी, स्कैनिंग, प्रिंटिंग व कॉपिंग की सेवा भी प्रदान करता है। अनुभाग द्वारा देश के सुदूर व दुर्गम स्थानों में उपलब्ध बौद्ध धर्म दर्शन की प्राचीन पाण्डुलिपियों व ग्रंथों के डिजिटाइजेसन का कार्य भी सम्पादित किया जाता है।

6.1. आडिओ वीडियो एवं फोटो प्रलेखन

आलोच्य वर्ष में विश्वविद्यालय में आयोजित निम्नलिखित शैक्षणिक कार्यक्रमों की वीडियो रिकार्डिंग व तकनीकी सम्पादन कर इनके मल्टीमीडिया प्रलेख डी.वी.डी. एवं एमपी-3 प्रारूप में पाठकों की सेवा हेतु अनुभाग के संग्रह में सम्मिलित किए गये-

1. प्रो. पी. कृष्णा द्वारा जिद्दू कृष्णमूर्ति के सत्य की एक समग्र अवधारणा पर 25 मार्च 2016 को दिए गए व्याख्यान की वीडियो रिकार्डिंग का सम्पादन।
2. प्रोफेसर पार्थघोष द्वारा 25 से 28 मार्च 2016 तक आयोजित विज्ञान कार्यशाला की वीडियो रिकार्डिंग का सम्पादन।
3. वज्रभैरवमार्गक्रम पर प्रोफेसर समदोंग रिनपोछे द्वारा 12 से 26 अप्रैल 2016 तक दिए गए प्रवचनों की वीडियो रिकार्डिंग।
4. तिब्बती ग्रंथों के विषयवार वर्गीकरण हेतु वर्गीकरण प्रणाली व वर्गांक निर्धारण के लिए 5 से 6 मई 2016 तक आयोजित कार्यशाला की वीडियो रिकार्डिंग।
5. प्रो. लोबसंग तेनज़िन, प्रमुख, सोवा-रिग्पा विभाग द्वारा मेन्चे दावाई ग्याल्पो पर 9 सितंबर 2016 से सप्ताहांत और छुट्टियों में दिए गए व्याख्यान की वीडियो रिकार्डिंग।
6. श्री के के पांडे (बरेली डिस्ट्रिक्ट फुटबॉल एसोसिएशन के उपाध्यक्ष, उत्तर प्रदेश रेफरी कमेटी के प्रमुख) और श्री मून रॉबिन्सन (बरेली जिला फुटबॉल एसोसिएशन के अध्यक्ष और पूर्व राष्ट्रीय रेफ़री) द्वारा 15 से 17 सितंबर 2016 तक फुटबॉल पर आयोजित कार्यशाला की वीडियो रिकार्डिंग।
7. सुश्री कैथी एंडर्सन द्वारा 28 सितंबर 2016 को "नेतृत्व" पर आयोजित कार्यशाला की वीडियो रिकार्डिंग।
8. बौद्ध प्रमाण और ज्ञानमीमांसा के दर्शन पर 3 से 6 अक्टूबर 2016 तक राष्ट्रीय संगोष्ठी की वीडियो रिकार्डिंग।
9. विश्वविद्यालय के छात्रों हेतु 9 से 11 अक्टूबर 2016 तक के रिग्लब संपादकीय बोर्ड द्वारा आयोजित तिब्बती साहित्य पर कार्यशाला की वीडियो रिकार्डिंग।
10. भारत-म्यांमार-थाईलैंड मैत्री मोटर कार रैली 2016 के 15 -16 नवंबर 2016 को संस्थान प्रवास में आयोजित कार्यक्रम व प्रस्थान की वीडियो रिकार्डिंग।
11. अमेरिका के प्रोफेसर हर्बर्ट जे बर्नस्टेन द्वारा भौतिकी, क्वांटम भौतिकी और परम्परागत यथार्थ पर 26 दिसंबर 2016 को आयोजित वार्ता की वीडियो रिकार्डिंग।
12. आधुनिक समय में मानवीय मूल्य और नैतिकता के महत्व पर दिनांक 26 से 27 दिसंबर 2016 तक आयोजित संगोष्ठी की वीडियो रिकार्डिंग।
13. तात्संग लोत्सावा और जे चोंखपा पर 17 जनवरी 2017 को आयोजित संवाद की वीडियो रिकार्डिंग।
14. बौद्ध धर्म और विज्ञान में संवाद की प्रकृति विषय पर संयुक्त राज्य अमेरिका के प्रोफेसर जोसे इग्नासिया कैबेज़न द्वारा 21 जनवरी 2017 को दिए गए व्याख्यान की वीडियो रिकार्डिंग।
15. प्रोफेसर जे जिं जांग द्वारा कोरियाई मंदिरों में बौद्ध सभागारों और चित्रों में अंतर्निहित बौद्ध संस्कृति विषय पर 23 जनवरी 2017 को आयोजित व्याख्यान की वीडियो रिकार्डिंग।

16. प्रोफेसर जे जिं जांग द्वारा कोरियाई बौद्ध मंदिर क्युंसंस और कोरियाई बौद्ध संस्कृति में मैत्रेय आस्था तथा परिहास की अवधारणा पर 24 जनवरी 2017 को आयोजित व्याख्यान की वीडियो रिकार्डिंग।
17. डॉ. बैरी केज़िन द्वारा 25 से 29 जनवरी 2017 तक विभेदक निदान, मानव एनाटॉमी, मानव फिजियोलॉजी, इम्यूनोलॉजी और क्लिनिकल मेडिसिन पर आयोजित व्याख्यान शृंखला की वीडियो रिकार्डिंग।
18. प्रोफेसर हायशन द्वारा चीन में बौद्ध शव परिरक्षण पर 30 जनवरी 2017 को आयोजित व्याख्यान की वीडियो रिकार्डिंग।
19. निदान विषय पर 10 से 12 फरवरी 2017 तक आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी की वीडियो रिकार्डिंग।
20. 15 से 21 फरवरी 2017 तक 11वें तिब्बती कॉलेज छात्र सम्मेलन के उद्घाटन और समापन सत्र की वीडियो रिकार्डिंग।
21. डॉ. क्रिस्टोफ मीयर द्वारा भौतिक चिकित्सा पर 30 जनवरी से 23 फरवरी 2017 तक आयोजित कार्यशाला की वीडियो रिकार्डिंग।
22. प्रोफेसर जेफरी चुपचिक द्वारा नृविज्ञान अनुसंधान क्रियाविधि पर 8 से 24 मार्च 2017 तक आयोजित कार्यशाला की वीडियो रिकार्डिंग।
23. श्री जम्यंग दोर्जे चक्रीशर द्वारा 22 मार्च 2017 को तिब्बती सुलेख कला पर आयोजित प्रदर्शनी और व्याख्यान की वीडियो रिकार्डिंग।
24. तिब्बती बौद्ध धर्म के चार प्रमुख संप्रदायों के अनुसार, शील, समाधि और प्रज्ञा पर 25 से 27 मार्च 2017 तक आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी की वीडियो रिकार्डिंग।
25. प्रोफेसर समदोंग रिनपोछे द्वारा अखू शेरब ग्यात्सो द्वारा रचित गुह्यसमाज तंत्र नामक ग्रंथ पर 16 से 30 मार्च 2017 तक आयोजित व्याख्यान की वीडियो रिकार्डिंग।
26. प्रोफेसर लियू यिंगहुआ द्वारा तिब्बती और चीनी सोवा रिग्पा के तुलनात्मक अध्ययन पर 31 मार्च 2017 को आयोजित व्याख्यान की वीडियो रिकार्डिंग।

इनके अतिरिक्त भी विश्वविद्यालय में होने वाले विभिन्न विषयों पर व्याख्यान तथा अन्य बाहर से आने वाले विशिष्ट विद्वानों द्वारा समय-समय पर दिये गये व्याख्यानों को भी रिकार्ड कर संग्रह में सम्मिलित किया गया है।

6.2. आडिओ कैसेट्स का डिजिटाइजेसन

1. आलोच्य वर्ष में अनुभाग द्वारा 282 आडियो कैसेटों (शीर्षकों) का एमपी-3 फार्मेट में रूपान्तरण किया गया।
2. आलोच्य वर्ष में अनुभाग द्वारा VOB फार्मेट के 279 वीडिओज का एमपी-4 फार्मेट में रूपान्तरण किया गया।

6.3. दुर्लभ ग्रंथो एवं न्यूजपेपर क्लिंपिंग्स का डिजिटाइजेसन

1. अनुभाग से संगृहीत माइक्रोफार्म संग्रह से तुन-हुआंग पाण्डुलिपि के 105 शीर्षकों (1280 फोलियोस्) को स्कैन किया गया।
2. बौद्ध संस्कृत ग्रंथों के माइक्रोफार्म संग्रह के पूर्व में स्कैन किये गये 250 शीर्षकों (10387 फोलियोस्) को संपादित कर इनका पी.डी.एफ. संस्करण तैयार किया गया।

3. वर्ष 1996 की 171 न्यूज पेपर क्लिपिंग्स को स्कैन कर पी.डी.एफ. स्वरूप में रूपान्तरित कर संरक्षित किया गया।
4. आलोच्य वर्ष में अनुभाग द्वारा 9 ग्रंथों (12318 पृष्ठ) को स्कैन कर डिजिटल फार्म में संरक्षित किया गया।
5. गोंधला मठ से स्कैन किए गए हस्तलिखित कंग्यूर के 53 भाग (28870 फोलिओज) को सम्पादित कर संगृहीत किया गया।
6. गोंधला व नारथंग कंग्यूर का तुलनात्मक सूचीपत्र तैयार किया गया।
7. फुग्तल मठ, जंस्कार लद्दाख से नारथंग हस्तलिखित कंग्यूर व अन्य हस्तलिखित ग्रंथों के 102 भाग (94389 फोलिओज) को स्कैन किया गया।
8. फुग्तल मठ, जंस्कार लद्दाख से स्कैन किए गए 145 भाग (80000 फोलिओज) की कम्प्यूटर में फाइल नेमिंग व रिपेजिनेशन का कार्य पूर्ण किया गया।

मल्टीमिडिया अनुभाग द्वारा संचालित विभिन्न डिजिटाइजेसन परियोजनाओं को सुदृढ़ और उपयोगी तथा अधिक कार्यक्षम बनाने हेतु एक अति उन्नत ओवर हेड स्कैनर (Zeutschel high-resolution overhead scanner OS 12002) क्रय कर के अनुभाग में संस्थापित किया गया।

6.4. मल्टीमिडिया प्रलेखो का डिजिटल ग्रन्थालय-

1 मल्टीमीडिया प्रलेखो के डिजिटल ग्रन्थालय की सर्जना हेतु स्लिम के विशेषज्ञों से विस्तार से चर्चा तथा आवश्यकतानुसार परिवर्धन के उपरान्त उनके द्वारा विकसित स्लिम के डी-कोल माड्यूल का प्रयोग प्रारम्भ किया गया। आलोच्य वर्ष 2016-17 व 2015-16 में कुल मिलाकर लगभग 75 प्रतिशत आडिओ प्रलेखों को ग्रन्थालय सर्वर में अपलोड कर वेब ओपेक से जोड़ दिया गया है जो अब कैम्पस नेटवर्क तथा विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर ग्रन्थालय ओपेक के माध्यम से आन-लाइन उपलब्ध हैं।

2 आलोच्य वर्ष 2016-17 में विश्वविद्यालय की अनेक गतिविधियों से सम्बन्धित लगभग 90 वीडियोज को विश्विद्यालय के यूट्यूब एकाउन्ट पर तथा 39 फोटो संग्रहों को विश्वविद्यालय के सोशल मीडिया एकाउन्ट पर अपलोड किया गया।

6.5. पाठक सेवाएँ-

आलोच्य वर्ष 2016-17 में मल्टीमिडिया अनुभाग द्वारा निम्नलिखित पाठक सेवाएं प्रदान की गयीं।

(1) आलोच्य वर्ष में अनुभाग द्वारा कुल 111338 फोटो प्रतियाँ कार्यालयी व शैक्षणिक उद्देश्य से की गयीं।

(2) आलोच्य वर्ष में अनुभाग द्वारा कुल 146989 फोटो प्रतियाँ भुगतान आधारित पाठक सेवाओं के निमित्त की गयीं जिससे अनुभाग को ₹110242.00 प्राप्त हुए।

(3) मल्टीमीडिया संग्रह से 19 डी.वी.डी. व एम.पी.4 तथा 1054 एम.पी.3 प्रलेखों के प्रतिलिपिकरण हेतु अनुभाग को ₹8195.00 प्राप्त हुए।

(4) आलोच्य वर्ष में अनुभाग द्वारा कुल 13 ग्रंथ (1799 पृष्ठ) शैक्षणिक व शोध के उद्देश्य से स्कैन किए गये।

(5) आलोच्य वर्ष में अनुभाग द्वारा कुल 9 ग्रंथ (12318 पृष्ठ) उच्चाधिकारियों के आदेश पर प्रशासनिक उद्देश्य स्कैन कर पी.डी.एफ. फॉर्म में संरक्षित किए गये।

(6) अनुभाग द्वारा खोज, संदर्भ व सी.ए.एस. आदि पाठक सेवाएं प्रदान की गयीं तथा प्रलेख संग्रह व तकनीकी उपस्करों का रखरखाव किया गया।

6.6. ऑफ साइट डिजिटाइजेशन व अन्य गतिविधियाँ

1. ग्युतो तांत्रिक मठ धर्मशाला (हि.प्र.) के अनुरोध पर दिनांक 12 से 26 अप्रैल 2016 तक मठ में आयोजित वज्रभैरवमार्गक्रम पर प्रोफेसर समदोंग रिनपोछे द्वारा दिए गए प्रवचनों की वीडियो रिकार्डिंग हेतु श्री तेनजिन दोन्यो को धर्मशाला भेजा गया।
2. श्री पेमा ग्याल्पो, प्रोफेशनल असिस्टेण्ट व अनुभाग प्रभारी, श्री तेनजिन दोन्यो और श्री तेनजिन येशी को दिनांक 17 जुलाई से 30 अगस्त 2016, तक फुग्तल मठ, जन्सकार जम्मू काश्मीर तथा आस पास के अन्य मठों तथा व्यक्तिगत संग्रहों में संरक्षित हस्तलिखित बौद्ध ग्रंथों के सर्वेक्षण व डिजिटलीकरण हेतु भेजा गया। उपर्युक्त दल ने 13 मठों व 7 व्यक्तिगत संग्रहों का सर्वेक्षण कर फुग्तल मठ से 186 पाण्डुलिपियों (93000 पृष्ठ) तथा व्यक्तिगत संग्रहों से 6 पाण्डुलिपियों की स्कैनिंग का कार्य 24 दिनों में पूर्ण किया। अब इन दुर्लभ पाण्डुलिपियों की डिजिटल प्रतियाँ ग्रंथालय के संग्रह में पाठकों के प्रयोग हेतु उपलब्ध हैं।
3. भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय आदेश सं. 13/51/2015-BTI तथा विदेश मंत्रालय के आदेश MEA U.O. No. E.VII/122/02/2015 के अनुपालन में विश्वविद्यालय के प्रो. जम्पा समतेन (तिब्बती इतिहास), डॉ. पेन्पा दोर्जे (ग्रंथालय प्रभारी) व श्री पेमा ग्याल्पो, (पी.ए. व अनुभाग प्रभारी मल्टीमीडिया अनुभाग) को दिनांक 25 मई से 4 जून 2016 तक उलनबतोर (मंगोलिया) के गादेन मठ में संरक्षित प्राचीन बौद्ध पाण्डुलिपियों का डिजिटलीकरण के उद्देश्य से सर्वेक्षण करने हेतु भेजा गया। उपर्युक्त विशेषज्ञ दल ने संग्रह का सर्वेक्षण कर प्रतिवेदन प्रस्तुत किया।
4. श्री तेनजिन येशी को 34वीं मेस मैनेजमेण्टकमेटी तथा निग्मा स्टूडेण्ट वेलफेयर कमेटी के संप्रेक्षा दल का सदस्य मनोनीत किया गया।
5. ग्युतो तांत्रिक मठ धर्मशाला (हि.प्र.) के अनुरोध पर दिनांक 16 से 30 मार्च 2016 तक मठ में आयोजित गुह्यसमाज तंत्र पर प्रोफेसर समदोंग रिनपोछे द्वारा तक दिए गए प्रवचनों की वीडियो रिकार्डिंग हेतु श्री तेनजिन दोन्यो को धर्मशाला भेजा गया।

फुग्तल मठ, जंस्कार, लद्दाख (जम्मू कश्मीर)

दुर्लभ ग्रंथों का डिजिटाइजेशन करते हुए तकनीकि दल के सदस्य

फुग्तल मठ, जंस्कार लद्दाख (जम्मू कश्मीर) का ग्रंथालय

अनुभाग में इस वर्ष संस्थापित ओवरहेड स्कैनर (Zeutschel high-resolution overhead scanner OS 12002)

फुग्तल मठ, जंस्कार लद्दाख (जम्मू कश्मीर) के दुर्गम पैदल मार्ग पर तकनीकि दल के सदस्य

6.7. अनुभाग में कार्यरत कर्मचारियों की सूची

1. श्री पेमा ग्याल्पो - प्रोफेसनल असिस्टेण्ट
2. श्री दोर्जे बूम - कनिष्ठ लिपिक
3. श्री तेनजिन दोन्यो - सेमी प्रोफेसनल असिस्टेण्ट (संविदा)
4. श्री तेनजिन येशी - संविदा
5. श्री पाल्देन छेरिंग - संविदा
6. सुश्री तेनजिन धेसर - संविदा
7. श्री राकेश गुप्ता - दैनिक वेतन भोगी

7. कम्प्यूटर अनुभाग

ग्रंथालय के संगणक अनुभाग द्वारा सूचना तकनीक से सम्बन्धित समस्त उपकरणों एवं सेवाओं के क्रय एवं अवाप्ति हेतु अनुशंसा एवं उनका संरक्षण तथा प्रबंधन किया जाता है तथा विश्वविद्यालय के छात्रों के लिए कम्प्यूटर अनुप्रयोग में प्रमाणपत्र व डिप्लोमा पाठ्यक्रमों (सी.सी.ए. व डी.सी.ए) का संचालन किया जाता है । साथ ही अनुभाग द्वारा विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों, कर्मचारियों एवं अस्थायी सदस्यों को इण्टरनेट, टेक्स्ट कम्पोजिंग एवं प्रिन्टिंग तथा अन्य कम्प्यूटर आधारित सेवाएँ प्रदान की जाती हैं । अनुभाग द्वारा विश्वविद्यालय के नेटवर्क, साफ्टवेयर, यूपीएस तथा सर्वर आदि का संचालन और अनुरक्षण भी किया जाता है।

विश्वविद्यालय को मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के राष्ट्रीय ज्ञान आयोग (NKN) कीनेशनल मिशन फॉर एजुकेशन थ्रू इन्फॉर्मेशन एण्ड कम्यूनिकेशन टेक्नॉलाजी (NME-ICT)योजना के अन्तर्गत भारत संचार निगम लिमिटेड द्वारा फाइबर आप्टिक आधारित जी.बी.पी.एस. इण्टरनेट कनेक्सन प्राप्त है जिसका प्रबन्धन व रखरखाव भी संगणक अनुभाग द्वारा किया जाता है।

आलोच्य वर्ष 2016-17 में अनुभाग द्वारा सम्पादित प्रमुख कार्य निम्नवत् हैं।

7.1 विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों हेतु सी.सी.ए./डी.सी.ए. पाठ्यक्रम का विधिवत् संचालन किया गया।

7.2 विश्वविद्यालय के परिसर नेटवर्क एवं इन्टरनेट तथा लाइब्रेरी साफ्टवेयर तथा अन्य सम्बन्धित सेवाओं का समुचित प्रबन्धन किया गया।

7.3 छात्रों एवं विश्वविद्यालय कर्मचारियों की मांग पर कम्प्यूटर सेवाएं उपलब्ध करायी गयीं।

7.4 स्लिम लाइब्रेरी साफ्टवेयर द्वारा संचालित डेटाबेस की समय-समय पर वर्ड इन्डेक्सिंग, बैक अप आदि का कार्य किया गया एल्गोरिद्म, पुणे के सर्विस इंजीनियर की सर्विस विजिट के दौरान स्लिम लाइब्रेरी साफ्टवेयर का अपडेट इंस्टाल करा कर क्लाइंट इंस्टालेसन किया गया।

7.5 विश्वविद्यालय के विभिन्न अनुभागों के लिए आवश्यक हार्डवेयर, साफ्टवेयर की क्रय अनुशंसा एवं अनुरक्षण का कार्य सम्पादित किया गया।

7.6 विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित शैक्षणिक कार्यक्रमों में तकनीकी सेवाएं प्रदान की गयीं।

7.7 विश्वविद्यालय की विभिन्न कक्षाओं व सभागार में स्मार्ट क्लास व वीडियो कान्फ्रेन्सिंग उपकरणों की स्थापना के कार्य की देखरेख की गयी।

7.8 ग्रंथालय तथा पद्मसम्भव छात्रावास में संस्थापित सी.सी.टी.वी. उपकरणों की देखरेख की गयी।

7.9 **अनुभाग में कार्यरत कर्मचारियों की सूची**

1. डॉ. जितेन्द्र कुमार सिंह - तकनीकि अधिकारी / कम्प्यूटर प्रोग्रामर ग्रेड-1 (अवकाश पर)
2. श्री निरंकार पाण्डेय - कम्प्यूटर मरम्मत कार्यकर्ता, संविदा
3. श्री तेनजिन छेरिंग - संविदा
4. श्री अन्वेष जैन - संविदा
5. श्री नन्दलाल - संविदा

अन्य गतिविधियाँ

1. प्रलेखन अधिकारी श्री राजेश कुमार मिश्र ने विश्वविद्यालय के नोडल अधिकारी, सुओ-मोटो डिस्क्लोजर आर.टी.आई., नोडल अधिकारी- आनलाइन आर.टी.आई पोर्टल, नोडल अधिकारी- एन.वी.एल.आई., संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार तथा नोडल अधिकारी-मीडिया सेल, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार का कार्य सम्पादित किया तथा साथ ही क्रय एवं अवाप्ति समिति-2, मीडिया समिति व विश्वविद्यालय की अन्य अस्थायी समितियों के सदस्य भी रहे।
2. सहायक ग्रंथालयी श्री चन्द्रधर मणि त्रिपाठी ने विश्वविद्यालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य-सचिव तथा जन सूचना अधिकारी का कार्य सम्पादित किया व विश्वविद्यालय की कुछ अन्य अस्थायी समितियों के सदस्य भी रहे।
3. सेमी प्रोफेसनल असिस्टेण्ट श्री रविकान्त पाल ने क्रय एवं अवाप्ति समिति के सदस्य-सचिव का कार्य सम्पादित किया।

5. प्रशासन

विश्वविद्यालय प्रशासन के मुख्यतः पाँच प्रमुख अंग हैं– सामान्य प्रशासन, कार्मिक प्रशासन, शैक्षणिक प्रशासन, वित्तीय प्रशासन एवं प्रकाशन विभाग। विश्वविद्यालय की प्रमुख प्रशासनिक गतिविधियों को निम्नलिखित संगठन चार्ट के अनुसार संचालित किया जाता है–

कुलपति

कुलसचिव

प्रशासन-1	प्रशासन-2	परीक्षा अनुभाग	अनुरक्षण अनुभाग	वित्त अनुभाग	प्रकाशन विभाग
• शैक्षणिक संवर्ग के कर्मचारियों की पत्रावलियों का रख-रखाव • संगोष्ठी, सम्मेलन तथा कार्यशाला • क्रय एवं अवाप्ति इकाई का पर्यवेक्षण • विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से पत्राचार • शैक्षिक एवं शोध प्रस्तावों/योजनाओं का प्रबंधन संचालन • अन्य शैक्षणिक संस्थाओं/निकायों से पत्राचार • शैक्षणिक एवं शोध सम्बन्धी मामलों में सचिवालयीय सहायता • अन्य प्रशासनिक मामले	• सभी शिक्षणेतर कर्मचारियों की पत्रावलियों का रख-रखाव • कार्मिक नीति • अस्थाई श्रमिकों की व्यवस्था • सभी संवर्ग की अस्थाई एवं तदर्थ नियुक्तियाँ • सेवा शर्तें • वैधानिक मामले • संस्कृति मंत्रालय से पत्राचार • कर्मचारी कल्याण • सुरक्षा • परिवहन • मानक प्रपत्र एवं उनका मुद्रण • अन्य प्रशासनिक मामले	• परीक्षा संचालन हेतु प्रेलखन • परीक्षकों एवं संशोधकों की नियुक्ति • सारणीकरण • प्रश्नपत्र • परिणाम • प्रमाण-पत्र एवं अंकपत्र जारी करना • परीक्षा से सम्बन्धित अन्य मामले	• परिसर का रख-रखाव एवं सफाई • विद्युत एवं जल व्यवस्था • अतिथि-गृह • विद्युत एवं सिविल रख-रखाव • बागवानी • केन्द्रीय भण्डारण एवं वस्तु-सूची • वार्षिक रख-रखाव संविदाएं • रख-रखाव सम्बन्धी अन्य मामले	• बजट • लेखा परीक्षा • वेतन एवं मजदूरी का भुगतान • बिलों का भुगतान एवं अन्य वित्तीय मामले	• भोट-बौद्ध दर्शन के शोधपरक पुनरुद्धार, अनुवाद, मौलिक, व्याख्यायित एवं सम्पादित ग्रन्थों का प्रकाशन • प्रूफ-रीडिंग का कार्य • प्रकाशित ग्रन्थों का विक्रय

गैर शैक्षणिक कर्मचारी-

1. डॉ. रणशील कुमार उपाध्याय - कुलसचिव (16.11.2016 से)

2. डॉ. देवराज सिंह - कुलसचिव (15.11.2016 तक)
3. श्री छेरिंग डकपा - उप-कुलसचिव
4. श्री फुन्चोग दोर्जे - सम्पत्ति-अधिकारी
5. श्री सुनील कुमार - निजी सचिव, कुलपति
6. श्री लवलेश कुमार मिश्र - वरिष्ठ-सहायक
7. श्री एस. भट्टाचार्य - वरिष्ठ-सहायक
8. श्री हौसिला सिंह - वरिष्ठ-सहायक
9. श्री एस. के चौधरी - वरिष्ठ-सहायक
10. श्री कैलाशनाथ शुक्ल - वरिष्ठ-सहायक
11. श्री दिनेश प्रसाद तिवारी - वरिष्ठ-सहायक
12. श्री जयप्रकाश विश्वकर्मा - वरिष्ठ-लिपिक
13. श्री कुनसंग नमग्यल - वरिष्ठ-लिपिक
14. श्री एम.एल. सिंह - वरिष्ठ-लिपिक
15. श्री दीपंकर - स्टेनो टाइपिस्ट
16. श्री आनन्द कुमार - वरिष्ठ-लिपिक
17. श्री राजीव रंजन सिंह - वरिष्ठ-लिपिक
18. श्री विनय मौर्य - कनिष्ठ-लिपिक
19. श्री प्रदीप कुमार - कनिष्ठ-लिपिक
20. श्री दोर्जे बुम - कनिष्ठ-लिपिक
21. श्री फूलचन्द यादव - बिजली मिस्त्री
22. श्री राजाराम - पलम्बर
23. श्री विजय कुमार यादव - बहु-उद्देश्यीय
24. श्री निर्मल कुमार - बहु-उद्देश्यीय
25. श्री केशव प्रसाद - बहु-उद्देश्यीय
26. श्री लक्ष्मण प्रसाद - बहु-उद्देश्यीय
27. श्री मुन्ना लाल - बहु-उद्देश्यीय
28. श्री रामकिशुन - बहु-उद्देश्यीय
29. श्री राजेन्द्र ओझा - बहु-उद्देश्यीय
30. श्री दयाराम यादव - बहु-उद्देश्यीय
31. श्री प्रेमशंकर यादव - बहु-उद्देश्यीय
32. श्री उमाशंकर मौर्य - बहु-उद्देश्यीय
33. श्री रमेश कुमार मौर्य - बहु-उद्देश्यीय
34. श्री गोपाल प्रसाद - बहु-उद्देश्यीय
35. श्री सुखराम - बहु-उद्देश्यीय

36.	श्री लालमन शर्मा	-	बहु-उद्देश्यीय
37.	श्री हीरा	-	बहु-उद्देश्यीय
38.	श्री रामदास	-	बहु-उद्देश्यीय
39.	श्री इलियास	-	बहु-उद्देश्यीय
40.	श्री अशरफ	-	बहु-उद्देश्यीय
41.	श्री रामरतन	-	बहु-उद्देश्यीय
42.	श्री हबीव	-	बहु-उद्देश्यीय
43.	श्री प्रदीप कुमार	-	बहु-उद्देश्यीय
44.	श्री इज़राइल	-	बहु-उद्देश्यीय
45.	श्री लालाराम	-	बहु-उद्देश्यीय
46.	श्री विजय कुमार	-	बहु-उद्देश्यीय
47.	श्री मुन्नालाल	-	बहु-उद्देश्यीय
48.	श्री राजेश कुमार भारद्वाज	-	बहु-उद्देशीय
49.	श्री फूलचन्द बाल्मीकी	-	बहु-उद्देश्यीय
50.	श्री मिश्रीलाल	-	बहु-उद्देश्यीय
51.	श्री मुन्ना लाल	-	बहु-उद्देश्यीय
52.	श्री नन्दलाल	-	बहु-उद्देश्यीय
53.	श्री सुमित बाल्मीकी	-	बहु-उद्देश्यीय

गैर-शैक्षणिक कर्मचारी (तदर्थ एवं संविदा)

1.	डॉ. छिमी डोलकर	-	क्लिनिक ड्यूटी
2.	श्री तेनज़िन दोनयो	-	एस. पी. ए.
3.	सुश्री मिगमर युडोन	-	टी. ए-पी. ए.
4.	श्री तेनज़िन कुनसेल	-	पी. आर. ओ.
5.	श्री वी. के. पाटिल	-	लेब- तकनीशियन
6.	डॉ. आई.डी. सिंह	-	डॉक्टर
7.	श्री एस. पी. त्रिपाठी	-	टाईप-प्रशिक्षक
8.	श्री सर्वजित सिंह	-	कनिष्ठ लिपिक
9.	श्री दोनडुप छ़ेरिंग	-	सहायक, डीन कार्यालय
10.	श्री ञिमा छोग्यल	-	एसोशिएट (तवांग)
11.	श्री सेंगे वङ्छुक	-	विविधकार्य (तवांग)
12.	सुश्री मञ्जु	-	विविधकार्य (तवांग)
13.	सुश्री रिमो	-	विविधकार्य (तवांग)
14.	श्री सोनम फुन्चोग	-	चौकीदार

15.	श्री सुधृति विश्वास	-	कार्यालय सहायक
16.	श्री गोपेश चन्द्र राय	-	कनिष्ठ लिपिक
17.	श्री पासंग दोर्जे	-	शोध सहायक
18.	श्री पलदेन छेरिंग	-	कैजुअल वर्कर
19.	श्री तेनज़िन येशी	-	कैजुअल वर्कर
20.	श्री सरस सोनकर	-	गार्डन कन्सल्टेंट
21.	श्री तेनजिन घेघे	-	कैजुअल वर्कर
22.	सुश्री केलसंग यंगज़ोम	-	कैजुअल वर्कर
23.	डॉ. पेन्पा छ़ेरिंग	-	इन्चार्ज पुस्तकालय (आयु.)
24.	सुश्री तेनज़िन धेसर	-	कैजुअल वर्कर
25.	सुश्री मिगमर	-	कैजुअल वर्कर
26.	श्री पेन्पा	-	कैजुअल वर्कर
27.	श्री तेनज़िन ज्येनफेन	-	शारीरिक प्रशिक्षक
28.	श्री निरंकार पाण्डेय	-	कम्प्यूटर मेंटेनेंस
29.	श्री दावा	-	शोध सहायक
30.	श्री दावा छ़ेरिंग	-	फार्मेसी यूनिट
31.	श्री एन. के. सिंह	-	सहा. कुलसचिव
32.	श्री एस. एन. सिंह यादव	-	पी. ए.
33.	सुश्री पासंग डोलमा	-	नर्स
34.	श्री तेनज़िन थुपतन	-	सहायक-परीक्षा
35.	श्री तेनज़िन थुतोब	-	सम्पादन सहायक
36.	श्री भैया लाल	-	बहु-उद्देश्यीय
37.	श्री यासीन	-	संविदा
38.	श्री नन्द लाल	-	संविदा
39.	श्री प्रकाश	-	बहु-उद्देश्यीय
40.	श्री श्याम नारायण	-	बहु-उद्देश्यीय
41.	श्री सुरेन्द्र कुमार	-	बहु-उद्देश्यीय
42.	श्री मुन्ना लाल पटेल	-	बहु-उद्देश्यीय
43.	श्री श्यामजी पाल	-	संविदा
44.	श्री मोहन यादव	-	संविदा
45.	श्री वीरेन्द्र कुमार	-	बहु-उद्देश्यीय
46.	श्री राम दयाल	-	संविदा
47.	श्री सुभाष चन्द्र गौतम	-	बहु-उद्देश्यीय
48.	श्री लालमन	-	संविदा

49. शिववचन शर्मा - संविदा
50. श्री विजय कुमार पटेल - बहु-उद्देश्यीय
51. श्री मुमताज - बहु-उद्देश्यीय
52. श्री संजय मौर्य - बहु-उद्देश्यीय
53. श्री राम किशुन - संविदा
54. श्री लोसंग नोर्बू - सहायक- डीन कार्यालय
55. प्रो. राघवेन्द्र प्रसाद पाण्डेय - विजिटिंग प्रोफेसर
56. श्री शशि कुमार श्रीवास्तव - कनिष्ठ लिपिक
57. सुश्री दावा छमछोई - संविदा
58. श्री धर्मपाल हंस - संविदा
59. श्री चन्द्रपाल - कार्यालय सहा.-संविदा

केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सोसाइटी पंजीकरण अधिनियम द्वारा पंजीकृत एक मान्य विश्वविद्यालय है, जो संस्कृति मन्त्रालय, भारत सरकार से प्राप्त सहायता अनुदान से संचालित है। सोसायटी, प्रबन्ध परिषद्, विद्वत् परिषद्, वित्त समिति, ये चार विश्वविद्यालय के महत्त्वपूर्ण अंग हैं। विश्वविद्यालय के प्रधान कार्यपालक अधिकारी निदेशक/कुलपति हैं, जो कुलसचिव के सहयोग से कार्य सम्पादित करते हैं।

विश्वविद्यालय के महत्त्वपूर्ण निकाय

सोसायटी- सोसायटी, विश्वविद्यालय का सर्वोपरि निकाय है। इसके पदेन अध्यक्ष, सचिव, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार होते हैं। इसके सदस्यों की संख्या परिशिष्ट-2 में दी गई है।

अधिशासी बोर्ड- विश्वविद्यालय के निदेशक/कुलपति, प्रबन्ध परिषद् के पदेन अध्यक्ष होते हैं। परिषद् के सदस्य, संस्कृति मन्त्रालय भारत सरकार, परम पावन दलाई लामा जी एवं विश्वविद्यालय के निदेशक/कुलपति द्वारा मनोनीत होते हैं। सदस्यों की सूची परिशिष्ट-3 में दी गयी है।

विद्वत् परिषद्- विश्वविद्यालय की विद्वत् परिषद् एक महत्त्वपूर्ण निकाय है, जो शैक्षणिक मामलों में दिशा-निर्देश करती है। विश्वविद्यालय के निदेशक/कुलपति, इसके भी पदेन अध्यक्ष होते हैं। सदस्यों की सूची परिशिष्ट-4 में दी गई है।

वित्त समिति- यह समिति विश्वविद्यालय के वित्तीय मामलों एवं अनुमानित बजट की संवीक्षा करने के साथ-साथ विश्वविद्यालय के लिए अनुदान की भी संस्तुति करती है। विश्वविद्यालय के निदेशक/कुलपति, इसके अध्यक्ष होते हैं। अन्य सदस्य, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा नामित होते हैं। सदस्यों की सूची परिशिष्ट-5 में प्रस्तुत की गयी है।

योजना एवं प्रबोधक परिषद्- यह परिषद् विश्वविद्यालय की योजनाओं की रूपरेखा तथा उसकी निगरानी (मॉनिटेरिंग) करती है। सदस्यों की सूची परिशिष्ट-6 में दी गई है।

विश्वविद्यालय को प्राप्त अनुदान

विश्वविद्यालय का प्रशासन अनुभाग मुख्यतः सामान्य प्रशासन, कार्मिक प्रशासन, शैक्षणिक प्रशासन एवं वित्तीय प्रशासन तथा सहायक सेवाओं का संचालन, रख-रखाव एवं नियंत्रण करता है। विश्वविद्यालय को वर्ष 2016-2017 में संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा निम्नलिखित अनुदान प्राप्त हुए–

(क)	**योजनेतर अनुदान**	**प्राप्त अनुदान**	**व्यय**	**शेष**
	वेतन मद-36	₹ 1433.63 लाख	₹ 1380.72 लाख	₹ 52.91 लाख
	सामान्य मद-31	₹ 290.00 लाख	₹ 240.57 लाख	₹ 49.43 लाख
(ख)	**योजनान्तर्गत अनुदान**			
	वेतन मद-36	₹ 194.32 लाख	₹ 188.14 लाख	₹ 6.18 लाख
	सामान्य मद-31	₹ 300.00 लाख	₹ 335.96 लाख	₹ (-) 35.96 लाख
	पूँजी-सम्पत्ति क्रय मद-35	₹ 428.04 लाख	₹ 365.29 लाख	₹ 62.75 लाख
(ग)	**यू.जी.सी. अनुदान**			
	एरिया स्टडी योजना हेतु (वर्ष 2014-15 का शेष) राजभाषा हेतु	₹ 7.50 लाख ₹ 2.00 लाख	₹ 7.50 लाख परावर्तित ₹ 1.96 लाख	₹ 0.00 लाख ₹ 0.04 लाख

प्रकाशन अनुभाग

प्रकाशन अनुभाग विश्वविद्यालय के उद्देश्यों के अनुसार बौद्ध धर्म एवं दर्शन से सम्बद्ध शोध, पुनरुद्धार, अनुवाद-विषयक, मौलिक, व्याख्यायित एवं सम्पादित ग्रन्थों का प्रकाशन व विक्रय करता है।

विश्वविद्यालय द्वारा स्थापित व संचालित विभिन्न शोध विभागों द्वारा पुनरुद्धृत, अनुवादित, सम्पादित एवं संशोधित आदि शोधपरक सामग्रियाँ एवं शोध योजनाएं ही प्रकाशन-सामग्री के मुख्य स्रोत हैं। बाहरी विद्वानों द्वारा भोट-बौद्ध दर्शन पर विरचित एवं सम्पादित स्तरीय शोध ग्रन्थों को भी प्रकाशित किया जाता है। तदनुसार प्रकाशित ग्रन्थों पर बाहरी विद्वानों को निर्धारित दर पर मानदेय भी प्रदान किया जाता है। अब तक प्रकाशित ग्रन्थों में मुख्य रूप से भोट-बौद्ध दर्शन के उच्चस्तरीय, बहुभाषी, शोधपरक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ रहे हैं।

सम्प्रति निम्नलिखित नौ ग्रन्थमालाओं के अन्तर्गत विश्वविद्यालय के ग्रन्थ प्रकाशित हो रहे हैं। इनके अतिरिक्त सन् 1986 से अनवरत दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध पत्रिका 'धीः' के अब तक 56 अंक प्रकाशित हो चुके हैं। शोध-पत्रिका धीः विगत 28-29 वर्षों से लगातार प्रकाशित होती रही है। कोश सीरीज के अन्तर्गत भोट संस्कृत कोश के अब तक सम्पूर्ण 16 अंक प्रकाशित हो चुके हैं। इसके अलावा कोश सीरीज द्वितीय एवं तृतीय के अन्तर्गत भी दो कोश ग्रन्थों का प्रकाशन किया गया है। वर्ष 2012 में 'नेयार्थ-नीतार्थ सीरीज' नामक एक नई शृंखला शुरू कर अब तक 6 ग्रन्थमाला में प्रकाशन हो चुके हैं।

अनुभाग के कार्यरत सदस्य एवं पदनाम :

1. डॉ. पेमा तेनजिन - प्रभारी (कार्यवाहक)
2. श्री पेमा छोदेन - प्रकाशन सहायक
3. श्रीमती छिमे छ़ोमो - प्रकाशन सहायक
4. श्री शिव प्रकाश सिंह - प्रकाशन सहायक/लिपिक (संविदा)

ग्रन्थमालाएँ-

ग्रन्थमालाओं के शीर्षक निम्नलिखित हैं-

(1) भोट-भारतीय ग्रन्थमाला
(2) दलाई लामा भोट-भारती ग्रन्थमाला
(3) सम्यक्-वाक् ग्रन्थमाला
(4) सम्यक्-वाक् विशेष ग्रन्थमाला
(5) व्याख्यान ग्रन्थमाला
(6) दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थमाला
(7) अवलोकितेश्वर ग्रन्थमाला
(8) विविध-ग्रन्थमाला
(9) 'धीः' दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध-पत्रिका
(10) कोश ग्रन्थमाला
(11) भोट-मंगोलिया ग्रन्थमाला
(12) नेयार्थ-नीतार्थ ग्रन्थमाला

उपर्युक्त बारह ग्रन्थमालाओं में विश्वविद्यालय के प्रकाशन मौलिक, व्याख्यायुक्त, शोधपूर्ण बौद्धग्रन्थ, संस्कृत-पुनरुद्धार, अनुवाद एवं सम्पादन विषयक हिन्दी, भोट, संस्कृत एवं आंग्ल भाषाओं में प्रकाशित हैं। पालि, अपभ्रंश एवं चीनी भाषा में कुछ ग्रन्थ मूल व अनुवाद रूप में प्रकाशित हैं। अधिकतर ग्रन्थों की भाषा मिश्रित (दो या दो से अधिक भाषाएं) है।

मार्च 2017 तक लगभग 223 शीर्षकीय ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं। कोश सीरीज-2 के अन्तर्गत 'धर्मसंग्रहकोश' तथा कोश सीरीज-3 के अन्तर्गत 'कोन्कोर्डेन्स ऑफ टिबेटन एण्ड संस्कृत टेक्स्ट' नामक ग्रन्थ प्रकाशित हुए हैं।

अनेक ग्रन्थ जो आउट ऑफ प्रिन्ट हो चुके हैं, इनमें कुछ का पुनर्मुद्रण हुआ है तथा कुछ का संशोधित-परिवर्द्धित संस्करण भी प्रकाशित हो चुका है।

वर्तमान सत्र में प्रकाशित ग्रन्थ

इस आलोच्य वर्ष में निम्नलिखित नए ग्रन्थ प्रकाशित किए गए-

1. धीः' दुर्लभ बौद्ध ग्रंथ शोध पत्रिका, अंक 56
2. कैटलॉग ऑफ द छालपा मैन्युस्क्रिप्ट तन्ग्युर (तिब्बती), सम्पादक- डॉ जम्पा सम्तेन
3. मवै गो छ़ोन्छा तबुइ डुढेल चुङ् सेद सेलवर जेद पा (तिब्बती), सम्पादक- गेशे बिरी जिग्मेद वङ्ग्यल
4. ढङ् क्यी ङोन्जोद सेलवई डोन्मे शे जवा ज़ुकसो (तिब्बती), सम्पादक- गेशे बिरी जिग्मेद वङ्ग्यल

5. मध्यमकावतार एवं भाष्य (छठा चित्तोत्पाद), (हिन्दी एवं तिब्बती), अनुवादक एवं सम्पादक- डॉ. पेमा तेनजिन
6. कालचक्रतन्त्रलघुग्रन्थसंग्रहः, भाग-2 (संस्कृत), सम्पादक- दुर्लभ बौद्ध शोध ग्रन्थ विभाग
7. नेयार्थ-नीतार्थ सीरीज-5 (तिब्बती), सम्पादक- प्रो. गेशे येशे थबखे
8. नेयार्थ-नीतार्थ सीरीज-6 (तिब्बती), सम्पादक- प्रो. गेशे येशे थबखे

विक्रय से प्राप्त धनराशि

इस वित्तीय वर्ष 2016-2017 में प्रकाशित ग्रन्थों के विक्रय से इस विभाग ने ₹ 5,60,218.00 (₹ पाँच लाख साठ हजार दो सौ अठारह) की धनराशि अर्जित की।

प्रकाशित ग्रन्थों का विनिमय

विश्वविद्यालय के प्रकाशनों का देश-विदेश के प्रकाशनों से विनिमय-वितरण किया जा रहा है। 'प्रकाशन-विनिमय-योजना' के अन्तर्गत राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के उपयोगी प्रकाशन हमें प्राप्त होते हैं, जो विश्वविद्यालय के ग्रन्थालय में संगृहीत कर रखे जाते हैं तथा यहाँ के अध्ययन-अध्यापन में पर्याप्त उपयोगी होते हैं। सम्प्रति निम्नलिखित विश्वविद्यालयों से हमारे प्रकाशनों का आदान-प्रदान हो रहा है–

1. डेर यूनिवर्सिटेट, वियना, ऑस्ट्रिया
2. अन्तर्राष्ट्रीय बौद्ध अध्ययन संस्थान, टोकियो, जापान
3. इण्डिका एट टिबेटिका, वेरलाग, जर्मनी
4. हैम्बर्ग यूनिवर्सिटेट, हैम्बर्ग, जर्मनी
5. ड्रेपुंग लोसेलिंग लाइब्रेरी सोसायटी, मुण्डगोड, कर्नाटक
6. गादेन शार्त्से ड्राछांग, मुन्डगोड, कर्नाटक
7. अडयार लाइब्रेरी एण्ड रिसर्च सेण्टर, अडयार, चेन्नई
8. टिबेट हाउस, नई दिल्ली
9. आई. जी. एन. सी. ए., नई दिल्ली
10. केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, चोगलमसर, लेह लद्दाख (यह प्रकाशन-विनिमय-योजना 2012 से प्रारम्भ की गयी। दोनो संस्थानों में प्रकाशित ग्रन्थों का विनिमय निरन्तर किया जायेगा।)
11. सोङ्चेन ग्रन्थालय, केन्द्रीय अध्ययन बौद्ध और हिमालयन, ड्रिकुंग कर्ग्युद संस्थान, कुलहान, देहरादून, उत्तराखण्ड (यह प्रकाशन-विनिमय-योजना 2014 से प्रारम्भ की गयी। दोनो संस्थानों में प्रकाशित ग्रन्थों का विनिमय निरन्तर किया जायेगा।)

सामान्य प्रकाशनों के विनिमय के अतिरिक्त राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की शोध-पत्रिकाओं से भी हमारी शोध-पत्रिका 'धीः' का आदान-प्रदान वर्ष भर किया गया। इस वर्ष विनिमय योजना के अन्तर्गत प्राप्त हुईं पत्रिकायें-

1. ईस्ट ऐंड वेस्ट (रोम, इटली)
2. हावर्ड जर्नल ऑव एशियाटिक स्टडीज (कैम्ब्रिज, यू.एस.ए.)
3. धर्मा वर्ल्ड (टोक्यो, जापान)
4. ड्रेलोमा (मण्डगोड)

5. बुलेटिन ऑव डेकन कालेज (पुणे)
6. इण्डियन फिलॉस्फिकल क्वार्टली (पूना विश्वविद्यालय, पूना)
7. जर्नल ऑव ओरियन्टल इंस्टीट्यूट, (ओरिएण्टल इंस्टीट्यूट, बड़ौदा)
8. प्राची ज्योति (कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र)
9. बुलेटिन ऑव टिबेटोलॉजी (सिक्किम शोध संस्थान, गंगटोक)
10. अन्वीक्षा (जाधवपुर विश्वविद्यालय, कलकत्ता)
11. शोधप्रभा (श्री लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली)
12. एनल्स ऑफ दी भन्डारकर ओरियन्टल रिसर्च इंस्टीट्यूट (पुणे)
13. बुलेटिन डी इट्यूडे इंडीन्नीस (पेरिस, फ्रान्स)

प्रकाशन समिति

विश्वविद्यालय के प्रकाशनों के मुद्रण व प्रकाशन पर विचार-विमर्श व निर्णय करने हेतु एक उच्चस्तरीय प्रकाशन समिति का गठन किया जाता है, जिसमें प्रकाशन कार्य से सम्बद्ध कुछ बाहरी विशेषज्ञ सदस्यों सहित विश्वविद्यालय के विशिष्ट विद्वानों, अधिकारियों व विभागाध्यक्षों को भी शामिल किया जाता है। सम्प्रति इसमें कुल दस सदस्य हैं। विश्वविद्यालय के कुलपति इस समिति के पदेन अध्यक्ष हैं। (द्र. परिशिष्ट सं. 7)

अतिरिक्त कार्य

हमेशा की तरह प्रकाशन अनुभाग अपने नियमित प्रकाशन कार्यों के अतिरिक्त वार्षिक रिपोर्ट तथा विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के कई अन्य विविध मुद्रण आदि से सम्बन्धित कार्यों में सहयोग करता है।

6. गतिविधियाँ

विश्वविद्यालय की शैक्षणिक गतिविधियाँ

शैक्षिक वर्ष 2016-17 में विश्वविद्यालय द्वारा निम्नलिखित शैक्षणिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गयाः-

I. कार्यशाला, कान्फ्रेंस एवं अन्य आयोजन

1. 25 से 27 मार्च 2017 तक **तिब्बती बौद्धधर्म के चार प्रमुख सम्प्रदायों में शील, समाधि और प्रज्ञा** विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें विभिन्न मठों के परम्परागत गेशे, खेन्पो, रिन्पोछे, टुल्कु आदि और कुछ भारतीय विद्वानों ने शास्त्रीय निबन्ध प्रस्तुत किये।
2. 5-6 मई-2016 - तिब्बती साहित्य के वर्गीकरण एवं कॉल नम्बर निर्णय नामक कार्यशाला आयोजित।
3. 21 मई 2016 विश्वविद्यालय के प्रांगण में 'बुद्धजयन्ती' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस समारोह के अध्यक्ष प्रो० गेशे येशे थपखे जी तथा मुख्य वक्ता प्रो० विमलेन्दु एवं प्रो० पी० पी० गोखले जी थे। विद्वानों ने 'बुद्ध, धर्मचक्रप्रवर्तन और लोककल्याण' विषय पर व्याख्यान प्रदान किये। इस शुभ अवसर पर 'धीः' शोध-पत्रिका के 56वें अंक का बुद्धार्पण किया गया।

4. 8 जून से 8 जुलाई 2016 - योग शिविर का आयोजन शारीरिक प्रशिक्षक श्री तेन्जिन शेनफेन की देखरेख में किया गया तथा 21 जून 2016 को अन्तर्राष्ट्रिय योग दिवस का भव्य आयोजन किया गया।

5. 6-7 अगस्त 2016 - कंग्युर पाठ का आयोजन किया गया, जिसमें विश्वविद्यालय के सभी सदस्य तथा छात्र सम्मिलित हुए।
6. 5 सितम्बर 2016 - सोवा-रिग्पा के आर. एण्ड डी. यूनिट का उद्घाटन किया गया।

7. 25-28 सितम्बर 2016 - नेतृत्व पर कार्यशाला का आयोजन किया गया।

8. 3 से 6 अक्टूबर 2016 - विश्वविद्यालय में "बौद्धप्रमाण-दर्शन" (Philosophy of Buddhist paramana) विषय पर राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया जिसमें शेरा, डेपुङ्, मिनड्रोलिङ - देहरादून, साक्या कॉलेज इत्यादि अनेक मठों के विद्वानों व भारतीय दार्शनिक विद्वानों ने शोधपत्र प्रस्तुति के साथ गहन विचार-विमर्श किया।

9. 15-16 नवम्बर 2016 - भारत-म्यांमार-थाईलैंड मैत्री मोटरकार रैली संस्थान में आयोजित।

आमन्त्रित विद्वानों के व्याख्यान

10. 26 दिसम्बर 2016 - संयुक्त राज्य अमेरिका के हैम्शायर कॉलेज के प्रोफसर हार्बट जे बानर्सटेन ने भौतिकी, क्वाण्टम भौतिकी और संवृति सत्य पर व्याख्यान दिया।

11. बौद्धधर्म और विज्ञान में संवाद की प्रकृति विषय पर संयुक्त राज्य अमेरिका के प्रोफेसर जोसे इग्नासिया कैबेज़न द्वारा 21 जनवरी 2017 को व्याख्यान दिया गया।

12. प्रोफेसर जे जिं जांग द्वारा कोरियाई मंदिरों में बौद्ध सभागारों और चित्रों में अंतर्निहित बौद्धसंस्कृति विषय पर 23 जनवरी 2017 को व्याख्यान दिया गया।

13. प्रोफेसर जे जिं जांग ने कोरियाई बौद्ध मंदिर के मोंस और कोरियाई बौद्ध संस्कृति में मैत्रेय आस्था तथा परिहास की अवधारणा पर 24 जनवरी 2017 को व्याख्यान दिया।

14. 25-29 जनवरी 2017 - विश्वविद्यालय के विजिटिंग प्रो. डॉ. बेरी कार्जिन (बौद्धभिक्षु, परमपावन के निजी वैद्य) की व्याख्यानमाला का आयोजन सोवारिग्पा के छात्रों एवं विभागीय सदस्यों के लिए किया गया, जिसमें निदान, मानव-शरीर संरचना विज्ञान, मानव-शरीर क्रिया विज्ञान, प्रतिरक्षा विज्ञान आदि अनेक शीर्षकों पर व्याख्यान हुए।

15. 30 जनवरी 2017 - चीन में बौद्ध शव परिरक्षण पर प्रोफेसर हायशन का व्याख्यान आयोजित।

16. जनवरी-फरवरी 2017 - शैक्षणिक आदान-प्रदान का आयोजन किया गया जिसमें यू.एस.ए, आस्ट्रेलिया आदि देशों के छात्रों ने भाग लिया।

निदान पर राष्ट्रिय संगोष्ठी

17. 10 से 12 फरवरी 2017 निदान पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया । जिसमें विभिन्न चिकित्सा पद्धतियों - सोवारिग्पा, आयुर्वेद, आदि परम्परागत चिकित्सा प्रणालियों के प्रकाण्ड विद्वान् आमन्त्रित किये गये तथा निम्न बिन्दुओं पर व्याख्यान हुए 1- नाडीनिदान 2- मूत्रनिदान 3-

रक्तपरीक्षण 4- पेथोलॉजिकल जाँच, 5- इन्द्रियों का परीक्षण 6- ज्योतिषी द्वारा परीक्षण, 7- कर्ण-नाडी तथा दुग्धपरीक्षण, 8- प्रश्न द्वारा परीक्षण, 9- विष एवं भूतनिदान, 10- लक्षण-संकेत द्वारा परीक्षण।

तिब्बती छात्र-सम्मेलन

18. 15-21 फरवरी 2017 - 11वें तिब्बती कॉलेज छात्रसम्मेलन के अन्तर्गत विभिन्न तिब्बती छात्रों ने वर्तमान परिप्रेक्ष्य में शिक्षा, संस्कृति, आजीविका तथा राजनीतिक विषयों पर पारस्परिक संवाद किया।

कार्यशाला

19. प्रोफेसर जेफरी चुपचिक द्वारा नृविज्ञान अनुसंधान क्रिया विधि पर 8 से 24 मार्च 2017 तक कार्यशाला का आयोजन किया गया।

20. 22 मार्च 2017 श्री जम्यंग दोर्जे कृत तिब्बती सुलेख कला पर प्रदर्शनी और उनके व्याख्यान का आयोजन किया गया।

21. 31 मार्च 2017 - तिब्बती और चीनी सोवारिग्पा के तुलनात्मक अध्ययन पर प्रोफेसर लियू यिंग हुआ द्वारा प्रदत्त व्याख्यान आयोजित।

संस्कृत वाद-विवाद प्रतियोगिता

22. 28 मार्च 2017 - संस्कृत विभाग द्वारा "अन्तर्जालयन्त्रं छात्राणां हितावहं न वा तथा कृष्णधनं निरोद्धुं मुद्रापिधानमावश्यकं न वा" विषय पर स्नातक-स्नातकोत्तर व मध्यमा स्तर पर दो संस्कृत वाद-विवाद प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिसमें छात्रों ने इन्टरनेट के उपयोग व दुरुपयोग तथा नोटबंदी की काले धन को रोकने में भूमिका पर अपने-अपने मत प्रस्तुत किये।

II. राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा आयोजित कार्यक्रम

वर्ष 2016-17 में निम्न कार्यशालायें आयोजित की गई-

राजभाषा हिन्दी सप्ताह का आयोजन (दिनांक 12.09.2016 से 17.09.2016 तक)

(क) दिनांक 12.09.2016 - विषय- "राजभाषा हिन्दी का महत्त्व", वक्ता- प्रो. राममोहन पाठक, कबीरमठ, पिपलानी कटरा, वाराणसी।

(ख) दिनांक 13.09.2016 - विषय- "सरकारी कार्यों में हिन्दी के प्रयोग में आने वाली व्यावहारिक समस्याएँ", वक्ता- डॉ. रामसुधार सिंह, अतिथि प्राध्यापक, केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।

(ग) दिनांक 14.09.2016 - विषय- "सामान्य ज्ञान एवं प्रश्नावली प्रतियोगिता"।

(घ) दिनांक 15.09.2016 - विषय- "वाद-विवाद प्रतियोगिता", वक्ता- प्रो. श्रद्धानन्द, महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी।

(ङ) दिनांक 16.09.2016 - विषय- "विभागीय समीक्षा"।

(च) दिनांक 17.09.2016 - "पुरस्कार वितरण एवं कविगोष्ठी"।

(छ) दिनांक 22.02.2017 - विषय- "वायस टाइपिंग", वक्ता- डॉ. विजय नारायण तिवारी, वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी, केन्द्रीय औषधि अनुसंधान संस्थान, लखनऊ।

(ज) दिनांक 22.03.2017 - विषय- "राजभाषा एवं सूचना प्रौद्योगिकी", वक्ता डॉ. घनश्याम पाण्डेय, प्रबन्धक (राजभाषा), भारतीय स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, प्रशासनिक कार्यालय, कचहरी, वाराणसी-221004।

वर्तमान सत्र में श्री चन्द्रधर मणि त्रिपाठी, सदस्य-सचिव ने नगर राजभाषा, वाराणसी की बैठक में विश्वविद्यालयीय प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया।

विश्वविद्यालय कार्यालय में राजभाषा के अनुपालन में उत्कृष्ट प्रयास के लिए नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति वाराणसी द्वारा शील्ड एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया।

III. स्वच्छता अभियान पखवाड़ा

वर्ष 2016-17 में स्वच्छता पखवाड़ा के अन्तर्गत निम्न कार्यक्रम सम्पन्न किये गये-

1. दिनांक 19.5.2016 को विश्वविद्यालय के प्रशासन-प्रथम, प्रशासन-द्वितीय, सम्पत्ति विभाग, परीक्षा विभाग, वित्त विभाग, कुलसचिव कार्यालय के सभी कर्मचारियों के द्वारा ख्रिसोंग प्रशासनिक भवन के सामने एवं पीछे अपराह्न 4 बजे से सायं 5 बजे तक सफाई सम्बन्धित श्रमदान किया गया।

2. दिनांक 20.5.2016 को विश्वविद्यालय के नेहरू अतिथि भवन के आस-पास तथा विश्वविद्यालय के मुख्य द्वार पर माली, विविध कार्य कर्मचारियों तथा शोध छात्रों ने अपने छात्रावास एवं आस-पास अपराह्न 4 बचे से सायं 5 बजे तक सफाई सम्बन्धित श्रमदान किया।

3. दिनांक 21.5.2016 बुद्ध पूर्णिमा के दिन विश्वविद्यालय के शान्तरक्षित पुस्तकालय के सामने प्रांगण एवं कमलशील भवन के सामने सड़कों के दोनों ओर माली, विविध कार्य कर्मचारियों द्वारा अपराह्न 2 बजे से सायं 5 बजे तक सफाई सम्बन्धित श्रमदान किया गया।

4. दिनांक 23.5.2016 को कुलपति कार्यालय के कर्मचारी एवं शोध, प्रकाशन अनुभाग में कार्यरत कर्मचारियों के द्वारा कमलशील भवन तथा सम्भोट भवन के आस-पास अपराह्न 4 बजे से सायं 5 बजे तक सफाई सम्बन्धित श्रमदान किया।

5. दिनांक 24.5.2016 को ग्रन्थालय के कर्मचारी शान्तरक्षित ग्रंथालय के आस-पास एवं छात्र-छात्राओं ने अपने-अपने छात्रावास कैम्पस तथा सड़क के आस-पास अपराह्न 4 बजे से सायं 5 बजे तक सफाई से सम्बन्धित श्रमदान किया।

6. दिनांक 25.5.2016 को गैर-शैक्षणिक, शोध विभाग एवं पुस्तकालय के सभी कर्मचारियों ने अपराह्न 3 बजे से सायं 5 बजे तक अपने-अपने विभाग/अनुभाग के अन्दर की सफाई सम्बन्धित श्रमदान किया।

7. दिनांक 26.5.2016 को विश्वविद्यालय जनरेटर में कार्यरत विविध कार्य कर्मचारियों द्वारा जनरेटर एवं उसके आस-पास अपराह्न 3 बजे से सायं 5 बजे तक एवं अन्दर की सफाई सम्बन्धित श्रमदान किया गया।

8. दिनांक 27.5.2016 को विश्वविद्यालय के गैर-शैक्षणिक, शोध विभाग एवं पुस्तकालय के सभी कर्मचारियों ने अपराह्न 4 बजे से सायं 5 बजे तक अनाथपिण्डद अतिथि गृह भवन के सामने की सफाई की।

9. दिनांक 28.5.2016 को विश्वविद्यालय के गैर-शैक्षणिक, शोध विभाग एवं पुस्तकालय के सभी कर्मचारियों ने अपराह्न 4 बजे से सायं 5 बजे तक कालचक्र मण्डप की सफाई में श्रमदान किया।

10. दिनांक 30.5.2016 को विश्वविद्यालय के गैर-शैक्षणिक, शोध विभाग एवं पुस्तकालय के सभी कर्मचारियों ने अपराह्न 4 बजे से सायं 5 बजे तक कर्मचारी आवास परिसर तथा आवासीय परिसर से बाहर जाने के सम्पर्क मार्ग की सफाई सम्बन्धित श्रमदान किया।

11. दिनांक 31.5.2016 को विश्वविद्यालय के गैर-शैक्षणिक, शोध विभाग एवं पुस्तकालय के सभी कर्मचारियों ने अपराह्न 4 बजे से सायं 5 बजे तक आवासीय परिसर से बाहर जाने के सम्पर्क मार्ग की सफाई से सम्बन्धित श्रमदान किया।

12. दिनांक 16.9.2016 को माननीय कुलसचिव के निर्देशन में विश्वविद्यालय के प्रशासन-प्रथम, प्रशासन-द्वितीय, सम्पत्ति विभाग, परीक्षा विभाग, वित्त विभाग, कुलसचिव कार्यालय के सभी कर्मचारियों के द्वारा ख्रोसोंग प्रशासनिक भवन के सामने एवं पीछे 4 बजे से 5 तक सफाई से सम्बन्धित श्रमदान किया।

13. दिनांक 17.9.2016 को विश्वविद्यालय के जनरेटर, पम्प एवं प्लम्बर सम्बन्धित कार्य करने वाले कर्मचारियों द्वारा जनरेटर कक्ष, पम्प कक्ष के अन्दर एवं उसके आस-पास अपराह्न 3 बजे से सायं 5 बजे तक सफाई सम्बन्धी श्रमदान किया गया।

14. दिनांक 19.9.2016 को छात्र-छात्राओं द्वारा विश्वविद्यालय के बाहरी गेट पर संस्कृत विभाग के अध्यक्ष डॉ. धर्मदत्त चतुर्वेदी द्वारा रचित व निर्देशित सफाई सम्बन्धित "ले ले झाड़ू आ जाओ" शीर्षकीय नुक्कड़ नाटक का मंचन सायं 4 बजे से 5 बजे तक किया गया। जिसका समाचार दूरदर्शन- ए.बी.पी. न्यूज चैनल पर प्रकाशित हुआ

15. दिनांक 20.9.2016 को सभी कर्मचारियों ने अपने-अपने कार्यालय के अन्दर एवं बाहर तथा प्राध्यापक के साथ मिलकर छात्र-छात्राओं के द्वारा अपनी-अपनी कक्षाओं के अन्दर तथा बाहर सफाई हेतु श्रमदान सायं 3 बजे से 5 बजे तक किया गया।

16. दिनांक 22.9.2016 को छात्र-छात्राओं द्वारा आवास परिसर तथा आवासीय परिसर से बाहर जाने के सम्पर्क मार्ग की सफाई एवं वृक्षारोपण का कार्य अपराह्न 3 बजे से सायं 5 बजे तक किया गया।

17. दिनांक 23.9.2016 को छात्र-छात्राओं द्वारा विश्वविद्यालय से सारनाथ तक मैराथन दौड़ सायं 3 बजे से सायं 5 बजे तक, शारीरिक प्रशिक्षक श्री तेनजिन सिनफेन जी की निगरानी में की गई।

18. दिनांक 24.9.2016 को अपराह्न 2 बजे से 5 बजे तक विश्वविद्यालय के सभी छात्र-छात्राओं ने नवापुरा गाँव में स्वच्छता के प्रति जागरूकता एवं उसमें व्यावहारिक बदलाव लाने के लिए सफाई सम्बन्धित श्रमदान छात्र-कल्याण संकायाध्यक्ष श्री लोब्सङ् थोकमेद की निगरानी में किया।

19. दिनांक 26.9.2016 को विश्वविद्यालय के नेहरू अतिथि भवन के आस-पास तथा विश्वविद्यालय के मुख्य द्वार पर माली, विविध कार्य कर्मचारियों तथा शोध छात्रों ने अपने छात्रावास एवं आस-पास अपराह्न 4 बजे से सायं 5 बजे तक सफाई सम्बन्धित श्रमदान किया।

20. दिनांक 27.9.2016 को कुलपति कार्यालय के कर्मचारियों एवं शोध, प्रकाशन अनुभाग में कार्यरत कर्मचारियों ने कमलशील भवन तथा सम्भोट भवन के आस-पास अपराह्न 4 बजे से सायं 5 बजे तक सफाई सम्बन्धित श्रमदान किया।

21. दिनांक 28.9.2016 को ग्रन्थालय के कर्मचारी शान्तरक्षित ग्रंथालय के आस-पास एवं छात्र-छात्राओं ने अपने-अपने छात्रावास कैम्पस तथा सड़क के आस-पास अपराह्न 4 बजे से सायं 5 बजे तक सफाई सम्बन्धित श्रमदान किया।

22. दिनांक 30.9.2016 को विश्वविद्यालय के गैर-शैक्षणिक, शोध विभागीय सदस्यों एवं पुस्तकालय के सभी कर्मचारियों ने अपराह्न 4 बजे से सायं 5 बजे तक कालचक्र मण्डप एवं अनाथपिण्डद अतिथि गृह के सामने की सफाई कर श्रमदान किया।

कुलपति महोदय के शैक्षणिक कार्यक्रम एवं गतिविधियाँ

1. दिनांक 7 अप्रैल 2016, दिल्ली में परम पावन की अध्यक्षता में सेक्यूलर इथिक्स पाठ्यक्रम की बैठक में भाग लिया।

2. दिनांक 17 अप्रैल 2016, सी.टी.ए. के शिक्षा विभाग के निमंत्रण पर दिल्ली विश्वविद्यालय एवं अन्य संस्थानों के विद्वानों के साथ दिल्ली में बाल-साहित्य निर्माण समिति की बैठक में भाग लिया।

3. दिनांक 18 अप्रैल 2016, यू.पी. साइन्स सेन्टर के अध्यक्ष के निमंत्रण पर झाँसी में विज्ञान के प्रति छात्रों में जागरूकता लाने के कार्यक्रम में भाग लिया तथा विज्ञान और आध्यात्मिकता पर व्याख्यान दिया।

4. दिनांक 8 मई 2016, आयुर्ज्ञान न्यास के गवर्निंग बॉडी की बैठक में भाग लिया।

5. दिनांक 12-14 मई 2016, मध्य प्रदेश सरकार के मुख्य सचिव के अनुरोध पर मध्य प्रदेश सरकार द्वारा आयोजित अन्तर्राष्ट्रिय कन्वेन्शन में भाग लिया और प्रस्तुति दी।

6. दिनांक 15 मई 2016 साँची विश्वविद्यालय के बुद्धिस्ट-इन्डिक अध्ययन की कार्य परिषद् बैठक में सदस्य के रूप में भाग लिया।

7. दिनांक 16 मई 2016, दिल्ली में संस्कृति मन्त्रालय के संयुक्त सचिव एवं अधिकारियों के साथ बौद्ध एवं तिब्बती संस्थानों के प्रमुखों की बैठक में भाग लिया।

8. दिनांक 21 मई 2016 वैशाख आयोजन समिति के अनुरोध पर वैशाख बुद्ध पूर्णिमा में प्रतिभाग किया तथा भारत सरकार द्वारा नई दिल्ली में आयोजित कार्यक्रम में बौद्ध धर्म पर व्याख्यान दिया। इस अवसर पर बौद्ध अध्ययन, संस्कृति एवं भारतीय कला के प्रचार-प्रसार, संरक्षण एवं प्रवर्धन पर आपका विशिष्ट योगदान होने से भारत सरकार की तरफ से वैशाख सम्मान प्रशस्ति पत्र-2016 से सम्मानित किया गया।

9. दिनांक 8 जून 2016, सिक्किम के माननीय गवर्नर की अध्यक्षता में नम्ग्याल इन्स्टीट्यूट ऑफ टिबेटोलॉजी की कार्यकारिणी परिषद् की बैठक में भाग लिया।
10. दिनांक 14 जून 2016, थिन्फू भूटान में दक्षिण एशियन सम्मेलन के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की तथा सत्र में तिब्बत तथा पद्मसम्भव पर प्रस्तुति दी।
11. दिनांक 18 जून 2016, सेन्टर काउन्सिल ऑफ इन्डियन मेडिसिन, आयुष मन्त्रालय, भारत सरकार द्वारा आयोजित बैठक में भाग लिया।
12. दिनांक 26 जुलाई 2016, वेस्ट बंगाल कालेज सर्विस कमीशन के अध्यक्ष के अनुरोध पर तिब्बती के एसिस्टेन्ट प्रोफेसर-चयन समिति की बैठक में भाग लिया।
13. दिनांक 30 जुलाई 2016, परम पावन दलाई लामा जी के प्रतिनिधि के रूप में बोधगया बिहार में आयोजित बोधगया मन्दिर बोर्ड की बैठक में भाग लिया।
14. दिनांक 2 अगस्त 2016, हिन्दू स्पिरिच्यूल एंड सर्विस फाउन्डेशन के अनुरोध पर 8वें हिन्दू स्पिरिच्यूल एंड सर्विस फेयर 2016 चेन्नई में भाग लिया।
15. दिनांक 16 अगस्त 2016, परम पावन के सांस्कृतिक केन्द्र टिबेट हाउस के अनुरोध पर थोन्मी सम्भोट फेलोशिप के विद्वान् चयन समिति की बैठक में भाग लिया।
16. दिनांक 25 अगस्त 2016, दिल्ली में सिंगापुर के लोगों के लिये व्याख्यान प्रस्तुत किया।
17. दिनांक 14-20 सितम्बर 2016, इन्टरनेश्नल इन्स्टीट्यूट ऑफ हायर टिबेटेन स्टडीज के निदेशक के अनुरोध पर Vienna, Austria आस्ट्रिया में नये अर्थतन्त्र के लिए बौद्ध मनोविज्ञान एवं नैतिक शिक्षा पर व्याख्यानमाला में कोर्स प्रस्तुत किये।
18. दिनांक 28-29 सितम्बर 2016, इन्डियन काउन्सिल फॉर कल्चरल रिलेशन और विदेश मन्त्रालय के अनुरोध पर उलानबतोर, मंगोलिया में अन्तर्राष्ट्रिय सम्मेलन में भाग लिया।
19. दिनांक 26 अक्टूबर 2016, लोकसभा सचिवालय के निदेशक के अनुरोध पर संसद भवन नई दिल्ली में देश में चिकित्सा शिक्षा एवं स्वास्थ्य-सुरक्षा पर विचार प्रस्तुत किये।
20. दिनांक 5-6 नबम्बर 2016, परम पावन दलाई लामा के सांस्कृतिक केन्द्र, टिबेट हाउस नई दिल्ली के निदेशक के अनुरोध पर कान्टम फिजिक्स एवं आर्य नागार्जुन के शून्यतादर्शन पर दो दिवसीय राष्ट्रिय सम्मेलन में भाग लिया, जिसमें "शून्यता की अवधारणा सभी धर्मसत्ता का आधार" विषय पर शोधपत्र प्रस्तुत किया।
21. दिनांक 9-10 नवम्बर 2016, इन्स्टीट्यूट ऑफ ऑरियन्टल स्टडीज, रशियन अकादमी ऑफ साइन्स के निमन्त्रण पर रशिया में विज्ञान और धर्म के बीच टिबेटोलॉजी एवं बुद्धोलॉजी के राउन्डटेवल कान्फ्रेन्स में भाग लिया जिसमें "नालन्दा परम्परा की तिब्बत के माध्यम से आधुनिक जगत् यात्रा" विषय पर शोधपत्र प्रस्तुत किया।
22. दिनांक 11 नवम्बर 2016, यूनिवर्सिटी ऑफ मोस्को के दर्शन विभाग में बौद्धदर्शन पर व्याख्यान दिया।
23. दिनांक 13 नवम्बर 2016, इन्स्टीट्यूट ऑफ एप्लाइड साइन्स, टूआ में बौद्ध विज्ञान एवं दर्शन पर व्याख्यान दिया।
24. दिनांक 9-10 दिसम्बर 2016, इन्डियन काउन्सिल फॉर फिलाशॉफिकल रिसर्च के अध्यक्ष के निमन्त्रण पर Quantum, Reality and Shunyata गोष्ठी में भाग लिया एवं शून्यता पर व्याख्यान दिया।

25. दिनांक 14 दिसम्बर 2016, परम पावन के सांस्कृतिक केन्द्र टिबेट हाउस के 45वें गवर्निंग काउन्सिल बैठक में भाग लिया।
26. दिनांक 18-20 दिसम्बर 2016, डेपुङ् मठ, कर्नाटक में आयोजित बौद्धधर्म एवं विज्ञान विषयक अन्तर्राष्ट्रिय संगोष्ठी में समीक्षक के रूप में भाग लिया, जिसकी अध्यक्षता परम पावन जी ने की।
27. दिनांक 1 फरवरी 2017, माननीय संयुक्त सचिव, संस्कृति मन्त्रालय, भारत सरकार, के अनुरोध पर नवनालन्दा में आयोजित होने वाली अन्तर्राष्ट्रिय संगोष्ठी की आयोजक समिति की बैठक में भाग लिया।
28. दिनांक 3 फरवरी 2017, साँची यूनिवर्सिटी ऑफ बुद्धिस्ट-इन्डिक, स्टडीज, भोपाल की काउन्सिल बैठक में भाग लिया।
29. दिनांक 5-7 फरवरी 2017, तिरुपति में एसोशियसन ऑफ इन्डियन यूनिवर्सिटी की 91वीं वार्षिक बैठक में तथा Celebrating Higher Education Accomplishment and Achievement of Higher Education in Post-Independence Era विषयक राष्ट्रिय सम्मेलन में भाग लिया ।
30. दिनांक 23-24 फरवरी 2017, इन्दिरा गाँधी मुक्त विश्वविद्यालय, इन्डियन इन्स्टीट्यूट ऑफ मॉस कम्युनिकेशन, इन्दिरा गाँधी नेशनल सेन्टर फॉर आर्टस् नई दिल्ली द्वारा संयुक्त रूप में आयोजित आइडिया ऑफ भारत पर अन्तर्राष्ट्रिय संगोष्ठी में भाग लिया एवं व्याख्यान प्रस्तुत किया, जिसका उद्घाटन महामहिम राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी ने किया।
31. दिनांक 7 मार्च 2017, नई दिल्ली, टिबेट हाउस, 21वीं सदी में बौद्धधर्म विषयक अन्तर्राष्ट्रिय संगोष्ठी की आयोजक समिति की बैठक में भाग लिया।
32. दिनांक 27 मार्च 2017, धर्मशाला में परम पावन दलाई लामा ट्रस्ट के 112 वीं बोर्ड ऑफ ट्रस्टी की बैठक में भाग लिया।
33. दिनांक 31 मार्च 2017, नई दिल्ली, आयुर्ज्ञान न्यास के अनुरोध पर न्यास द्वारा आयोजित कार्यशाला में व्याख्यान दिया एवं कार्यशाला के प्रतिभागियों को सम्बोधित किया।

कुलसचिव व्याख्यान-

1. सुधाकर महिला महाविद्यालय में 4 दिसम्बर 2016 को साधना एवं चुनौतियाँ विषयक नेशनल सेमिनार में मुख्य अतिथि पद के रूप में व्याख्यान दिया।

छात्रों की गतिविधियाँ

1. एस. डब्ल्यू. ए.

विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के सामुदायिक कार्य विश्वविद्यालय के नियमानुसार छात्र-कल्याण परिषद् (एस. डब्ल्यू. ए.) द्वारा संचालित किये जाते हैं। इस परिषद् की स्थापना 1972 में हुई थी। इसके द्वारा छात्रों को सांस्कृतिक, शैक्षिक एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी विषयों में जागरूकता तथा इस दिशा में कार्य करने के लिए अवसर प्रदान किया जाता है। इसके सदस्यों का चुनाव प्रतिवर्ष लोकतांत्रिक ढंग से किया जाता है। वर्तमान, 45वीं छात्र-कल्याण परिषद् के पदाधिकारी निम्नलिखित हैं–

क्र.सं.	नाम	पद	कक्षा
1.	तेनजिन सङ्पो	अध्यक्ष	आचार्य (प्रथम)
2.	पेम्पा छेरिंग तङ्ना	उपाध्यक्ष	आचार्य (प्रथम)
3.	टाशी ग्यलछेन	महासचिव	शास्त्री (तृतीय)
4.	गेलेक छोफेल गुरुङ्	कोषाध्यक्ष	आचार्य (प्रथम)
5.	ठिनले दोर्जे	सहायक कोषाध्यक्ष	आचार्य (प्रथम)
6.	टाशी	शिक्षा सचिव	आचार्य (प्रथम)
7.	तेनजिन लुङरिक	क्रीडा प्रभारी	शास्त्री (तृतीय)
8.	फुन्छोक छोडुप	चिकित्सा प्रभारी	शास्त्री (तृतीय)
9.	कुन्संग डोलमा	सांस्कृतिक सचिव	शास्त्री (द्वितीय)

परिषद् के उद्देश्य

- विद्यार्थियों के कल्याण तथा ज्ञानवर्धन के निमित्त संसाधनों का प्रबन्ध करना।
- अतिरिक्त कक्षाओं, वाद-विवाद प्रतियोगिताओं, शिविरों, कार्यशाला आदि के आयोजन द्वारा विद्यार्थियों में रचनात्मक अभिरुचि एवं स्वस्थ शैक्षणिक परिस्थिति पैदा करना।
- विख्यात भारतीय एवं विदेशी विद्वानों को निमन्त्रित कर व्याख्यान सम्पन्न कराना।
- विद्यार्थियों के लिए चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी सुविधाएँ उपलब्ध कराना।
- यक्ष्मा एवं अन्य गम्भीर रोगों से पीड़ित विद्यार्थियों को चिकित्सा हेतु आर्थिक सहायता की व्यवस्था करना।
- छात्रों को इन्टर-नेट में शिक्षा, स्वास्थ्य एवं टेक्नोलॉजी आदि विषयों के प्रति जागरूकता का प्रचार-प्रसार करना।
- विश्वविद्यालय के शैक्षणिक एवं पर्यावरण के विकास के लिए छात्रों के सुझावों का संकलन करना।
- विश्वविद्यालय के छात्रों के लिए आउट-डोर तथा इन-डोर खेलों जैसे फुटबाल, बास्केट-बाल, टेबल-टेनिस इत्यादि प्रतियोगिताओं का आयोजन करना तथा उसके लिए व्यवस्था करना।

1. वर्ष 2016-17 में आयोजित कार्यक्रम

ग्रीष्मकालीन शिविर-

1. 27 से 29 जुलाई 2016 तक विश्वविद्यालय में नवीनतम प्रविष्ट छात्रों के लिए ग्रीष्मकालीन शिविर का आयोजन किया गया।

प्रो. लालमणि जोशी स्मृति क्रीडा प्रतियोगिता-

2. 31 जुलाई से 15 अगस्त तक प्रशासन के आर्थिक सहयोग से प्रति वर्ष की भाँति स्वर्गीय प्रो. लालमणि जोशी जी के स्मरण में अन्तर-कक्षाओं की फुटबाल खेल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

विशेष व्याख्यान-

3. 3 अगस्त 2016 को व्याख्यानों के आयोजन के अन्तर्गत तिब्बती इतिहास के प्रोफेसर श्री जम्पा समतेन जी के 'तिब्बती भूगोल' विषय पर एक विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया।

4. 17 अगस्त 2016 को विश्वविद्यालय की वर्तमान नर्स श्रीमती पासाङ् डोलमा जी के 'स्त्री रोग' विषय पर एक विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया।

तिब्बती गणतन्त्र दिवस एवं अन्य कार्य-

5. 1-2 सितम्बर 2016 को हर साल की तरह तिब्बती गणतन्त्र दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर छात्रों द्वारा भिन्न-भिन्न प्रकार के खेलों का आयोजन किया गया।

6. 8 सितम्बर 2016 को विश्वविद्यालय के कुछ छात्र जिन्हें ग्रीष्मकालीन अवकाश के दौरान विभिन्न तिब्बती प्रवासियों के लिए अध्यापन हेतु जाने का सुअवसर दिया गया, साथ ही विश्वविद्यालय के बाहर कुछ छात्र जो सेमिनार व बैठकों के लिए गए थे उन्हें अनुभव प्रस्तुत करने का आयोजन किया गया।

7. 15 सितम्बर 2016 को विश्वविद्यालय के अध्यापक की बेरी जिगमेद वाङ्ग्याल जी तथा श्री ल्हाक्पा छेरिङ् जी द्वारा 'तिब्बती साहित्य का विकास एवं उपयोगिता' विषय पर एक विशेष सम्भाषण दिया गया।

8. 15-17 सितम्बर 2016 को विश्वविद्यालय के इच्छुक छात्रों के लिए फुटबाल रेफरी कार्यशाला का छात्रों ने आयोजन किया।

9. 19-23 सितम्बर 2016 को स्वच्छ भारत अभियान के तहत विश्वविद्यालय परिसर की सफाई तथा लम्बी मील की दौड़ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

शैक्षणिक यात्रा एवं अन्य आयोजन-

10. 7 से 22 अक्टूबर 2016 तक विश्वविद्यालय के वरिष्ठ छात्रों के लिए शैक्षणिक यात्रा का आयोजन किया गया जिसमें दक्षिण भारत के पवित्र स्थान अमरावती, सेरा, ड्रेपुङ्ग, गादेन आदि महाविहारों सहित तिब्बती प्रवास, विद्यालयों तथा मुम्बई संग्रहालय, अजन्ता-एलोरा जैसे महत्त्वपूर्ण स्थानों का भ्रमण करवाया गया।

11. 7 नवम्बर 2016 को विश्वविद्यालय के प्रो. वाङ्छुग दोर्जे नेगी जी के एक विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया।

12. 10 नवम्बर 2016 को प्रसिद्ध लेखक गोतर जी से निवेदन कर उनके 'बौद्धधर्म तथा विज्ञान' विषय पर छः व्याख्यान आयोजित किये गये।

13. 24 नवम्बर 2016 को विश्वविद्यालय के कुलपति महोदय जी को आमन्त्रित कर छात्रों की अध्ययन में रुचि जगाने हेतु विशेष सम्भाषण का आयोजन किया गया।

14. 26 दिसम्बर 2016 को विद्वान् छेवाङ् रिगजिन जी को निवेदन कर 'तिब्बतियों की समस्या एवं उनकी आशा' विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया।

15. 26 जनवरी 2017 को प्रशासन के आर्थिक सहयोग से भारतीय गणतन्त्र दिवस के शुभ अवसर पर अन्तर-कक्षाओं में बास्केट बाल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम 2 फरवरी 2017 तक चला।

16. 8 फरवरी 2017 को स्वाध्याय के समय प्रत्येक मंगलवार को विशेष कक्षा के रूप में बौद्धदर्शन विषय पर तथा बुधवार को छात्रों के परस्पर तर्क-वितर्क कार्यक्रम का आरम्भ किया गया।

17. 23 फरवरी को वरिष्ठ छात्रों द्वारा स्वेच्छानुसार किसी विषय पर भाषण का आयोजन तथा कुछ छात्रों को पुस्तक लेखन पर पुरस्कृत किया गया।

18. 9 मार्च 2017 को कुछ शोध छात्रों के द्वारा समस्त छात्रों के लिए वैकल्पिक विषयों पर विशेष व्याख्यान दिये गये।

19. 15-17 मार्च 2017 को प्रशासन के सहयोग से वरिष्ठ छात्र शिविर का आयोजन किया गया।

2. रिग्-लब छात्र पत्रिका का प्रकाशन एवं कार्यशाला का आयोजन

रिग्लब सम्पादक मण्डल- यह समिति विश्वविद्यालय प्रमुख के संरक्षकत्व में है। इसका गठन सन् 2004 में विश्वविद्यालयीय छात्रों की तिब्बती लेखन प्रवृत्ति को सशक्त बनाने के उद्देश्य से हुआ है। यह समिति तिब्बती

साहित्य पर कार्यशाला का आयोजन करती है और विश्वविद्यालयीय छात्रों द्वारा लिखित लेख, कविता आदि प्रकाशित करती है।

गतिविधियाँ - कार्यशाला- 9-11 अक्टूबर 2016 में आयोजित कार्यशाला में बाहरी 3 विद्वान् एवं विश्वविद्यालय के 5 विद्वान् आमन्त्रित किये गये। विद्वानों ने तिब्बती साहित्य में इतिहास साहित्य, बोन, नवीन काव्यधारा, महाभारत कथा एवं शैली इत्यादि विविध विषयों पर व्याख्यान दिये। इस कार्यशाला में 70 छात्रों ने भाग लिया।

रिग्लब पत्रिका- वर्ष 2016-17 में रिग्लब की पत्रिका (11वाँ अंक) प्रकाशित की गई है।

दुङ् डा- विद्वानों के द्वारा प्रस्तुत लेखों का सम्पादन कर दुङ् डा पुस्तक रूप में प्रकाशित।

3. नाट्य-कला छात्र संगठन

विश्वविद्यालय में नाट्य-कला छात्र संगठन की स्थापना सन् 2004 में की गई थी। इसके मुख्य उद्देश्यों का विवरण इस प्रकार है-

(1) तिब्बतीय सांस्कृतिक और पारम्परिक गीत एवं नृत्य के संरक्षण के लिए नृत्य एवं गायन प्रतियोगिताओं का आयोजन करना।

(2) हिमालयी क्षेत्रों के धर्म, संस्कृति एवं परम्परा के संरक्षण के लिए आयोजन करना।

(3) छात्रों को प्रतिभा-प्रदर्शन का अवसर प्रदान करना।

(4) विशिष्ट तिब्बती संस्कृति के विकास के लिए छात्रों को जागरूक करना।

(5) विभिन्न पवित्र उत्सवों के अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करना, जैसे नववर्ष एवं दलाई लामा का जन्म दिवस आदि।

(6) नवीन पीढ़ी को तिब्बती संस्कृति का ज्ञान प्रदान करना।

गतिविधियाँ-

1. तिब्बती नववर्ष में छात्रों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन, जिसमें टशी शोपा आदि माङ्गलिक नृत्य का प्रदर्शन।
2. 2 सितम्बर 2016 - अन्तर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रतियोगिता का आयोजन- तिब्बती गणतन्त्र दिवस के उपलक्ष्य में।
3. 3 सितम्बर 2016 - छात्रों में प्रतिभा प्रदर्शन की प्रतियोगिता का आयोजन, जिसमें 50 प्रतिस्पर्धी छात्रों ने भाग लिया।

4. 15 अगस्त 2016 - भारत के स्वतन्त्रता दिवस पर सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा सांस्कृतिक प्रदर्शनी आयोजित।

4. समाजसेवा जनकल्याण स्वयंसेवक संघ

विश्वविद्यालय में छात्रों का एक स्वयंसेवक संघ है। इसका संगठन 1989 ई. में समदोङ् रिनपोछे तात्कालिक निदेशक से परामर्श कर प्रो. एल.एन. शास्त्री ने किया। यह संघ समाज की प्रगति एवं सर्वाङ्गीण उत्थान के लिए प्रतिबद्ध है, तथा अतीत में मानव-समाज की उत्कृष्ट एवं महत्त्वपूर्ण दृष्टि एवं आचार-संहिता पर आधारित है। साथ ही समाज में व्याप्त मानव-सृजित सम्प्रदायवाद, सिद्धान्तवाद, जातिवाद, लिङ्गभेद, पर्यावरण प्रदूषण आदि अनेक प्रकार की विषमतायें हैं, उनसे ऊपर उठकर मानवीय दायित्व का बोध कराना है। यह संघ समाज के उत्तरदायित्व और पर्यावरण संरक्षण आदि निम्नलिखित उद्देश्यों के लिए गठित है-

- सामाजिक उत्थान के लिए विचार और आचरण दोनों में मौलिक परिवर्तन लाना।
- समाज में साक्षात् हानि पहुँचाने वाले सभी कार्यों का प्रतिरोध एवं निषेध करना।
- नयी पीढ़ी के युवाओं को सही मार्गदर्शन देना और अनैतिक क्रिया-कलापों से दूर रखने का प्रयास करना।
- मद्य तथा उत्तेजक पदार्थों के सेवन तथा काममिथ्याचार का प्रतिरोध एवं निषेध करना।
- पर्यावरण प्रदूषण को रोकने के लिए विरोध एवं उनके संरक्षण के उपायों को कार्यान्वित करना।

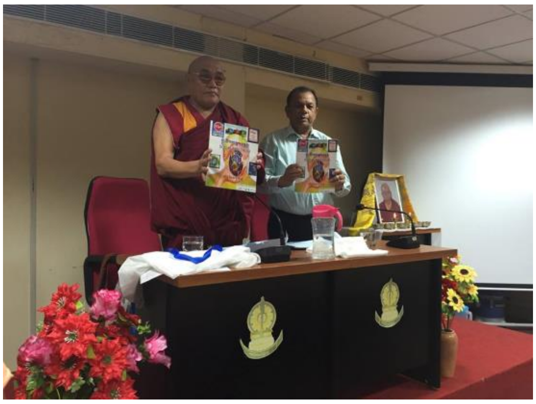

गतिविधियाँ-

(1) स्वयंसेवक दल के सदस्य प्रो. एल.एन. शास्त्री के निर्देशन में कूड़ा-करकट, मलबा आदि से खाद बनाने की विधि की जानकारी लेने रामेश्वर, गोशाला पंचक्रोश मार्ग, गये।

(2) प्रो. समदोङ् रिनपोछे का 76वां जन्मदिवस मनाया गया जिसमें त्रिभाषीय पत्रिका 'सामाजिक प्रतिबिम्ब' वार्षिक पत्रिका का विमोचन प्रो. एल.एन. शास्त्री तथा कुलसचिव प्रो. देवराज सिंह के द्वारा सम्पन्न हुआ।

(3) 13 सितम्बर 2016 - सोवा रिग्पा एवं आधुनिक चिकित्सा विधि के अनुसार स्वास्थ्य पर डॉ. टशी दावा ने व्याख्यान दिया।

(4) 2 अक्टूबर 2016 - महात्मा गाँधी जयन्ती का आयोजन किया गया, जिसमें डॉ. धर्मदत्त चतुर्वेदी अध्यक्ष संस्कृत विभाग तथा डॉ. लकपा छेरिंग अध्यक्ष तिब्बती भाषा विभाग ने 'गाँधी जीवन चर्या एवं अहिंसा' विषय पर व्याख्यान दिया और वृक्षारोपण प्रजापती गौतमी छात्रावास में किया गया ।

(5) 30 अक्टूबर 2016 - सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

(6) संघ के द्वारा प्रत्येक रविवार को विश्वविद्यालय परिसर की सफाई की गई है।

परिशिष्ट-1

विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित दीक्षान्त समारोह और उनमें मानद उपाधि से सम्मानित विशिष्ट विद्वानों की सूची

विशेष दीक्षान्त समारोह	परम पावन दलाई लामा	14-01-1990	वाचस्पति
पहला	1. श्री पी.वी. नरसिम्हा राव	19-02-1990	वाक्पति
	2. भिक्षु लोबुगामा लंकनन्दा महाथेरो, श्रीलंका	19-02-1990	वाक्पति
	3. भिक्षु खेनपो लामा गादेन, मंगोलिया	19-02-1990	वाक्पति
दूसरा	1. डॉ. राजा रमन्ना	15-07-1991	वाक्पति
	2. प्रो. जी.एम. बोनगार्ड लेविन, रूस	15-07-1991	वाक्पति
तीसरा	1. डॉ. जी. राम रेड्डी, चेयरमैन, यू.जी.सी.	08-04-1993	वाक्पति
	2. आचार्य तुलसी महाराज	08-04-1993	वाक्पति
चौथा	1. एच.एच. सक्या ठ्रिजिन रिनपोछे	16-04-1994	वाक्पति
पाँचवाँ	1. डॉ. एस.डी. शर्मा, राष्ट्रपति, भारत सरकार	21-08-1996	वाक्पति
	2. प्रो.के. सच्चिदानन्द मूर्ति	21-08-1996	वाक्पति
	3. प्रो. रल्फ बूल्टी जीन, श्रीलंका	21-08-1996	वाक्पति
छठाँ	1. डॉ. ए.आर. किदवई, राज्यपाल, बिहार	5-01-1998	वाक्पति
	2. प्रो. जी.सी. पाण्डेय	5-01-1998	वाक्पति
सातवाँ	1. डॉ. कर्ण सिंह	27-12-1998	वाक्पति
	2. डॉ. (श्रीमती) कपिला वात्स्यायन	27-12-1998	वाक्पति
आठवाँ	1. प्रो. रामशरण शर्मा	31-10-1999	वाक्पति
	2. प्रो. रवीन्द्र कुमार	31-10-1999	वाक्पति
नवाँ	1. प्रो. डी.पी. चट्टोपाध्याय	25-12-2000	वाक्पति
	2. आचार्य एस.एन. गोयनका	25-12-2000	वाक्पति
दसवाँ	1. प्रो. विष्णुकान्त शास्त्री, राज्यपाल, उत्तर प्रदेश	29-12-2001	वाक्पति
	2. प्रो. वी.आर. अनन्तमूर्ति	29-12-2001	वाक्पति
	3. गादेन ठ्रि रिनपोछे लोब्संग ञीमा	29-12-2001	वाक्पति
		29-12-2001	वाक्पति

	4. डॉ. किरीट जोशी		
ग्यारहवाँ	1. प्रो. मुरली मनोहर जोशी,		
	मानव संसाधन विकास मंत्री, भारत सरकार	09-03-2003	वाक्पति
	2. प्रो. डेविड सेफॉर्ड रूइग, इंग्लैण्ड	09-03-2003	वाक्पति
बारहवाँ	1. श्री बलराम नन्दा	18-02-2005	वाक्पति
	2. श्री जे.एस. वर्मा, न्यायाधीश	18-02-2005	वाक्पति
तेरहवाँ	1. डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम		
	पूर्व राष्ट्रपति, भारत सरकार	06-03-2008	वाक्पति
	2. प्रो. सुलक शिवरक्श	06-03-2008	वाक्पति
चौदहवाँ	1. श्रीमती मीरा कुमार		
	अध्यक्ष, लोकसभा	17-03-2012	वाक्पति
	2. प्रो. रोबर्ट थरमन	17-03-2012	वाक्पति
	3. प्रो. लोकेश चन्द्र	17-03-2012	वाक्पति

परिशिष्ट-2

सोसायटी के सदस्य (दिनांक 31-3-2017)

क्र.सं.	नाम	पद
1.	मंत्री (संस्कृति) संस्कृति मन्त्रालय, भारत सरकार, शास्त्री भवन, नई दिल्ली।	अध्यक्ष
2.	प्रो. गेशे एन. समतेन, कुलपति केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	सदस्य
3.	संयुक्त सचिव (बी.टी.आई.) संस्कृति मन्त्रालय, भारत सरकार, शास्त्री भवन, नई दिल्ली।	सदस्य
4.	प्रो. संघसेन सिंह (सेवानिवृत्त आचार्य) दिल्ली विश्वविद्यालय, 199, वैशाली एन्क्लेव पीतमपुरा, दिल्ली-88	सदस्य
5.	श्री दौलत जैन आईडियल गार्डनज़, 20-मन्डेविले गार्डन, तृतीय मंजिल, फ्लैट 3-बी, कोलकाता-700019	सदस्य
6.	डॉ. विजय कुमार सिंह ई-1. 68, पंजाब विश्वविद्यालय कैंपस, सेक्टर-14, चण्डीगढ़-160014	सदस्य
7.	श्री विनय के. बहल, विजिटिंग प्रोफेसर, आर्ट्स कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, 329, पाँचवी मंजिल, माउंट कैलाश टावर-I, ईस्ट कैलाश, नयी दिल्ली-110065	सदस्य
8.	सुश्री लक्काराजु शेष कुमारी पूर्व डी.जी.एम. (एन.एफ.सी.एल.), मेहेर भवन, रामारावपेट,	सदस्य

	काकीनाडा, आन्ध्र प्रदेश-533004	
9.	भिक्षु छेरिंग फुन्च़ोग भूतपूर्व कालोन (मंत्री), धर्म और संस्कृति विभाग, थेकछोग नमडोलिङ, पो. वैलाकुप्पी, जिला-मैसूर, कर्नाटक स्टेट-571104	सदस्य
10.	गेशे दोर्जे दमडुल निदेशक, तिब्बत हाउस, 1, इंस्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड, नई दिल्ली-110003	सदस्य
11.	श्री गौतम बम्बवले संयुक्त सचिव (पूर्व एशिया) मिनिस्ट्री ऑफ एक्सटर्नल अफेयर्स, नई दिल्ली-110011	सदस्य
12.	प्रो. लोब्संग तेनज़िन, संकायाध्यक्ष सोवा रिग्-पा विभाग, केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	सदस्य
13.	भिक्षु लोसंग थोकमेद (एसोशिएट प्रोफेसर) केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	सदस्य
14.	डॉ. आर. सी. नेगी, एसिस्टेंट प्रोफेसर, केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	सदस्य
15.	डॉ. रणशील कुमार उपाध्याय कुलसचिव केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	सदस्य-सचिव

परिशिष्ट-3

अधिशासी बोर्ड के सदस्य (दिनांक 31-3-2017)

क्र.सं.	नाम	पद
1.	प्रो. गेशे एन. समतेन, कुलपति केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	अध्यक्ष
2.	संयुक्त सचिव संस्कृति मन्त्रालय, भारत सरकार, शास्त्री भवन, नई दिल्ली।	सदस्य
3.	श्री पेमा छिन्जोर कालोन (मंत्री) धर्म और संस्कृति विभाग, केन्द्रीय तिब्बती प्रशासन, गंगछेन क्यिशोंग, धर्मशाला-176214, जिला-कांगड़ा, (हिमाचल प्रदेश)।	सदस्य
4.	श्री सम्भु एस. कुमारन (आई.एफ.एस.) निदेशक (पूर्व एशिया) भारत सरकार, मिनिस्ट्री ऑफ एक्सटर्नल अफेयर्स, नई दिल्ली।	सदस्य
5.	उपसचिव (वित्त) भारत सरकार, संस्कृति मन्त्रालय (आई.एफ.डी.), शास्त्री भवन, नई दिल्ली।	सदस्य
6.	प्रो. दोबुम टुल्कु भूतपूर्व निदेशक, तिब्बत हाउस, नई दिल्ली।	सदस्य
7.	आचार्य येशे फुन्चोग एक्जीक्यूटिव प्रोग्रामर, टी.पी.पी.आर.सी., सांसद, निर्वासित तिब्बती सरकार, धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश।	सदस्य

8.	प्रो. येशे थबखे रिटायर्ड प्रोफेसर, केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	सदस्य
9.	डॉ. धर्मदत्त चतुर्वेदी अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	सदस्य
10.	प्रो. लोब्संग तेनज़िन संकायाध्यक्ष, सोवा रिग्-पा विभाग, केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	सदस्य
11.	डॉ. देवराज सिंह कुलसचिव, केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	सदस्य-सचिव

परिशिष्ट-4

विद्वत् परिषद् के सदस्य (दिनांक 31-03-2017)

क्र.सं.	**नाम**	**पद**
1.	प्रो. गेशे एन. समतेन कुलपति, केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	अध्यक्ष
2.	प्रो. लोब्संग तेनज़िन केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	सदस्य
3.	प्रो. वङछुक दोर्जे नेगी केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	सदस्य
4.	डॉ. जम्पा छोफेल केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	सदस्य
5.	डॉ. धर्मदत्त चतुर्वेदी केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	सदस्य
6.	भिक्षु गेशे लोसंग ज्ञलछन केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	सदस्य
7.	भिक्षु दुदजोम नमग्यल केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	सदस्य
8.	डॉ. टशी छेरिंग (जे.) केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय,	सदस्य

सारनाथ, वाराणसी।

9.	भिक्षु गोरिग तेनज़िन छोगदेन केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	सदस्य
10.	डॉ. मौसमी गुहा बैनर्जी केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	सदस्य
11.	भिक्षु लोब्संग यरफेल केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	सदस्य
12.	भिक्षु ल्हकपा छेरिंग केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	सदस्य
13.	डॉ. कौशलेश सिंह केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	सदस्य
14.	डॉ. टशी छेरिंग (टी) केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	सदस्य
15.	भिक्षु दोर्जे दमडुल केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	सदस्य
16.	भिक्षु जी.एल.एल. वङ्छुक केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	सदस्य
17.	डॉ. अमित मिश्र केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	सदस्य
18.	डॉ. किरण सिंह केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय,	सदस्य

	सारनाथ, वाराणसी।	
19.	श्री जिग्मे केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	सदस्य
20.	प्रो. एम.एच. फुलेकर प्रो. एवं डीन, स्कूल ऑफ एन्वायरोमेंटल एण्ड सस्टेनेवल डेवेलपमेंट, सेन्ट्रल यूनिवर्सिटी, गुजरात, गांधीनगर, गुजरात-482030	सदस्य
21.	डॉ. हीरापाल गंग नेगी सी-18, प्रोविन रोड दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।	सदस्य
22.	लामा छोसफेल जोदपा बी-4, लद्दाख बौद्ध विहार, वेला रोड, दिल्ली।	सदस्य
23.	डॉ. भदन्त राहुल बोधि महाथेरो सर्वोदय महा बुद्धविहार, सर्वोदय बुद्ध विहार रोड, तिलकनगर, मुम्बई-400089	सदस्य
24.	डॉ. छेवांग यंगजोर एसिस्टेंट प्रोफेसर, केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह, लदाख (ज.क.)।	सदस्य
25.	प्रो. के. पी. पाण्डेय भूतपूर्व कुलपति, महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, एमिरिट्स प्रोफेसर ऑफ एजुकेशन (यू.जी.सी.), निदेशक, शेपा, निबिया, बच्छाओं, वाराणसी-221011	सदस्य
26.	प्रो. लल्लन मिश्र केमेस्ट्री विभाग, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय,	सदस्य

वाराणसी-221005

27. गेशे लगदोर — सदस्य
निदेशक,
लायब्रेरी ऑफ टिबेटन वर्क एण्ड अर्काइब्ज,
गंगछेन कीशोङ, धर्मशाला, हि.प्र.-176215

28. गेशे छोनदोन — सदस्य
सेन्टर फॉर इन्टरनेशनल पोलिटिक्स
आर्गनाइज़ेशन एण्ड डिस-आर्ममेंट,
स्कूल ऑफ इन्टरनेशनल स्टडीज़,
न्यू-मेहरोली रोड, नियर मुनिरिका,
नई दिल्ली-110067

29. डॉ. संजीव कुमार दास — सदस्य
एसोशिएट प्रोफेसर एण्ड हेड,
डिपार्टमेन्ट ऑफ इण्टो-टिबेटन स्टडीज़,
भाषाभवन, विश्वभारती,
शान्तिनिकेतन-731235 (पश्चिम बंगाल)।

30. डॉ. रणशील कुमार उपाध्याय — सदस्य-सचिव
कुलसचिव,
केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय,
सारनाथ, वाराणसी-221007

परिशिष्ट-5

वित्त समिति के सदस्य (दिनांक 31-3-2017)

क्र.सं.	नाम	पद
1.	प्रो. गेशे एन. समतेन कुलपति, केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	अध्यक्ष
2.	निदेशक/उपसचिव (वित्त) संस्कृति मन्त्रालय (आई.एफ.डी.) भारत सरकार, शास्त्री भवन, नई दिल्ली।	सदस्य
3.	निदेशक/उपसचिव (बी.टी.आई.) संस्कृति मन्त्रालय, भारत सरकार, द्वितीय तल, डी-ब्लॉक, पुरातत्त्व भवन, जी.पी.ओ. कम्पलेक्स, आई.एन.ए., नई दिल्ली-23	सदस्य
4.	डॉ. एस.पी. माथुर कुलसचिव, आई.आई.टी., बी.एच.यू., लंका, वाराणसी-221005	सदस्य
5.	डॉ. रणशील कुमार उपाध्याय कुलसचिव, केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी-221007	सदस्य-सचिव

परिशिष्ट-6

योजना एवं प्रबोधक परिषद् के सदस्य (दिनांक 31-3-2017)

क्र.सं.	नाम	पद
1.	प्रो. गेशे एन. समतेन कुलपति, केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	अध्यक्ष (पदेन)
2.	संयुक्त सचिव संस्कृति मन्त्रालय, भारत सरकार, शास्त्री भवन, नयी दिल्ली।	सदस्य (पदेन)
3.	आर्थिक सलाहकार संस्कृति मन्त्रालय, भारत सरकार, शास्त्री भवन, नयी दिल्ली।	सदस्य (पदेन)
4.	प्रो. लोसंग तेनजिन सोवा-रिग्-पा विभाग, केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	सदस्य
5.	प्रो. कपिल कपूर बी-2/332, एकता गार्डेन 9-1, पी. एक्सटेंशन, मदर डेरी मार्ग, नई दिल्ली-110092	सदस्य (सोसायटी के अध्यक्ष द्वारा नामित)
6.	प्रो. प्रदीप पी. गोखले दर्शन विभाग, पूना विश्वविद्यालय, गणेश खिंड, पुणे, महाराष्ट्र। [शोध विभाग, केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।]	सदस्य ”

परिशिष्ट-7

प्रकाशन समिति के सदस्य (दिनांक 31-3-2017)

क्र.सं.	नाम	पद
1.	प्रो. गेशे एन. समतेन कुलपति, केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	अध्यक्ष
2.	प्रो. लोसंग तेनज़िन केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	सदस्य
3.	प्रो. प्रद्युम्न दुबे काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।	सदस्य
4.	प्रो. आर. के. द्विवेदी संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी।	सदस्य
5.	प्रो. पी. पी. गोखले केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	सदस्य
6.	प्रो. देवराज सिंह कुलसचिव, केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	सदस्य
7.	ग्रन्थालयाध्यक्ष शान्तरक्षित ग्रन्थालय, केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	सदस्य

8.	सम्पादक अनुवाद विभाग, केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	सदस्य
9.	सम्पादक पुनरुद्धार विभाग, केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	सदस्य
10.	श्री सङ्ग्ये तेन्दर अध्यक्ष तिब्बती प्रकाशन, लाइब्रेरी ऑफ टिबेटन वर्क्स एण्ड ऑर्काइब्स, धर्मशाला (हि.प्र.)।	सदस्य
11.	प्रकाशन प्रभारी केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	सदस्य-सचिव

वाराणसी जागरण

6 दैनिक जागरण वाराणसी, 19 अक्टूबर 2016

विनय बने महासंघ के संयुक्त मंत्री

वाराणसी : संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय के विनय कुमार उप्र राज्य विश्वविद्यालय कर्मचारी महासंघ के संयुक्त मंत्री बनाए गए हैं। लोकल यूनिट में सुशील कुमार तिवारी को उपाध्यक्ष, प्रदीप कुमार पांडेय मंत्री व पं. सुनील कुमार चौधरी को सह-प्रवक्ता बनाया गया है।

डा.रामअवतार बने अध्यक्ष

वाराणसी : काशी सेवा समिति, रामकटोरा ने सोमवार को समिति का वार्षिक अधिवेशन आयोजित किया। इसमें सर्वसम्मति से डा. रामअवतार पांडेय अध्यक्ष, हरिहरलाल श्रीवास्तव प्रधानमंत्री, अनिल कुमार जैन व बब्बन सिंह उपाध्यक्ष चुने गए। अन्य पदाधिकारियों व कार्यकारिणी के सदस्यों का चुनाव हुआ।

सकारात्मक सोच जरूरी

पुस्तिकाएं मुहैया कराई जाएंगी। इतना ही नहीं सीटिंग प्लान के लिए बच्चों को अनुक्रमांक भी आवंटित किए जाएंगे। बीएसए जय करन यादव ने बताया कि पहले अर्द्धवार्षिक परीक्षाएं 19 अक्टूबर से होने वाली थीं। करवाचौथ को देखते हुए 19 अक्टूबर की परीक्षा स्थगित कर 25 अक्टूबर को कर दी गई है। बताया कि जनपद में 1373 परिषदीय विद्यालय हैं। इसमें 1013 प्राथमिक व 354 पूर्व माध्यमिक व छह कस्तूरबा बालिका विद्यालय शामिल हैं। इन विद्यालयों में करीब एक लाख 67 हजार बच्चे पंजीकृत हैं। सभी विद्यालयों में अर्द्धवार्षिक परीक्षाएं एक साथ 20 से 25 अक्टूबर तक होंगी।

तिब्बत ने थामा संस्कृत का दामन

वाराणसी : संस्कृत भाषा एवं उसके साहित्य ने विश्व संस्कृति एवं सभ्यता को आदिकाल से प्रभावित किया है। वहीं तिब्बती साहित्य ने संस्कृत के दामन को थामकर प्राचीन बौद्ध दर्शन को रक्षा प्रदान करने का काम किया है। केंद्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय में सोमवार को संस्कृत विभाग द्वारा आयोजित प्रशिक्षण सत्र के दौरान विभागाध्यक्ष डा. धर्मदत्त चतुर्वेदी ने यह बातें कहीं। उन्होंने कहा कि सातवीं सदी से लेकर आज तक तिब्बती विद्वान भारतीय सांस्कृतिक ग्रंथों के पुनरुद्धार व अनुवाद कार्य को करते हुए निष्ठा से संस्कृत का अध्ययन कर रहे हैं। उम्मीद है कि यह काम आगे भी जारी रहेगा। इस दौरान प्रो. रामजी सिंह ने भी विचार रखे। भिक्षु दावा शेरपा ने संचालन एवं भरत भूषण चौबे ने धन्यवाद दिया।

व्यवस्था में बदलाव : 80 परि...ों में बनाए जाएंगे डाइनिंग शेड

किया। | हिन्दुस्तान • वाराणसी • शनिवार • 24 सितम्बर 2016 02

तिब्बती छात्रों ने दिया स्वच्छता का संदेश

वाराणसी। केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय के छात्रों ने शुक्रवार को स्वच्छता के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए ले ले झाड़ू आ जाओ नक्कड़ नाटक का मंचन किया। विश्वविद्यालय के मुख्य द्वार पर हुए नाटक का का-निर्देशन संस्कृत विभाग के अध्यक्ष डॉ. धर्मदत्त चतुर्वेदी ने किया। छात्र-छात्राओं ने मिनी मैराथन में दौड़ लगाई। उनके हाथ में स्वच्छता का संदेश लिखी तख्तियां थी। इस मौके पर कुलसचिव डॉ. देवराज सिंह व डॉ. बाबूराम त्रिपाठी सहित क्षेत्र की जनता उपस्थित थी।

में फिर उफनाया सीवर

पीलीकोठी-कच्चीबाग क्षेत्र में शुक्रवार को भरा सीवर का पानी लोगों के लिए मुसीबत बन गया है।

अफसरों से मुलाकात नहीं हुई। पार्षदों ने महापौर रामगोपाल मोहले से मिलकर शिकायत दर्ज कराई। महापौर ने ठोस कार्रवाई का आश्वासन दिया।

जेटिंग मशीन से राहत नहीं: सचिव

बहुत राहत नहीं मिल पा रही है। एक-दो दिन में जायका की टीम लगवाकर शाही नाले की सफाई करवाई जाएगी।

अवस्थापना निधि से नई लाइनः नगर आयुक्त ने बताया कि

...को हुआ डेंगू, भर्ती

विद्यापीठ ब्लाक। मंडुवाडीह थाने में तैनात आरक्षी चालक श्रीनारायण शर्मा डेंगू की चपेट में आ गए। एसओ फरीद अहमद ने जानकारी पर आरक्षी को मंडुवाडीह स्थित एक निजी चिकित्सालय में में भर्ती कराया है। जहां उसका उपचार जारी है, हालत अब खतरे के बाहर है।

सिनेमा

आईपी सिगरा : 9.30, 11.50, 2.25, 5.00, 7.30, 10.00 बजे। आईपी विजया : 9.30, 12.00, 2.30, 5.00, 10.00 बजे। जेएचवी : 10.15, 12.45, 2.45, 5.30, 7.45, 10.15 बजे। पीडीआर : 9.45, 12.45, 2.40, 7.30, 10.00 बजे। ... आईपी सिगरा : 12.15, 5.00, 7.35 बजे। आईपी विजया : 2.20, 7.30, 10.00 बजे। जेएचवी : 12.15, 5.15 बजे। पीडीआर : 12.15, 5.00 बजे। राज रीबूट : आईपी सिगरा : 10.00, 2.45, 10.00 बजे। आईपी विजया : 9.20, 4.50 बजे। जेएचवी : 1.00, 3.15, 8.00, 10.10 बजे।

संपर्क नंबर

Audience, Street Drama

A Scene of Street Drama on Cleanliness

केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय

Central University of Tibetan Studies

(Deemed University)

SARNATH, VARANASI - 221007

Tel. No.: 0542-2585148, Fax No.: 0542-2585150

E-mail: cihts@yahoo.co.in

Published by
The Registrar, Central University of Tibetan Studies
Sarnath, Varanasi

Printed by
Sattanam Printers
Pandeypur, Varanasi